हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

# चढ़ते सोना-चांदी

स्वर्ण और चांदी की कीमतों में बढ़ोतरी थमने का नाम नहीं ले रही है। दो साल पहले जनवरी में ही स्वर्ण की कीमत 64 हजार रुपये तोला थी, आज यह एक लाख चालीस हजार रुपये के पार चढ़ती चली जा रही है। चांदी की कीमत भी दो साल के समय में 77 हजार रुपये से दो लाख नब्बे हजार रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई है। वैसे, तो सोने और चांदी के भाव का बढ़ना कोई अचंभा नहीं है, पर जितनी तेजी से दाम बढ़ रहे हैं, उससे चिंता वाजिब है। पहली नजर में, सोना और चांदी को निवेश के लिए स्वर्ग माना जाता है। पिछले सप्ताह भारत में सोने की कीमत में तेजी से वृद्धि हुई और यह रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई। सिर्फ पांच दिन में 24 कैरेट सोने की कीमत लगभग 51,500 रुपये प्रति 100 ग्राम बढ़ गई है। मकर संक्रांति के अवसर पर आभूषणों की मांग ने भारत में सोने की कीमतों को सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंचा दिया है। वैश्विक स्तर पर अगर देखें, तो डॉलर की मजबूती और जगह-जगह युद्ध के हालात से भी सोने की मांग को मजबूती मिल रही है।

चांदी की कीमत बढ़ने के पीछे के कारण कुछ अलग भी हैं। यह सर्वविदित है कि उसका औद्योगिक इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। उसकी मांग ज्यादा है और आपूर्ति कम, अतः उसकी कीमतों में इन दिनों हम ज्यादा तेज बढ़ोतरी देख रहे हैं। चांदी की कीमत तीन लाख रुपये प्रति किलोग्राम के करीब पहुंच रही है। चांदी को पहले आम लोगों के लिए उपयोगी धातु के रूप में माना जाता था, लेकिन उसकी कीमतों का बढ़ना पूरे समाज के लिए चिंता की बात है। कोई संदेह नहीं है कि चांदी की कीमतों को महंगाई से जोड़कर देखा जाएगा। व्रतों-उत्सवों पर चांदी के जेवरों का आदान-प्रदान सबसे सहज ढंग से होता है, लेकिन अगर चांदी की कीमतों में यही तेजी बनी रही, तो इससे ज्यादातर लोगों की सामाजिकता भी प्रभावित होगी। शादी व अन्य संस्कारों का खर्च बहुत बढ़ जाएगा। पचास ग्राम वजन की एक जोड़ी पायल भी अब 15 हजार रुपये से कम में नहीं मिलेगी। क्या सरकार इस मोर्चे पर कुछ कर सकती है? क्या आज के दौर में धातु के भाव को नियंत्रित किया जा सकता है? अगर भाव को नियम बनाकर तय करने की कोशिश नहीं होगी, तो सोने-चांदी की जमाखोरी और कालाबाजारी को बढ़ने से कैसे रोका जाएगा? एक उदारीकृत अर्थव्यवस्था में फिलहाल यही कहा जा सकता है कि सोने और चांदी को बाजार भरोसे ही छोड़ दिया जाए। तब सवाल उठता है कि क्या कोई बता सकता है, इनकी कीमतें कहां तक पहुंचेंगी? अगर कीमतें ज्यादा बढ़ेंगी, तो सर्राफा कारोबारियों को सुरक्षा बढ़ानी पड़ेगी। जिस देश में एक आम आदमी की औसतन मासिक कमाई तीस हजार रुपये के आसपास हो, वहां धातुओं की कीमतों का लाखों में होना, असुरक्षा को बढ़ाएगा।

**सोने और चांदी के भाव का बढ़ना कोई अचंभा नहीं है, पर जितनी तेजी से दाम बढ़ रहे हैं, उससे चिंता वाजिब है। अगर ऐसा ही चला, तो ये धातु आम लोगों से दूर हो जाएंगे।**

स्वर्ण के वायदा कारोबार में भी जैसी तेजी दिख रही है, उससे लगता है कि कीमतें अभी और ऊपर जाएंगी। ऐसे में, उपाय क्या है? शेयर बाजार और औद्योगिक निवेश पर लोगों के विश्वास को बढ़ाने के प्रयास करने पड़ेंगे। चांदी के औद्योगिक इस्तेमाल का कोई बेहतर विकल्प खोजना पड़ेगा। लोग अभी अपना सोना बेचना नहीं चाहेंगे, तो इससे भी कीमतों को बल मिलेगा। बैंकों के पास जो सोना है, क्या उसे वे बाजार में उतार सकते हैं? दरअसल, सोने का भाव जब बढ़ता है, तब बैंक भी अपना फायदा देखते हैं। निस्संदेह, स्वर्ण में निवेश से जो फायदा हो रहा है, उससे ज्यादा फायदा अगर किसी अन्य क्षेत्र में निवेश से होने लगे, तो स्थितियां सुधर सकती हैं, लेकिन क्या निकट भविष्य में ऐसा होगा?

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 15 जनवरी, 1951

## भारत-पाक व्यापार

भारत और पाकिस्तान पड़ोसी राष्ट्र हैं- एक शरीर के दो टुकड़े। उनकी अर्थव्यवस्था का विकास संयुक्त रूप में हुआ। विभाजन के बाद भी दोनों अपनी आर्थिक जरूरतों के लिए एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। एक देश में कुछ खास चीजें ज्यादा मात्रा में उत्पन्न होती हैं, जिनकी दूसरे देश को जरूरत है। इसी प्रकार दूसरे देश के अतिरिक्त उत्पादन की खपत पहले देश में हो सकती है। अपनी आवश्यकता के पदार्थ यदि पड़ोस में ही सुलभ हो जायें, तो दूर देशों से मंगाने के बजाय ज्यादा आसानी होती है। किन्तु भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापारिक गतिरोध चल रहा है। दोनों देशों में सहज रूप में वस्तुओं का जो आदान-प्रदान संभव हो सकता है, वह नहीं हो पा रहा है। इसका कारण यह है कि जब राष्ट्रमंडल के देशों के साथ भारत ने अपनी मुद्रा का मूल्य घटाया तो पाकिस्तान ने वैसा करने से इनकार कर दिया। पाकिस्तान के इस निर्णय के फलस्वरूप भारत और पाकिस्तान की मुद्राओं के विनिमय दर में अंतर पड़ गया। पाकिस्तानी रुपये की मौजूदा विनिमय दर यदि स्वीकार कर ली जाये, तो भारत-पाकिस्तान व्यापार में पाकिस्तान दुहरे लाभ में और भारत दुहरे घाटे में रहता है। पाकिस्तान भारत में सस्ते भाव पर माल खरीद सकता है और अपना माल भारत को महंगे भाव पर बेच सकता है। भारत यह महसूस करता है कि पाकिस्तानी रुपये की मौजूदा विनिमय दर कृत्रिम है और इसलिए उसके आधार पर पाकिस्तान के साथ व्यापार करने से उसने इनकार कर दिया है। इस व्यापारिक गतिरोध से दोनों देशों को भारी हानि उठानी पड़ रही है।

दोनों देशों को यह हानि किस प्रकार हो रही है, इसके कुछ उदाहरण लीजिये। पाकिस्तान को कोयले की जरूरत है। उसकी इस जरूरत की भारत आसानी से पूर्ति कर सकता है। किन्तु व्यापारिक गतिरोध के कारण पाकिस्तान भारत से कोयला नहीं प्राप्त कर सकता। उसे समुद्र पार के दूरवर्ती देशों से कोयला मंगाना पड़ रहा है। इन देशों से पूर्वी पाकिस्तान को यह कोयला समय पर नहीं पहुंच पाया। अतः पूर्वी पाकिस्तान की रेलों को कोयले की कमी पड़ गई है और फलस्वरूप 42 मुसाफिर गाड़ियों का चलना बन्द कर दिया गया। कोयले की कमी के कारण ही पूर्वी पाकिस्तान में चलने वाले स्टीमरों की संख्या भी घटा दी गई है।

# इतिहास और संस्कृति का संगमम

नरेंद्र मोदी | प्रधानमंत्री, भारत

**हमारी संस्कृति में संगम का बहुत महत्व है। काशी-तमिल संगमम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को और सशक्त बनाने वाला अनूठा प्रयास है।**

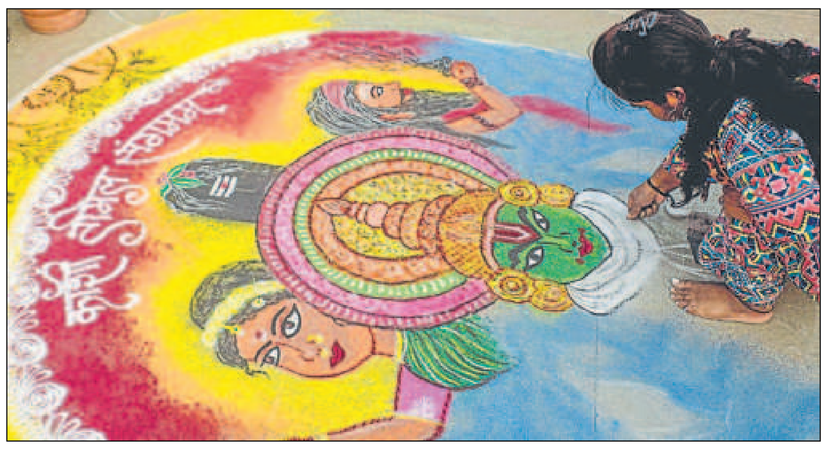

कुछ ही दिनों पहले मुझे सोमनाथ की पवित्र भूमि पर 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में हिस्सा लेने का सुअवसर मिला। इस पर्व को हम वर्ष 1026 में सोमनाथ मंदिर पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार साल पूरे होने पर मना रहे हैं। इस क्षण का साक्षी बनने के लिए देश के कोने-कोने से लोग सोमनाथ पहुंचे। यह इस बात का प्रमाण है कि भारत के लोग जहां अपने इतिहास और संस्कृति से गहरे जुड़े हैं, वहीं कभी हार न मानने वाला साहस उनके जीवन की एक बड़ी विशेषता है। यही भावना उन्हें एक साथ जोड़ती भी है।

इस कार्यक्रम के दौरान मेरी मुलाकात कुछ ऐसे लोगों से भी हुई, जो इससे पहले 'सौराष्ट्र-तमिल संगमम' के दौरान सोमनाथ आए थे और उससे पहले 'काशी-तमिल संगमम' के समय काशी भी गए थे। ऐसे मंचों को लेकर उनकी सकारात्मक सोच ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इसलिए मैंने तय किया कि इस विषय पर अपने कुछ विचार आपसे साझा करूं।

*मन की बात* कार्यक्रम के एक एपिसोड में मैंने कहा था कि अपने जीवन में तमिल भाषा न सीख पाने का मुझे बहुत दुख है। यह हमारा सौभाग्य है कि बीते कुछ वर्षों से हमारी सरकार तमिल संस्कृति को और लोकप्रिय बनाने में निरंतर जुटी हुई है। काशी-तमिल संगमम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को और सशक्त बनाने वाला प्रयास है। हमारी संस्कृति में संगम का बहुत महत्व है। इस पहलू से भी यह एक अनूठा प्रयास है। इसमें जहां देश की विविध परंपराओं के बीच अद्भुत सामंजस्य दिखता है, वहीं यह भी पता चलता है कि कैसे हम एक-दूसरे की परंपराओं का सम्मान करते हैं।

काशी-तमिल संगमम के आयोजन के लिए काशी से बेहतर स्थान और क्या हो सकता है? यह वही काशी है, जो अनादि काल से हमारी सभ्यता की धुरी बनी हुई है। यहां हजारों वर्षों से लोग ज्ञान, जीवन के अर्थ और मोक्ष की खोज में आते रहे हैं। तमिल समाज व संस्कृति से काशी का गहरा नाता रहा है। यह बाबा विश्वनाथ की नगरी है, तो तमिलनाडु में रामेश्वरम तीर्थ है। तमिलनाडु की तेनकासी को दक्षिण-काशी कहा जाता है।

वर्ष 2022 में वाराणसी की धरती पर काशी-तमिल संगमम की शुरुआत हुई थी। मुझे इसके उद्घाटन समारोह में शामिल होने का सौभाग्य मिला था। तब तमिलनाडु से आए लेखकों, विद्यार्थियों, कलाकारों, विद्वानों, किसानों और अतिथियों ने काशी के साथ-साथ प्रयागराज और अयोध्या के दर्शन भी किए थे। इसके बाद के आयोजनों में इस पहल को और विस्तार दिया गया। इसका उद्देश्य यह था कि संगमम में समय-समय पर नए विषय जोड़े जाएं, नए व रचनात्मक तरीके अपनाए जाएं और इसमें लोगों की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो। वर्ष 2023 के दूसरे आयोजन में टेक्नोलॉजी का व्यापक उपयोग किया गया, ताकि यह सुनिश्चित हो कि भाषा इसमें बाधा न बने। इसके तीसरे संस्करण में 'इंडियन नॉलेज सिस्टम' पर विशेष फोकस रखा गया। इसके साथ ही शैक्षिक संवादों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, प्रदर्शनियों और संवाद सत्रों में लोगों की बड़ी भागीदारी देखने को मिली। हजारों लोग इनका हिस्सा बने।

काशी-तमिल संगमम का चौथा संस्करण 2 दिसंबर, 2025 को आरंभ हुआ। इस बार की 'थीम' बहुत रोचक थी- *तमिल करकलम्* यानी तमिल सीखें। इससे काशी और दूसरी जगहों के लोगों को तमिल भाषा सीखने का अनूठा अवसर मिला। तमिलनाडु से आए शिक्षकों ने काशी के विद्यार्थियों के लिए इसे अविस्मरणीय बना दिया! इस बार कई और विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्राचीन तमिल साहित्य ग्रंथ *तोलकाप्पियम* का चार भारतीय और छह विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया। इस अभियान में सांस्कृतिक एकता के संदेश का प्रसार करने वाले पांड्य वंश के महान राजा आदि वीर पराक्रम पांडियन को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूरे आयोजन के दौरान नमो घाट पर प्रदर्शनियां लगाई गईं, बीएचयू में शैक्षणिक सत्र का आयोजन हुआ, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।

काशी-तमिल संगमम में इस बार जिस चीज ने मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता दी, वह हमारे युवा साथियों का उत्साह है। इससे अपनी जड़ों से और अधिक जुड़े रहने के उनके 'पैशन' का पता चलता है। उनके लिए यह एक ऐसा अद्भुत मंच है, जहां वे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिये अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं। संगमम के अलावा काशी की यात्रा भी यादगार बनी। इसके लिए विशेष प्रयास किए गए। भारतीय रेल ने लोगों को तमिलनाडु से उत्तर प्रदेश ले जाने के लिए विशेष ट्रेनें चलाईं। इस दौरान कई रेलवे स्टेशनों पर, विशेषकर तमिलनाडु में उनका खूब उत्साह बढ़ाया गया। सुंदर गीतों और आपसी चर्चाओं से यह सफर और आनंददायक बन गया।

यहां मैं काशी और उत्तर प्रदेश के अपने भाइयों और बहनों की सराहना करना चाहूंगा, जिन्होंने काशी-तमिल संगमम को विशेष बनाने में अपना अद्भुत योगदान दिया है। उन्होंने अपने अतिथियों के स्वागत और सत्कार में कोई कसर नहीं छोड़ी। कई लोगों ने तमिलनाडु से आए अतिथियों के लिए अपने घरों के दरवाजे तक खोल दिए। स्थानीय प्रशासन चौबीसों घंटे जुटा रहा, ताकि मेहमानों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो। वाराणसी का सांसद होने के नाते मेरे लिए यह गर्व और संतोष, दोनों का विषय है। इस बार काशी-तमिल संगमम का समापन समारोह रामेश्वरम में आयोजित किया गया, जिसमें तमिलनाडु के सपूत उप-राष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन भी मौजूद रहे। उन्होंने इस कार्यक्रम को अपने विचारों से समृद्ध बनाया।

काशी-तमिल संगमम का बहुत गहरा प्रभाव देखने को मिला है। इसके जरिये जहां सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिली है, वहीं शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को भी काफी बढ़ावा मिला है। इससे हमारी संस्कृतियों के बीच संबंध और प्रगाढ़ हुए हैं। आने वाले समय में हम इस आयोजन को और वाइब्रेंट बनाने वाले हैं। यह वह भावना है, जो शताब्दियों से हमारे पर्व-त्योहार, साहित्य, संगीत, कला, खान-पान, वास्तुकला और ज्ञान-पद्धतियों का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है।

वर्ष का यह समय हर देशवासी के लिए पावन माना जाता है। लोग बड़े उत्साह के साथ संक्रांति, उत्तरायण, पोंगल, माघ बिहू जैसे त्योहार मना रहे हैं। ये सभी उत्सव मुख्य रूप से सूर्यदेव, प्रकृति और कृषि को समर्पित हैं। ये त्योहार लोगों को आपस में जोड़ते हैं, जिससे समाज में सद्भाव और एकजुटता की भावना और प्रगाढ़ होती है। इस अवसर पर मैं आप सभी को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि इन उत्सवों के साथ हमारी साझी विरासत और सामूहिक भागीदारी की भावना देशवासियों की एकता को और मजबूत करेगी।

# महाशक्तियों के लिए जंग का मैदान बन रहा ईरान

हर्ष वी पंत | प्रोफेसर, किंग्स कॉलेज लंदन

ईरान में स्थिति काफी तनावपूर्ण हो गई है। मुख्यतः आर्थिक मुद्दों को लेकर लोगों ने विरोध-प्रदर्शन शुरू किया था, मगर आंदोलन का दायरा बढ़ते ही सरकार ने दमन का रास्ता अपनाया। वहां इंटरनेट सेवा बंद कर दी गई है, इसलिए जल्द सूचनाएं नहीं आ रहीं, लेकिन रिस-रिसकर जो खबरें पहुंच रही हैं, उनके मुताबिक, सैन्य कार्रवाई में सैकड़ों लोगों की जान गई है। तेहरान में पहले भी विरोध-प्रदर्शन हुए हैं और हमेशा ईरानी हुकूमत उसे दबाने में सफल रही है। इस बार भी ऐसा ही जान पड़ रहा है। माना जाता है कि जब तक प्रदर्शनकारियों को 'बाहर' से समर्थन नहीं मिलेगा, तब तक ईरान में शायद ही कोई बदलाव आ सकेगा। निर्वासित नेता रजा पहलवी ईरानी सेना से जनता के पक्ष में खड़े होने की अपील जरूर कर रहे हैं, लेकिन किसी एक नेता के हाथ में कमान न होना इस आंदोलन की बड़ी कमजोरी साबित हुई है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपनी विदेश नीति से इसे एक नया मोड़ देना चाहते हैं। उन्होंने साफ लफ्जों में कहा है कि प्रदर्शनकारी आंदोलन जारी रखें, अमेरिका से मदद आ रही है। उन्होंने चेतावनी भी दी है कि यदि तेहरान प्रदर्शनकारियों को फांसी देता है, तो फिर वाशिंगटन 'बहुत सख्त कार्रवाई' करेगा। ईरान में इरफान सुल्तानी की फांसी एक बड़ा मुद्दा बन चुका है। हालांकि, ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान आंदोलनकारियों की चिंताओं पर ध्यान देने की बात कह रहे हैं, पर स्थिति संभलती नहीं दिख रही। वैसे, ईरान में एक बड़ा तबका आज भी सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह खामेनेई और उनकी शासन-व्यवस्था में विश्वास करता है।

**यदि ईरान में 'बाहरी मदद से' सत्ता-परिवर्तन होता है, तो मध्य-पूर्व में शक्ति-संतुलन बिगड़ सकता है, जिससे पूरी दुनिया प्रभावित होगी।**

ट्रंप के बयान पर रूस की प्रतिक्रिया स्वाभाविक है। रूस के विदेश मंत्री के मुताबिक, 'जो लोग बाहर से उकसाई गई अशांति का बहाना बनाकर ईरान पर हमला करना चाहते हैं, उन्हें मध्य-पूर्व की स्थिति और वैश्विक सुरक्षा पर इसके पड़ने वाले खतरनाक नतीजों के बारे में भी पता होना चाहिए'। वेनेजुएला के ताजा घटनाक्रम ने रूस को ट्रंप के बयान पर तत्काल पलटवार करने के लिए प्रेरित किया है। वेनेजुएला की तरह ईरान भी रूस का करीबी सहयोगी देश है।

वास्तव में, मॉस्को और वाशिंगटन का यह टकराव मध्य-पूर्व के 'शक्ति संतुलन' से जुड़ा है। मध्य-पूर्व के सुन्नी बहुल और शिया बहुतायत वाले देशों के बीच तनातनी पुरानी है। इजरायल और ईरान के बीच तनाव की भी यही मूल वजह है। इजरायल व सुन्नी बहुल अरब देश, शिया बहुतायत वाले ईरान के सामने खड़े रहते हैं। अमेरिका इसमें सुन्नी बहुल देशों का साथ देता है। ऐसे में, यदि वह तेहरान में सत्ता-परिवर्तन करने में सफल रहा, तो मध्य-पूर्व में उसका दबदबा बढ़ जाएगा। इससे शक्ति-संतुलन सुन्नियों के पक्ष में झुक सकता है। मॉस्को इसी बात से चिंतित है। वास्तव में, रूस, ईरान और चीन ऐसे देश हैं, जो अमेरिका के साथ सीधा मुकाबला करते रहते हैं। अपनी हैसियत को मजबूत बनाए रखने के लिए मॉस्को के लिए ईरान को बचाना अनिवार्य हो जाएगा। इसका अर्थ है कि यदि ईरान में अमेरिकी कार्रवाई होती है, तो अमेरिका और रूस भी आमने-सामने आ सकते हैं। इससे विश्व-व्यवस्था में और अव्यवस्था फैल सकती है।

भारत की चिंता यही है। अगर ईरान में जल्द स्थिरता नहीं आती और मध्य-पूर्व में तनाव बढ़ता है, तो नई दिल्ली को लंबे समय तक परेशानी हो सकती है। यह सही है कि ईरान के साथ हमारा व्यापार बहुत ज्यादा नहीं है। खास तौर से अमेरिकी प्रतिबंध के बाद से हमने तेहरान से साथ कारोबार काफी कम कर दिया है। अब हम उससे तेल भी ज्यादा नहीं खरीदते, पर आर्थिक रिश्तों में यह सुस्ती हमारी तरफ से है। ईरान के लिए तो हम अब भी उसके शीर्ष पांच कारोबारी देशों में से एक हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अब उन देशों पर भी अतिरिक्त 25 फीसदी सीमा शुल्क लगाने की घोषणा की है, जो ईरान के साथ व्यापार कर रहे हैं। मुमकिन है कि इसका नुकसान हमें हो।

जाहिर है, यदि ईरान में 'बाहरी मदद से' सत्ता बदलती है, तो मध्य-पूर्व में शक्ति-संतुलन बिगड़ सकता है। इसका असर क्षेत्र पर ही नहीं, महाशक्तियों के समीकरणों पर भी पड़ेगा। लिहाजा ईरान में जल्द शांति अनिवार्य है। वहां की अस्थिरता किसी के लिए ठीक नहीं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

## मनसा वाचा कर्मणा

# अपने उत्थान का पर्व

भीष्म पितामह ने बाणों की शय्या पर लेटे-लेटे उत्तरायण के इसी दिन की प्रतीक्षा की थी, क्योंकि उत्तरायण को श्रेष्ठ माना गया है। इसे देवत्व प्राप्ति कराने वाला सात्विक काल माना गया है। इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त भीष्म चाहते थे कि उनकी अंतिम श्वास तभी निकले, जब सूर्य उत्तरायण हो, इसलिए हम इस दिन को तपस्या का चिह्न मानते हैं। रोज सुबह चाहे उठो या न उठो, पर ऐसे विशेष पर्व पर ब्रह्ममुहूर्त में अवश्य जागना चाहिए।

मकर संक्रांति का जो आध्यात्मिक पक्ष है, उसे अब हम समाज और शरीर से जोड़कर देखते हैं। अगर आप इस दिन सूर्य की साधना करेंगे, दान करेंगे, तो ऐसा माना जाता है कि आप अपने तन के साथ-साथ आध्यात्मिक उपलब्धि और सामाजिक क्षेत्र को बलवान करने का उपाय करते हैं। मकर शनि की राशि है। अगर हम इसे अध्यात्म की दृष्टि से देखें, तो शनि नाम है तपस्या का, त्याग का, खोज का, संन्यास का और वीतराग का। जिनको इनकी समझ नहीं है, उनको शनि खराब लगते हैं, लेकिन धर्म और अध्यात्म की दृष्टि से शनि बहुत उत्तम हैं। तुम्हारे द्वारा किए गए कर्म के कारण शनि तुम्हें दंड देते हैं और तुम्हारे द्वारा किए गए पुण्य-कर्म शनि देवता की शक्ति बनकर तुम्हें सुदृढ़ कर देते हैं। पौराणिक उदाहरणों के मुताबिक, शनि देव भगवान शिव और श्रीकृष्ण के भक्त हैं। इसका मतलब शिव और श्रीकृष्ण दोनों के ही भक्त शनि से सुरक्षित हो जाते हैं।

सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है, तो उस प्रवेश से वातावरण में जो तरंगें उत्पन्न होती हैं, वे सृष्टि में जहां-जहां भी जल है, उस जलराशि में अपना काम करती हैं। मनुष्य के शरीर में 70 प्रतिशत जल है। शरीर जब तक सजीव है, तब तक उसमें 70 प्रतिशत जल रहता है। इसलिए देव नदियों में तुम्हें स्नान करना चाहिए। अगर तुम कहते हो कि सूर्य का हमसे कोई लेना-देना नहीं है, तो तुम भूल में हो। विश्व की तमाम पुरानी संस्कृतियों में सूर्य को उपासना का केंद्र बनाया गया है। रोम, मेक्सिको और भारत से जुड़े हुए पड़ोसी देशों में भी सूर्य की पूजा होती है। वहां सूर्य की मूर्तियां चिह्न रूप में पूजी जाती हैं। अंतर बस इतना है कि भारत के मनीषियों ने सूर्य को खोज का विषय बनाया। सूर्य की हर गति का प्रभाव सीधे तौर पर धरती के सभी जीवों पर पड़ता है।

**संक्रांति मतलब क्रांति, यानी बदलाव। आप अपने मन को संक्रांत करिए, मतलब स्वयं को बदलिए। शरीर रोगी है, तो उसे रोग से मुक्त करने का संकल्प करें।**

पुराण और ज्योतिष की दृष्टि से मकर संक्रांति का बहुत महत्व है। संक्रांति मतलब क्रांति, यानी बदलाव। आप अपने मन को संक्रांत करिए, मतलब स्वयं को बदलिए। शरीर रोगी है, तो उसे रोग से मुक्त करने का संकल्प करें। अपने उत्थान के लिए अपने आपको श्रेष्ठ बनाने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। इसके लिए मकर संक्रांति से उत्तम अवसर और कोई दूसरा हो ही नहीं सकता।

आनंदमूर्ति गुरुमां

आशुतोष राणा | अभिनेता

**जिनका चित्त विश्वास से भरा होता है, वे प्रत्येक व्यक्ति पर विश्वास करते-करते एक दिन स्वयं पर अविश्वास करने लगते हैं। यह विश्वासी चित्त के लिए सर्वाधिक कठिन काल होता है। इसलिए संतों ने जगत की अपेक्षा जगदीश्वर पर विश्वास करने का परामर्श दिया।**

## अनुलोम-विलोम
### विश्व पुस्तक मेला

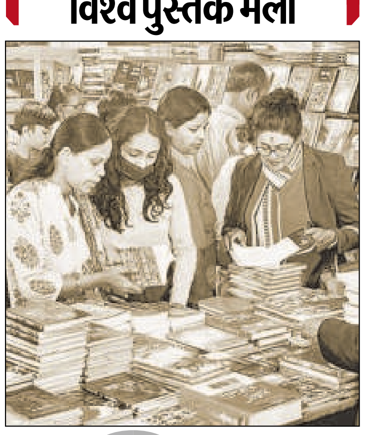

# हर वर्ग को लुभा रहा पुस्तक मेला

अमेरिकी इतिहासकार बारबरा डब्ल्यू टचमैन ने कहा है कि पुस्तकें सभ्यता की वाहक होती हैं। इनके बिना इतिहास मौन है, साहित्य गूंगा, विज्ञान अपंग, विचार और अटकलें स्थिर हैं। पुस्तकें परिवर्तन का इंजन होती हैं, दुनिया की खिड़कियां और समय के समुद्र में खड़ा प्रकाशस्तंभ हैं। इन दिनों राजधानी दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित 'भारत मंडपम' में विश्व पुस्तक मेला चल रहा है। यह साहित्यिक उत्सव है, जो अगले रविवार (18 जनवरी) तक चलेगा। मालूम हो कि इस मेले में 35 से अधिक देशों के 1,000 से ज्यादा प्रकाशक शिरकत कर रहे हैं। इस मेले की खासियत यहां होने वाले साहित्यिक आयोजन हैं। इस बार करीब 600 कार्यक्रम होंगे, जिनमें लेखकों से संवाद और पुस्तकों का विमोचन तो होगा ही, कार्यशालाएं भी आयोजित की जाएंगी। दिल्ली का यह पुस्तक मेला बिल्कुल अलग एहसास देता है। यही कारण है कि इस मेले में हर वर्ग के लोगों को शामिल होना चाहिए, खास तौर से युवाओं को, क्योंकि इसमें आपको ऐसी पुस्तकें मिल सकती हैं, जो आपके करियर के लिए महत्वपूर्ण साबित हों। आज बेशक इंटरनेट का जमाना है, लेकिन पुस्तकों का भी महत्व बना हुआ है। खास तौर पर धर्म, संस्कृति और अन्य प्राचीन तथ्यों की जानकारी हमें पुस्तकों से जितनी मिल सकती है, उतनी शायद इंटरनेट से न मिले। इतना ही नहीं, इस तरह के मेले की जरूरत इसलिए भी है, क्योंकि एक ही जगह आपको तमाम विधाओं की किताबें मिल जाती हैं। आपको कहीं और भटकने की जरूरत नहीं पड़ती। इसलिए, पुस्तक मेले का आयोजन सुखद है। ऐसे आयोजन रोजमर्रा के हमारे जीवन में नया उल्लास भरते हैं।

राजेश कुमार चौहान, टिप्पणीकार

***किताबें* मेरे और उनके बीच पुल बनाती हैं/ मैं करती हूं सवाल और वे जवाब बनाती हैं।** नई दिल्ली में आयोजित 'विश्व पुस्तक मेला' पूरी सर्दी के मौसम का सबसे शानदार दिन होता है। साहित्य से नजदीकी हमारे व्यक्तित्व में ज्यादा बदलाव नहीं, तो एक संवेदनशील इंसान बनने में हमारी मदद जरूर करती है, बशर्ते पुस्तकों के चयन में हम थोड़ी विविधता रखें। किताबों को पढ़ते हुए हमें पात्रों/ घटनाओं के माध्यम से न जाने कितने अनजान रास्तों से गुजरते हुए विविधताओं से भरे अपने समाज/ देश को जानने का अवसर मिलता है। किताबों में पढ़े स्थानों की जब हम यात्रा करते हैं, तो वह एक सपने के सच होने जैसा लगता है और जाना-पहचाना-सा भी। तो खूब पढ़ें और जितना संभव हो घूमें। विश्व पुस्तक मेला तो जरूर जाइए।

दलवंती सहरावत, टिप्पणीकार

# समस्या समाधान का भी हो प्रयास

देश की राजधानी दिल्ली इन दिनों किताबों से गुलजार है। यहां विश्व पुस्तक मेला चल रहा है, जो पुस्तक प्रेमियों के लिए एक शानदार उत्सव है और साहित्यिक महाकुंभ बन चुका है। इसमें सैकड़ों स्टॉल लगे हैं, जहां देश-विदेश की किताबें उपलब्ध हैं। पाठक यहां किताबों को न सिर्फ देख सकते हैं, बल्कि उनकी खरीदारी भी कर सकते हैं। यहां आयोजित कार्यक्रमों में लेखक, पाठक और संपादक, सभी एक साथ विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। यहां लोग अपनी पसंद की पुस्तकें खरीदते हैं और नई रचनाओं से रूबरू होते हैं, लेकिन इस उत्सव की खुशी में कुछ समस्याएं भी जुड़ी हुई हैं।

वास्तव में, प्रगति मैदान के आसपास भारी ट्रैफिक जाम और मेले के प्रवेश द्वार पर लगने वाली लंबी-लंबी कतारें दिल दुखाती हैं, जो दर्शकों का बहुत सारा समय बर्बाद कर रही हैं। पहले दिन करीब एक लाख लोग पहुंचे, तो रविवार को रिकॉर्ड दो लाख से अधिक पुस्तक प्रेमी आए, लेकिन इन बड़ी संख्याओं के साथ ट्रैफिक की मार और घंटों कतार में खड़े रहने की मजबूरी ने कई लोगों का उत्साह कम किया। निःशुल्क प्रवेश का सरकारी निर्णय सराहनीय है, लेकिन इससे काफी अधिक संख्या में लोग यहां पहुंच रहे हैं। इनमें उन लोगों की संख्या भी कम नहीं है, जो सिर्फ तफरीह करने के लिए मेला परिसर आ रहे हैं। उनको किताबों से कोई खास लगाव नहीं है। इसलिए अब समय आ गया है कि स्थानीय प्रशासन और ट्रैफिक विभाग मिलकर पुख्ता इंतजाम करें, ताकि लोगों का वक्त जाम और लंबी लाइनों में बर्बाद न हो। ऐसे लोगों को भी रोका जाए, जो यूं ही मेला परिसर आ रहे हैं।

लोग न सिर्फ आसानी से मेले में प्रवेश कर सकें, बल्कि मेला स्थल तक पहुंचने के लिए मेट्रो से अच्छी शटल व्यवस्था भी की जाए, ताकि यहां अपनी गाड़ी लाना मजबूरी न हो। साथ ही, उन लोगों को भी हतोत्साहित करने के प्रयास हों, जो सिर्फ घूमने के इरादे से यहां आ रहे हैं। पार्किंग सुविधा, वैकल्पिक रास्तों का प्रबंधन और प्रवेश द्वारों पर तेज प्रोसेसिंग सिस्टम जैसे कदम उठाए जाने की जरूरत है, ताकि पुस्तक प्रेमी अधिक समय स्टॉल पर बिता सकें और किताबों की अपनी जिज्ञासा शांत कर सकें। वे लेखकों से मिल सकें, विचार-विमर्श कर सकें और किताबों की दुनिया में खो सकें। पुस्तक मेले में निःशुल्क प्रवेश किताबों को जन-जन तक पहुंचाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन इसका सुफल तभी मिल सकेगा, जब मेलास्थल पर पहुंचने और वहां घूमने की पूरी प्रक्रिया सुगम व आरामदायक हो। इससे यह मेला वास्तव में हर पुस्तक प्रेमी के लिए आकर्षक बन जाएगा।

वीरेंद्र कुमार जाटव, टिप्पणीकार

# फुटवियर में नई मांगों से बढ़ते मौके

**भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा फुटवियर उत्पादक देश है और इस उद्योग में 2030 तक 15% वृद्धि का अनुमान है। इस क्षेत्र में अब एआई और ऑटोमेशन का दौर है। मैटीरियल और मैन्युफैक्चरिंग में नए चलन दिख रहे हैं। स्पोर्ट्स, हेल्थकेयर से संबंधित फुटवियर की मांग बढ़ी है। यहां टेक ग्रेजुएट से लेकर आईटीआई छात्रों के लिए मौके बन रहे हैं। बता रही हैं अंशु सिंह**

भारतीय फुटवियर इंडस्ट्री में लगभग 45 लाख लोग काम करते हैं। काउंसिल फॉर लेदर एक्सपोर्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के लेदर और फुटवियर उद्योग ने वित्त वर्ष 2024-25 में निर्यात में लगभग 25 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की है। इसका लक्ष्य 2030 तक कुल कारोबार को 39 अरब डॉलर तक पहुंचाना है। रिपोर्ट के अनुसार भारतीय फुटवियर कंपनियों के साथ साझेदारी के लिए चीनी निवेशकों की रुचि भी तेजी से बढ़ रही है, जिससे इस क्षेत्र की भविष्य की संभावनाएं और मजबूत हो रही हैं।

वहीं देश में नाइकी, प्यूमा, एडिडास, क्रॉक्स और स्केचर्स जैसी कंपनियां दक्षिण भारत में बड़े पैमाने पर निवेश कर रही हैं। एक रिपोर्ट की मानें, तो 2027 तक सिर्फ तमिलनाडु में इससे संबंधित लगभग 1,35,000 कुशल कामगारों की जरूरत होगी, जिनमें से करीब 10% तकनीकी और प्रबंधन पदों के लिए होंगे।

## फुटवियर इंडस्ट्री : बदलती तस्वीर

भारतीय फुटवियर सेक्टर में तकनीक का समावेश कई गुणा बढ़ गया है। मैन्युफैक्चरिंग से लेकर डिजाइनिंग तक एआई, मशीन लर्निंग, ऑटोमेशन, थ्रीडी प्रिंटिंग और वर्चुअल ट्रायऑन जैसे ट्रेंड आ गए हैं। इनका प्रयोग बढ़ने से यहां करिअर अब ज्यादा टेक-आधारित और स्पेशलाइज्ड होते जा रहे हैं। बायोमेकेनिक्स और एर्गोनॉमिक्स विशेषज्ञ पैरों की चाल और दबाव का विश्लेषण कर स्पोर्ट्स, मेडिकल और आरामदायक फुटवियर डिजाइन कर रहे हैं, जिससे डिजाइन व शोध में मांग बढ़ी है।

भारतीय डिजाइनरों को ग्लोबल ट्रेंड्स, पारंपरिक कारीगरी, किफायती प्रतिस्पर्धी उत्पाद बनाने पर ध्यान देना होगा। रचनात्मकता, डिजिटल तकनीक इस्तेमाल करने की क्षमता, निर्माण सामग्री की जानकारी होगी, तो इंडस्ट्री में फायदा मिलेगा। सस्टेनेबल तरीकों को समझना होगा।

## एआई व डिजिटल भूमिकाएं

**एआई फिटिंग स्पेशलिस्ट:** ऑनलाइन और कस्टमाइज्ड जूतों के लिए पैर के आकार और आराम के हिसाब से जूतों के डिजाइन और फिटिंग सुनिश्चित करना। बायोमेकेनिक्स और स्पोर्ट्स साइंस में दक्ष हों।

**3डी प्रिंटिंग इंजीनियर:** कस्टम सोल और जूते बनाने के लिए 3डी प्रिंटिंग तकनीक का इस्तेमाल। मैकेनिकल/फुटवियर टेक्नोलॉजी में विशेषज्ञ की मांग।

**वर्चुअल ट्राय-ऑन डिजाइनर:** ऑनलाइन जूतों का डिजिटल प्रोटोटाइप तैयार करते हैं। डिजाइन और डिजिटल टेक्नोलॉजी में कुशल।

**स्मार्ट सेंसर फुटवियर रिसर्चर:** स्मार्ट जूतों में सेंसर और बायोमेकेनिकल डाटा जोड़ते हैं। बायोमेकेनिक्स व फिजियोथेरेपी के जानकार।

## करिअर कहां और कैसे

**डिजाइन और डेवलपमेंट:** कस्टमाइजेशन, 3डी मॉडलिंग और एआई-आधारित स्मार्ट साइजिंग सिस्टम पर काम करना।

**फुटवियर डिजाइन, मैन्युफैक्चरिंग और क्वालिटी कंट्रोल:** ग्लोबल स्टैंडर्ड्स के अनुसार प्रोडक्शन और गुणवत्ता तय करना।

**ई-कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग:** ऑनलाइन रिटेल, एसईओ, परफॉर्मेंस मार्केटिंग और सोशल मीडिया के जरिए ग्राहकों तक पहुंचना।

**सस्टेनेबिलिटी और कंप्लायंस:** ईमानदार सोर्सिंग और नियमों का पालन करना।

**फुटवियर ट्रेड एनालिस्ट:** मार्केट ट्रेंड और क्षमता का विश्लेषण करना।

**फुटवियर टेक्निशियन:** प्रोटोटाइप और प्रोडक्शन की फिटिंग और गुणवत्ता देखना।

**फुटवियर लाइन बिल्डर:** नए उत्पादों की जानकारी लेना और डिजाइन/डेवलपमेंट टीम के निर्देशों पर काम करना।

### प्रमुख संस्थान और कोर्स

- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद : बीडेस, एमडेस, (एनआईडी DAT प्रवेश परीक्षा से प्रवेश), **nid.edu**
- फुटवियर डिजाइन ऐंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट **fddiindia.com**, बीडेस, एमडेस।
- सेंट्रल फुटवियर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (सीएफटीआई), चेन्नई व आगरा **cftiagra.org.in**, डिप्लोमा, पोस्ट-डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स।
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, **nift.ac.in**, बीडेस इन लेदर डिजाइन
- दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा : फुटवियर टेक्नोलॉजी में बीटेक, पोस्ट ग्रेजुएट। **www.dei.ac.in**

## क्या हो तरक्की की राह

10वीं, 12वीं, डिप्लोमा या ग्रेजुएट छात्र फुटवियर टेक्नोलॉजी और डिजाइन से जुड़े लॉन्ग-टर्म, मीडियम-टर्म और शॉर्ट-टर्म कोर्स कर सकते हैं।

### विशेषज्ञ की राय

भारतीय फुटवियर इंडस्ट्री में संभावनाएं तो हैं, लेकिन रिसर्च एवं डेवलपमेंट पर काम करने की आवश्यकता है। ऑर्थोपेडिक फुटवियर, स्मार्ट फुटवियर की भरपूर मांग है। वरिष्ठ नागरिकों के लिए पीपल असिस्टिंग फुटवियर, वूमन सेफ्टी फुटवियर, जीपीएस ट्रैकिंग वाले किड्स स्मार्ट फुटवियर डेवलप कर मार्केट में मौजूद गैप को भरा जा सकता है। इंडस्ट्री एवं कस्टमर्स की जरूरत के हिसाब से स्टूडेंट्स तैयारी करें। एआई के इस्तेमाल के बारे में जागरूकता बढ़ाएं। सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, डिग्री के अलावा नए स्पेशलाइज्ड कोर्सेज भी आजमाए जा सकते हैं।

–**डी.के.चतुर्वेदी**, हेड एवं डीन, फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, डीम्ड यूनिवर्सिटी आगरा

छात्रों को ट्रेनिंग के दौरान इंडस्ट्री का अनुभव और प्लेसमेंट के मौके भी मिलते हैं, खासकर सीएफटीआई जैसे संस्थानों में, जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों और भारतीय निर्माताओं के साथ साझेदारी में हैं।

**आईटीआई छात्रों के लिए मौके :** नेशनल अप्रेंटिसशिप सर्टिफिकेट और क्राफ्ट इंस्ट्रक्टर ट्रेनिंग स्कीम (सीआईटीएस) करने से टीचर या इंस्ट्रक्टर बनकर सरकारी या प्राइवेट आईटीआई में भी करिअर बना सकते हैं। फुटवियर मेकर, मशीन ऑपरेटर, फिटर, पैकिंग स्टाफ और क्वालिटी रोल्स में तकनीकी ट्रेनिंग काम आती है।

**अपस्किलिंग के लिए :** कोर्सेरा और लिंक्डइन लर्निंग पर कैड डिजाइन, 3डी मॉडलिंग, मैटीरियल साइंस, सस्टेनेबल फैशन, सप्लाई चेन और मैन्युफैक्चरिंग प्रोसेस जैसे कोर्स हैं, जो सीधे फुटवियर डिजाइन और प्रोडक्शन में काम आते हैं। उडेमी पर राइनो और क्लो 3डी के जरिए शू डिजाइन, पैटर्न-मेकिंग, लेदर और टेक्सटाइल वर्क और प्रोडक्शन प्लानिंग का प्रशिक्षण उपलब्ध हैं।

**वेतन :** फुटवियर डिजाइनर शुरुआत में सालाना 2 से 3.5 लाख रुपये कमा सकते हैं, जो अनुभव बढ़ने पर 10 लाख रुपये तक हो सकता है। फैक्टरी/प्रोडक्शन के पदों पर 15,000 रुपये प्रति माह से शुरुआत संभव है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों में प्रबंधन, प्रोडक्ट डेवलपमेंट और सप्लाई चेन में वेतन 4 लाख रुपये सालाना से शुरू होता है।

### जॉब/करिअर

- उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग, लखनऊ में लेखपाल के पदों पर ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया जारी है।
**कुल पद :** 7994
**अंतिम तिथि:** 28 जनवरी 2026
**आवेदन प्रक्रिया :** आयोग की आधिकारिक वेबसाइट **upsssc.gov.in** पर जाएं।
- झारखंड गृहरक्षा वाहिनी, गोड्डा में होमगार्ड (ग्रामीण एवं शहरी) के पद भरे जाएंगे।
**कुल पद :** 446
**अंतिम तिथि:** 30 जनवरी 2026
**आवेदन प्रक्रिया :** ऑनलाइन करें। वेबसाइट है : **recruitment.jharkhand.gov.in**
- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने डेंटल सर्जन, वेटरिनरी ऑफिसर समेत अन्य पदों पर भर्ती के लिए आवेदन मांगे हैं।
**कुल पद :** 2158
**अंतिम तिथि:** 22 जनवरी 2026
**आवेदन प्रक्रिया :** ऑनलाइन करना होगा। वेबसाइट है- **uppsc.up.nic.in**
- राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार में मनोचिकित्सक समेत अन्य विशेषज्ञ चिकित्सकों के पदों पर आवेदन करने का अवसर है।
**कुल पद :** 256
**अंतिम तिथि:** 03 फरवरी 2026
**आवेदन प्रक्रिया :** ऑनलाइन। वेबसाइट **shs.bihar.gov.in** पर जाएं।
- नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड में ग्रेजुएट इंजीनियर ट्रेनी के पदों पर ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भरे जा रहे हैं।
**कुल पद :** 110
**अंतिम तिथि:** 22 जनवरी 2026
**आवेदन प्रक्रिया :** वेबसाइट **nalcoindia.com** पर जाएं।
- यूको बैंक में जनरलिस्ट एवं स्पेशलिस्ट अधिकारियों के पद रिक्त हैं। ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।
**कुल पद :** 173
**अंतिम तिथि:** 02 फरवरी 2026
**आवेदन प्रक्रिया :** बैंक की आधिकारिक वेबसाइट देखें - **uco.bank.in**
- रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड ने आइसोलेटेड कैटेगरी के अंतर्गत जूनियर ट्रांसलेटर, पब्लिक प्रॉसिक्यूटर समेत अन्य पदों पर आवेदन आमंत्रित किए हैं।
**कुल पद :** 312
**अंतिम तिथि:** 29 जनवरी 2026
**आवेदन प्रक्रिया :** ऑनलाइन। वेबसाइट है- **rrbchennai.gov.in**
- उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड में कॉन्स्टेबल एवं समकक्ष पदों पर सीधी भर्ती के लिए आवेदन किए जा रहे हैं।
**कुल पद :** 32,679
**अंतिम तिथि:** 30 जनवरी 2026
**आवेदन प्रक्रिया :** आधिकारिक वेबसाइट **uppbpb.gov.in** पर लॉगइन करें।
(**नोट :** आवेदन करने से पहले आधिकारिक वेबसाइट से अपने स्तर पर जांच कर लें।)

### भेजें अपना सवाल

करिअर या शैक्षिक कोर्स संबंधी आपके मन में कोई उलझन है या कोई जानकारी चाहते हैं, तो आप हमें अपने सवाल नीचे दी गई ईमेल पर भेज सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ उसके जवाब देंगे। इस ईमेल आईडी का उपयोग करें
**nayiraheincareer@gmail.com**

---

**एक्सपर्ट टिप्स**

**आशीष आदर्श**
करिअर काउंसलर

# एक वर्षीय बीएड कोर्स लाने की चल रही तैयारी

**■ मेरा ग्रेजुएशन अगले वर्ष पूरा होगा। आगे बीएड कर किसी स्कूल में शिक्षिका के तौर पर करिअर बनाना चाहती हूं। बीएड की अवधि में भी संशोधन होने की सूचना थी। कृपया मार्गदर्शन करें।**

**रचना भारती**

देश में टीचिंग पाठ्यक्रम संचालित करने वाली वैधानिक संस्था नेशनल काउंसिल फॉर टीचर्स एजुकेशन यानी एनसीटीई जल्दी ही 2 वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम के अतिरिक्त 1 वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम लाने की योजना पर काम कर रही है, क्योंकि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत ग्रेजुएशन कोर्स 3 वर्ष से बढ़ाकर 4 वर्ष कर दिया गया है। 4 वर्षीय ऑनर्स ग्रेजुएशन डिग्री पूरा करने वाले छात्रों को बीएड 1 वर्ष में ही पूरा करने का लाभ मिलेगा। इसके अतिरिक्त, 10+2 के बाद 4 वर्षीय आईटेप यानी इंटिग्रेटेड टीचर्स एजुकेशन प्रोग्राम को प्रारंभ किया जा चुका है।

एक पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर कई सरकारी एवं कुछ निजी बीएड कॉलेजों में आईटेप प्रारंभ हो चुका है। ऐसी भी संभावना है कि कुछ वर्षों के बाद 2 वर्षीय बीएड को बंद कर दिया जाए। जहां तक बीएड में दाखिले की प्रक्रिया का प्रश्न है, प्रत्येक राज्य में बीएड कॉलेजों में दाखिले के लिए प्रवेश जांच परीक्षा आयोजित की जाती है, जिसमें उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को ही उस राज्य के सरकारी व निजी कॉलेजों में प्रवेश मिलता है। प्रवेश जांच परीक्षा को संचालित करने की जिम्मेदारी उस राज्य के शिक्षा विभाग या किसी एक विश्वविद्यालय को सौंपी जाती है। अमूमन मार्च में आवेदन प्रक्रिया प्रारंभ होती है, जिसे पूरा कर मई-जून में प्रवेश जांच परीक्षा आयोजित की जाती है। अपने राज्य के समाचार पत्रों पर नजर बनाए रखें और अगले कुछ माह में होने वाली बीएड प्रवेश जांच परीक्षा में बैठने की तैयारी करें। बीएड प्रवेश जांच परीक्षा से संबंधित गाइड आसानी से मिल जाएगी, जिससे आपको परीक्षा में शामिल विषय और पुराने वर्षों के प्रश्न पत्र भी मिल जाएंगे, इनके आधार पर अपनी तैयारी का आकलन कर सकती हैं।

**■ मैंने आर्ट्स से 10+2 किया है। क्या मैं नर्सिंग का कोई कोर्स कर सकता हूं? कृपया जानकारी दें।**

**पुरुषोत्तम सिंह**

नर्सिंग में कई पाठ्यक्रम होते हैं, जिनमें दाखिले की अलग अलग योग्यताएं हैं। इन पाठ्यक्रमों में 2 वर्षीय एएनएम (औक्सिलिअरी नर्सिंग एंड मिडवाइफरी), 3 वर्षीय जीएनएम (जेनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी) एवं 4 वर्षीय बीएससी (नर्सिंग) शामिल हैं। जिन छात्र-छात्राओं का विषय 10+2 में आर्ट्स रहा है, वैसे छात्र एएनएम और जीएनएम पाठ्यक्रमों में दाखिला ले सकते हैं, जबकि बीएससी (नर्सिंग) के लिए 10+2 में बायो जरूरी है। विशेष जानकारी के लिए काउंसिल की आधिकारिक वेबसाइट देखें - **indiannursingcouncil.org**

---

**करिअर टिप्स**

# अपनी कंपनी के माहौल में ढल जाएं

**योग्यता के बावजूद जब कहा जाए कि आप 'कल्चर फिट' नहीं हैं, तो समझ लें कि आपकी सोच या कार्यशैली कंपनी के माहौल से मेल नहीं खा रहे। ऐसे में अपनी कार्यशैली में कुछ बदलाव करें :**

**कई** बार तकनीकी रूप से सक्षम होने के बावजूद टीम से तालमेल मुश्किल लगता है। इसका कारण आपके काम करने का तरीका और नजरिए का कंपनी की संस्कृति से मेल न खाना हो सकता है। यही है 'कल्चर फिट' का विचार। इसमें आपका नजरिया और कार्यशैली टीम के साथ तालमेल बनाती है और आगे बढ़ने के अवसर देती है। इसके लिए जरूरी है कि -

- **हर किसी से सीखें :** केवल वरिष्ठ सदस्यों से ही नहीं, बल्कि नए सदस्यों और सहकर्मियों से भी सीखना जरूरी है। यह दर्शाता है कि आप हर स्तर पर टीम के योगदान और सोच को सम्मान देते हैं।
- **काम का उद्देश्य समझें :** असाइनमेंट पूरा करना ही लक्ष्य न समझें। यह जानना जरूरी है कि यह काम क्यों दिया गया है और टीम के बड़े लक्ष्य में इसका क्या योगदान है।
- **नए तरीके अपनाएं :** नए प्रोजेक्ट में अपनी आदतें थोपने के बजाय, टीम की कार्यप्रणाली को समझें और तालमेल बनाकर आगे बढ़ें।

- **छोटे कामों में मदद करें :** डाटाबेस अपडेट, रिपोर्ट तैयार करना या टीम के सिस्टम सुधार जैसे छोटे कामों में हाथ बटाएं। ये छोटे कदम भी टीम में आपका भरोसा और प्रभाव बढ़ाते हैं।
- **टीम के साथ सामंजस्य बनाएं :** मीटिंग में सिर्फ बोलने या सुनने तक सीमित न रहें। टीम का माहौल और दबाव समझकर अपने जवाब व अंदाज को ढालें, काम या व्यवहार पर मिली प्रतिक्रिया को स्वीकारें और काम की समयसीमा का ध्यान रखें।

### नया शहर और नई टीम फ्रेशर के लिए सलाह

- **बड़े शहर की रफ्तार समझें :** ऑफिस की गति, मीटिंग फ्लो और बातचीत का अंदाज पकड़ें।
- **टीम की भाषा व अंदाज सीखें :** शुरुआत में टीम का अवलोकन करें। देखें, लोग कैसे बातें करते हैं और किस तरह के शब्दों या लहजे का प्रयोग करते हैं।
- **अनौपचारिक रिश्ते बनाएं :** लंच, ब्रेक टाइम या छोटे गपशप में शामिल होकर टीम के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव बनाएं। इससे हिचकिचाहट कम होती है और तालमेल बढ़ता जाता है।
- **नए टूल्स में हाथ आजमाएं :** वीडियो, ट्यूटोरियल या डॉक्यूमेंट देखकर नए टूल सीखें और सीखते ही इसे अपने काम में आजमाएं। इससे आप काम जल्दी और बेहतर कर पाएंगे। टीम का आप पर भरोसा बनेगा।

**श्वेता राकेश**

---

# रोजनामचा

**पं. राघवेन्द्र शर्मा**
ज्योतिषाचार्य

**स्कैन करें**
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

**मेष :** आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के अवसर मिल सकते हैं, परंतु किसी दूसरे स्थान पर भी जा सकते हैं।

**वृष :** आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन अशांत भी रहेगा। जीवनसाथी व संतान की सेहत का ध्यान रखें। माता-पिता का साथ मिलेगा। आय में वृद्धि होगी।

**मिथुन :** आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। मित्रों के सहयोग से कारोबार में सुधार हो सकता है।

**कर्क :** मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में वृद्धि के साथ स्थान परिवर्तन हो सकता है।

**सिंह :** मन परेशान हो सकता है। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। लाभ के अवसर मिलेंगे।

**कन्या :** मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। भवन सुख में वृद्धि होगी। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ भी अधिक रहेगी। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

**तुला :** मन परेशान रहेगा। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ भी अधिक रहेगी। कारोबार के लिए परिवार से दूर दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

**वृश्चिक :** आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। बातचीत में संतुलित रहें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। सेहत का ध्यान रखें।

**धनु :** मन परेशान रहेगा। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। यात्रा पर जाते समय सेहत का ध्यान रखें। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ भी अधिक रहेगी।

**मकर :** मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। अपनी भावनाओं को वश में रखें। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

**कुंभ :** पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। बौद्धिक कार्यों से आय के साधन बन सकते हैं। संतान की ओर से सुखद खबर मिल सकती है। धार्मिक संगीत में रुझान बढ़ सकता है।

**मीन :** नौकरी के लिए परीक्षा व साक्षात्कार आदि कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी मित्र के सहयोग से लाभ में वृद्धि हो सकती है। परिवार में सुख- शांति रहेगी। सेहत का ध्यान रखें।

### व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

15 जनवरी, गुरुवार, **शक संवत्:** 25, पौष, (सौर) शक 1947, **पंजाब पंचांग:** 02, माघ मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 25, रज्जब 1447, **विक्रमी संवत्:** माघ कृष्ण द्वादशी तिथि रात्रि 08.17 मिनट तक, पश्चात त्रयोदशी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 05.48 मिनट (सूर्योदय से पहले) तक पश्चात मूल नक्षत्र। चंद्रमा वृश्चिक राशि में रात्रि 05.48 मिनट (सूर्योदय से पहले) तक उपरांत धनु राशि।

**सूर्य उत्तरायण।** दोपहर 01.30 मिनट से अपराह्न 03 बजे तक राहुकालम्। तिलद्वादशी। संक्रान्ति करिदिन।

### वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

**कृपया यह बताएं कि वास्तु के अनुसार घर बनाने के बावजूद हमसे ऐसी कौन सी गलतियां हो जाती हैं, जो नुकसान देती हैं। – नम्रता खरे, नोएडा**

- यदि ईशान कोण में मोबाइल, वाई फाई, चार्जिंग होती है तो व्यक्ति दिन–रात सोच में डूबा रहता है, परंतु कोई निर्णय नहीं कर पाता।
- यदि ब्रह्मस्थान पर भारी फर्नीचर रखा हो या इस स्थान पर मोबाइल का अत्यधिक उपयोग हो, तो काम या प्रोजेक्ट शुरू तो होते हैं, लेकिन पूरे नहीं हो पाते।
- उत्तर दिशा में भारी सामान, स्टोर, जूते, अनावश्यक पुस्तकें रखने से मानसिक बोझ बढ़ता है। इस दिशा में केवल प्रतिदिन प्रयोग में आने वाली चीजें ही रखना सही है।

### वर्ग पहेली : 8210

**बाएं से दाएं**
2. एक जैसा; बराबर; समान तल वाला (4)
5. उत्सर्ग करना; बलिदान करना; न्योछावर करना; लुटा देना (3)
6. गर्जन; गड़गड़ाने का स्वर (6)
7. बोध्य; सरल; सहज; सीधा; सुविधाजनक (3)
8. तह; पपड़ी; सतह; स्तर (3)
9. क्षुद्र; छोटा; तुच्छ; मामूली (3)
10. आगे न बढ़ने देना; मना करना; बाधा डालना (3)
13. तर्क-वितर्क करना; दलील देना; विवाद करना (3,3)
14. गवाही देने वाला; साक्षी (3)
15. किसी पदार्थ के अभाव का दुःख सहना; बेचैन रहना; पीड़ित होना (4)

**ऊपर से नीचे**
1. हाल ही में आया हुआ; नया आया हुआ (4)
2. सचेत करना; सतर्क करना; चौकस करना (3,3)
3. पहाड़ के नीचे की भूमि; तराई (4)
4. किसी की शादी कराना; घर आबाद करना; घर की अवस्था सुधारना (2,3)
7. सम्मान देना; सत्कार करना; इज्जत देना (3,3)
8. थमाना; पकड़ने के लिए प्रवृत्त करना; गिरफ्तार करवाना (5)
11. मित्र; संगी; सखा; साथी; पति (4)
12. खालीपन; शून्यता; सूना होने का भाव (4)

**हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली**
(उत्तर अगले अंक में)

### वर्ग पहेली : 8209

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 अ | ल | 2 ग | अ | ल | 3 ग | क | 4 र | ना |
| ट | ■ | ट | ■ | ■ | ला | ■ | स | ■ |
| 5 क | न | क | र | 6 स | ■ | 7 मै | दा | न |
| जा | ■ | ना | ■ | मा | ■ | ■ | य | ■ |
| 8 ना | 9 का | ■ | 10 बि | लो | ना | ■ | 11 क | 12 र |
| ■ | र्य | ■ | ■ | च | ■ | 13 प | ■ | वा |
| 14 प | क | ना | ■ | 15 क | ह | र | ढा | ना |
| ■ | ला | ■ | 16 बा | ■ | ■ | च | ■ | हो |
| 17 अ | प | ना | घ | र | स | म | झ | ना |

### सुडोकू : 8192

*मध्यम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 7 | | | 1 | 2 | | | |
| | 1 | | | | | | | 8 |
| 9 | | | 3 | | | | | |
| | | | | | 7 | | 5 | 2 |
| | 8 | 4 | | | | 1 | 9 | |
| 6 | 5 | | 9 | | | | | |
| | | | | | 3 | | | 4 |
| 3 | | | | | | | 7 | |
| | | | 1 | 8 | | | 6 | 3 |

**खेलने का तरीका :** दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

### सुडोकू : 8191

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 8 | 2 | 1 | 6 | 5 | 3 | 4 | 9 |
| 6 | 1 | 9 | 8 | 3 | 4 | 5 | 7 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 7 | 9 | 2 | 6 | 1 | 8 |
| 4 | 6 | 7 | 5 | 8 | 3 | 2 | 9 | 1 |
| 9 | 3 | 1 | 4 | 2 | 7 | 8 | 5 | 6 |
| 2 | 5 | 8 | 6 | 1 | 9 | 4 | 3 | 7 |
| 1 | 2 | 3 | 9 | 5 | 6 | 7 | 8 | 4 |
| 5 | 9 | 4 | 2 | 7 | 8 | 1 | 6 | 3 |
| 8 | 7 | 6 | 3 | 4 | 1 | 9 | 2 | 5 |

संपादकीय जागरण

गुरुवार, 15 जनवरी, 2026 : माघ कृष्ण - 12 वि. 2082

परिवर्तन नवीनता का प्रतीक है

# आफत बने आवारा कुत्ते

**पशु कल्याण** बोर्ड के इस आंकड़े से आवारा कुत्तों को लेकर सुप्रीम कोर्ट के आदेश-निर्देश से असहमत लोगों की आंखें खुल जाएं तो अच्छा कि देश में प्रतिदिन करीब दस हजार लोगों को आवारा कुत्ते काटते हैं। इस बोर्ड के आंकड़े यह भी बता रहे हैं कि कुत्तों का शिकार होने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। 2022 में कुत्तों के काटने के करीब 22 लाख मामले दर्ज हुए थे। 2023 में यह संख्या लगभग 27.5 लाख रही और 2024 में 37 लाख से अधिक पहुंच गई। ये वे आंकड़े हैं, जो रिपोर्ट होते हैं। कोई भी समझ सकता है कि ग्रामीण इलाकों और छोटे शहरों के न जाने कितने मामले तो रिपोर्ट ही नहीं होते। आवारा कुत्तों के कारण लोगों को जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, उसे देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने जो भी आदेश-निर्देश दिए, उन पर कड़ाई से पालन होना ही चाहिए। विडंबना यह है कि पशु प्रेमी लोगों को आवारा कुत्तों को नियंत्रित करने और उनकी आक्रामकता से लोगों को बचाने संबंधी सुप्रीम कोर्ट के आदेश-निर्देश रास नहीं आ रहे हैं। वे आए दिन सुप्रीम कोर्ट में अपना पशु प्रेम प्रदर्शित करने के लिए खड़े हो जाते हैं और वहां कुतर्कों के साथ अव्यावहारिक सुझाव भी पेश करते हैं। वे जैसी संवेदनशीलता कुत्तों के प्रति दिखाते हैं, वैसी मनुष्यों के प्रति दिखाने के लिए तैयार नहीं। आखिर यह कैसा पशु प्रेम है कि मनुष्यों से अधिक आवारा कुत्तों की चिंता की जा रही है और वह भी तब जब वे आफत बन रहे हैं?

निःसंदेह भारतीय संस्कृति प्राणि मात्र के कल्याण की बात करती है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि आवारा कुत्तों अथवा अन्य बेसहारा पशुओं को इतनी अधिक प्राथमिकता मिले कि मनुष्यों के समक्ष संकट पैदा हो जाए। पशु प्रेमी लोग आवारा कुत्तों के नियमन-नियंत्रण का विरोध तो करते हैं, लेकिन उन्हें पालने अथवा उनकी देखभाल करने के लिए तैयार नहीं। उलटे उन्हें सड़कों पर खाना खिलाने और उनका जहां-तहां विचरण होने देने की स्वतंत्रता चाहते हैं। संकट केवल यह नहीं कि आवारा कुत्तों के काटने के मामले बढ़ रहे हैं, बल्कि यह भी है कि ऐसे कई मामले जानलेवा सिद्ध हो रहे हैं। हर दिन देश के किसी न किसी हिस्से से आवारा कुत्तों के शिकार लोगों की मौत के समाचार सामने आते हैं। गत दिवस ही फिरोजपुर में आवारा कुत्तों के हमले में एक युवक की मौत हो गई। ऐसी मौतों से किसी का भी हृदय द्रवित हो जाए, लेकिन कथित पशु प्रेमी आवारा कुत्तों को लेकर अपनी बेजा दलीलें छोड़ने को तैयार नहीं और वह भी तब, जब इससे भली तरह परिचित हैं कि हमारे नगर निकाय उन पर लगाम लगाने में नाकाम हैं और विकसित देशों में आवारा पशुओं को नियंत्रित करने का काम कठोरता से होता है।

# सही सुझाव

**दिल्ली के** विधायकों ने लोक निर्माण मंत्री को शहर में यातायात सुगम बनाने के लिए 60 फुट ओवरब्रिज (एफओबी) बनाने का सुझाव दिया है। इसे गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। इससे पैदल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी और जाम की समस्या दूर करने में भी मदद मिलेगी। फुटपाथ पर अतिक्रमण और सड़क पार करने की सुरक्षित व्यवस्था न होने से कई लोग सड़क दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते हैं। यही कारण है कि राजधानी में सड़क दुर्घटनाओं में मरने वालों में लगभग 40 प्रतिशत पैदल यात्री होते हैं। यह अत्यंत चिंताजनक स्थिति है। इस समस्या के समाधान के लिए उचित कदम उठाना अत्यावश्यक है।

> नए फुट ओवरब्रिज बनाने के साथ ही उपलब्ध सुविधाओं के नियमित रखरखाव पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए

हाल ही में लोक निर्माण मंत्री ने सभी विधायकों से अपने-अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार सुझाव मांगे थे। अधिकांश विधायकों ने अपने क्षेत्र में एफओबी निर्माण का प्रस्ताव रखा है। उम्मीद है कि लोक निर्माण विभाग विधायकों के इन सुझावों पर शीघ्र अमल करेगा। इससे दिल्ली की सड़कें अधिक सुरक्षित बन सकेंगी। अधिकांश व्यस्त सड़कों पर अभी भी एफओबी या सबवे की कमी है। जहां ये सुविधाएं उपलब्ध हैं, वहां उनका उचित रखरखाव नहीं होने के कारण वे उपयोग में नहीं आ पातीं। कई स्थानों पर इन पर अतिक्रमण है। संबंधित विभाग को न केवल नए एफओबी और सबवे बनाने पर, बल्कि उपलब्ध सुविधाओं के नियमित रखरखाव पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

## कह के रहेंगे

माधव जोशी

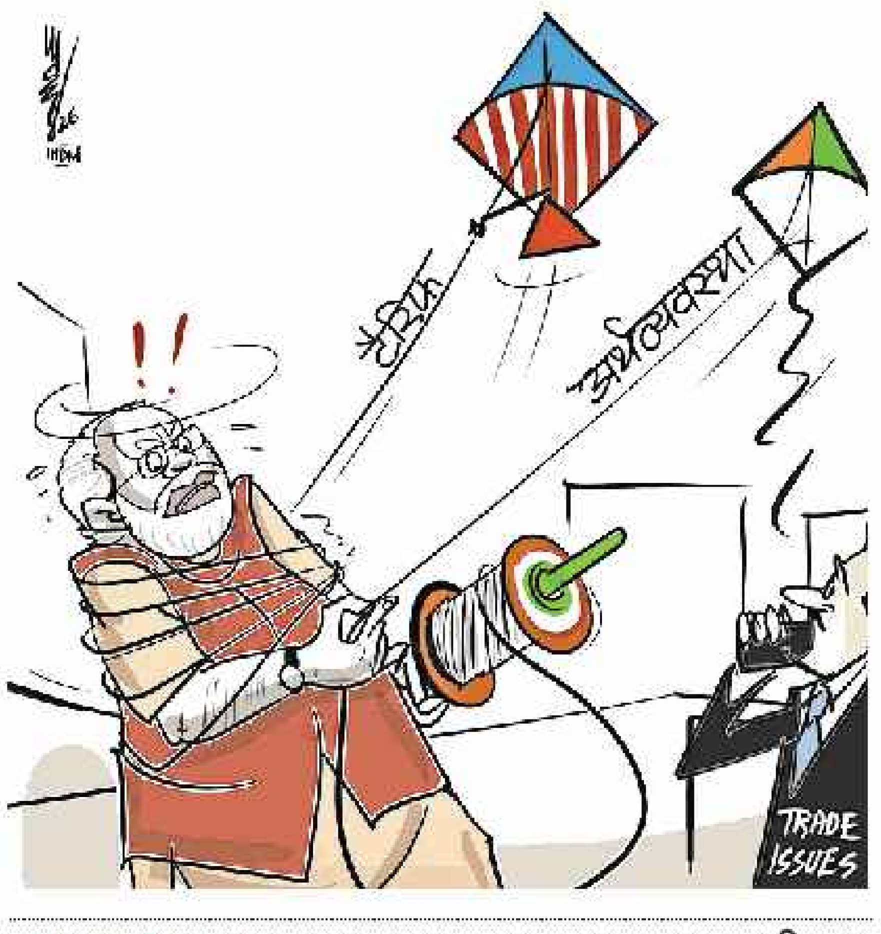


## जागरण जनमत

कल का परिणाम

**क्या कुछ एप्स पर 10 मिनट में डिलीवरी बंद कराने का सरकार का फैसला सही है?**

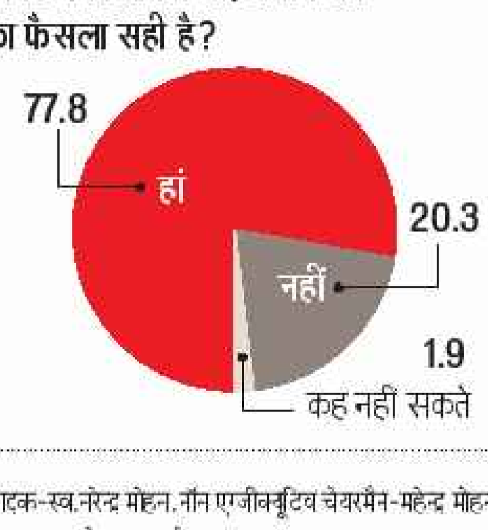


### आज का सवाल

क्या कुत्ते के काटने के मामले में भारी जुर्माने का प्रविधान कुत्तों के आतंक पर अंकुश लगाएगा?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

# विविधता में एकता का उत्सव

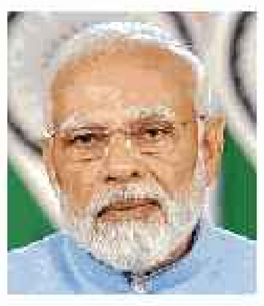

नरेन्द्र मोदी

**काशी-तमिल संगमम का गहरा प्रभाव दिखा है। इसके जरिये सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिलने के साथ शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को भी बढ़ावा मिला है**

कुछ दिन पहले ही मुझे सोमनाथ की पवित्र भूमि पर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में हिस्सा लेने का सुअवसर मिला। इस पर्व को हम वर्ष 1026 में सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार साल पूरे होने पर मना रहे हैं। इस क्षण का साक्षी बनने के लिए देश के कोने-कोने से लोग सोमनाथ पहुंचे। यह इसका प्रमाण है कि भारत के लोग जहां अपने इतिहास और संस्कृति के साथ गहराई से जुड़े हैं, वहीं कभी हार न मानने वाला साहस भी उनके जीवन की एक बड़ी विशेषता है। यही भावना उन्हें एक साथ जोड़ती भी है। इस कार्यक्रम के दौरान मेरी मुलाकात कुछ ऐसे लोगों से भी हुई, जो सौराष्ट्र-तमिल संगमम के दौरान सोमनाथ आए थे और काशी-तमिल संगमम के समय काशी भी गए थे। ऐसे मंचों को लेकर उनके सकारात्मक सोच ने मुझे बहुत प्रभावित किया। 'मन की बात' के एक एपिसोड के दौरान मैंने कहा था कि अपने जीवन में तमिल भाषा न सीख पाने का मुझे बहुत दुख है। यह हमारा सौभाग्य है कि बीते कुछ वर्षों से हमारी सरकार तमिल संस्कृति को देश में और लोकप्रिय बनाने में निरंतर जुटी हुई है। हमारी संस्कृति में संगम का बहुत महत्व है। इस पहलू से भी काशी-तमिल संगमम एक अनूठा प्रयास है। इसमें भारत की विविध परंपराओं के बीच अद्भुत सामंजस्य दिखता है।

काशी तमिल संगमम के आयोजन के लिए काशी सबसे उपयुक्त स्थान है। यह वही काशी है, जो अनादि काल से हमारी सभ्यता की धुरी बनी हुई है। यहां हजारों वर्षों से लोग ज्ञान, जीवन के अर्थ और मोक्ष की खोज में आते रहे हैं। काशी का तमिल समाज और संस्कृति से अत्यंत गहरा नाता रहा है। काशी बाबा विश्वनाथ की नगरी है, तो तमिलनाडु में रामेश्वरम तीर्थ है। तमिलनाडु की तेनकासी को दक्षिण की काशी या दक्षिण काशी कहा जाता है। पूज्य कुमारगुरु परार स्वामी जी ने अपनी विद्वता और अध्यात्म परंपरा से काशी और तमिलनाडु के बीच सशक्त और स्थायी संबंध स्थापित किया था। तमिलनाडु के महान सपूत महाकवि सुब्रमण्यम भारती जी को भी काशी में बौद्धिक विकास और आध्यात्मिक जागरण का अद्भुत अवसर दिखा। यहीं उनका राष्ट्रवाद और प्रबल हुआ, उनकी कविताओं को एक नई धार और स्वतंत्र एवं अखंड भारत की उनकी संकल्पना को एक स्पष्ट दिशा मिली। ऐसे अनेक उदाहरण काशी और तमिलनाडु के बीच गहरे आत्मीय संबंध को दर्शाते हैं।

वर्ष 2022 में वाराणसी की धरती पर काशी-तमिल संगमम की शुरुआत हुई। तब तमिलनाडु से आए लेखकों, विद्यार्थियों, कलाकारों, विद्वानों, किसानों और अतिथियों ने काशी के साथ-साथ प्रयागराज और अयोध्या के दर्शन भी किए थे। इसके बाद के आयोजनों में इस पहल को और विस्तार दिया गया। इसका उद्देश्य यह था कि संगमम में समय-समय पर नए विषय जोड़े जाएं। वर्ष 2023 के दूसरे आयोजन में टेक्नोलाजी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया, ताकि भाषा इसमें बाधा न बने। तीसरे संस्करण में इंडियन नालेज सिस्टम पर विशेष फोकस रखा गया। काशी-तमिल संगमम का चौथा संस्करण 2 दिसंबर, 2025 को आरंभ हुआ। इस बार की थीम बहुत रोचक थी-तमिल करकलम् यानी तमिल सीखें। इससे लोगों को खूबसूरत तमिल भाषा सीखने का एक अनूठा अवसर मिला। तमिलनाडु से आए शिक्षकों ने काशी के विद्यार्थियों के लिए इसे अविस्मरणीय बना दिया। इस बार प्राचीन तमिल साहित्य ग्रंथ तोलकाप्पियम का चार भारतीय और छह विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया। तेनकासी से काशी तक पहुंची एक विशेष व्हीकल एक्सपेडिशन भी देखने को मिली। इसके अलावा काशी में स्वास्थ्य शिविरों और डिजिटल लिट्रेसी कैंप के आयोजन के साथ ही कई और सराहनीय प्रयास भी किए गए। इस अभियान में सांस्कृतिक एकता के संदेश का प्रसार करने वाले पांड्य वंश के महान राजा वीर पराक्रमी पांडियन जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

अवधेश राजपूत

काशी-तमिल संगमम में इस बार जिस चीज ने मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता दी, वह है हमारे युवा साथियों का उत्साह। संगमम के अलावा काशी की यात्रा भी यादगार बने, इसके लिए विशेष प्रयास किए गए। भारतीय रेल ने लोगों को तमिलनाडु से उत्तर प्रदेश ले जाने के लिए विशेष ट्रेनें चलाईं। मैं काशी और उत्तर प्रदेश के अपने भाइयों और बहनों की सराहना करना चाहूंगा, जिन्होंने काशी-तमिल संगमम को विशेष बनाने में अपना अद्भुत योगदान दिया है। कई लोगों ने तमिलनाडु से आए अतिथियों के लिए अपने घरों के दरवाजे तक खोल दिए। स्थानीय प्रशासन भी चौबीसों घंटे जुटा रहा। वाराणसी का सांसद होने के नाते मेरे लिए ये गर्व और संतोष दोनों का विषय है। इस बार काशी-तमिल संगमम का समापन समारोह रामेश्वरम में आयोजित हुआ, जिसमें तमिलनाडु के सपूत उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन जी भी मौजूद रहे। उन्होंने भारतवर्ष की आध्यात्मिक समृद्धि पर बल देते हुए बताया कि कैसे इस तरह के मंच राष्ट्रीय एकता को और अधिक सुदृढ़ करते हैं। काशी-तमिल संगमम का बहुत गहरा प्रभाव देखने को मिला है। इसके जरिये जहां सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिली है, वहीं शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को भी काफी बढ़ावा मिला है। इससे हमारी संस्कृतियों के बीच संबंध और प्रगाढ़ हुए हैं।

काशी-तमिल संगमम का बहुत गहरा प्रभाव दिखा है। इसके जरिये जहां सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिली है, वहीं शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को भी बढ़ावा मिला है। इस मंच ने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को आगे बढ़ाया है, इसलिए आने वाले समय में हम इस आयोजन को और वाइब्रेंट बनाने वाले हैं। यह वह भावना है, जो शताब्दियों से हमारे पर्व-त्योहार, साहित्य, संगीत, कला, खान-पान, वास्तुकला और ज्ञान-पद्धतियों का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। यह समय हर देशवासी के लिए बहुत ही पावन माना जाता है। लोग बड़े उत्साह के साथ संक्रांति, उत्तरायण, पोंगल, माघ बिहू जैसे अनेक त्योहार मना रहे हैं। ये उत्सव मुख्य रूप से सूर्यदेव, प्रकृति और कृषि को समर्पित हैं। ये त्योहार लोगों को आपस में जोड़ते हैं, जिससे समाज में सद्भाव और एकजुटता की भावना और प्रगाढ़ होती है। इस अवसर पर मैं आप सभी को अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

response@jagran.com

# भारत की चिंता बढ़ाता ईरान का संकट

आनंद कुमार

**ईरान के आंतरिक संघर्ष और बड़ी शक्तियों के टकराव में उलझे बिना ही भारत को अपने हित सुरक्षित रखने होंगे**

दिसंबर 2025 के अंत में ईरान में शुरू हुए व्यापक विरोध-प्रदर्शनों ने इस इस्लामिक गणराज्य के समक्ष हाल के वर्षों की सबसे गंभीर आंतरिक चुनौती खड़ी कर दी है। महंगाई, मुद्रा अवमूल्यन और आर्थिक कुप्रबंधन के खिलाफ शुरू हुआ यह जनाक्रोश जल्द ही एक राजनीतिक संकट में बदल गया, जिसमें प्रदर्शनकारी खुलकर सत्ता परिवर्तन की मांग करने लगे। ईरान का आर्थिक संकट कोई नया घटनाक्रम नहीं है। वर्षों से ढांचागत कमजोरियों, भ्रष्टाचार, अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों और नीतिगत गलतियों ने उसकी अर्थव्यवस्था को कमजोर किया है। ईरानी मुद्रा में तेज गिरावट, खाद्य पदार्थों की दरों में उछाल और व्यापक बेरोजगारी ने दिसंबर में विरोध की चिंगारी सुलगा दी। यह आंदोलन पहले तेहरान के बाजारों से शुरू हुआ और कुछ ही दिनों में देश के सभी 31 प्रांतों में 300 से अधिक स्थानों पर फैल गया।

सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई और मजहबी सत्ता प्रतिष्ठान के खिलाफ नारे संकेत हैं कि शासन की वैधता पर गहरा सवाल खड़ा हो चुका है। ईरान का मौजूदा संकट यही दर्शाता है कि आर्थिक कुप्रबंधन और राजनीतिक कठोरता के दीर्घकालिक रणनीतिक परिणाम होते हैं। भारत के लिए भी यह संकट केवल एक दूरस्थ आंतरिक उथल-पुथल नहीं, बल्कि पश्चिम और मध्य एशिया में रणनीतिक, आर्थिक और भू-राजनीतिक हितों से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। ईरानी सरकार की प्रतिक्रिया सख्त और दमनकारी रही है। मानवाधिकार संगठनों के अनुसार सैकड़ों लोगों की मौत हुई है, जिनमें नाबालिग भी शामिल हैं। जहां राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने संयम बरतने और हिंसा से बचने की अपील की है, वहीं न्यायपालिका, सुरक्षा तंत्र और सर्वोच्च नेतृत्व का रुख कहीं अधिक सख्त है। यह संकट से निपटने में शीर्ष नेतृत्व के स्तर पर असहमति को भी दर्शाता है। इंटरनेट ब्लैकआउट भी इसका संकेतक है कि सत्ता प्रतिष्ठान सड़क और सूचना दोनों पर नियंत्रण खोने से चिंतित है।

ईरान में सरकार विरोधी प्रदर्शन अब केवल आर्थिक या राजनीतिक ही नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक और वैचारिक स्वरूप भी ले चुके हैं। कई स्थानों पर शाह के दौर का 'शेर और सूरज' वाला झंडा लहराया गया और निर्वासित पूर्व युवराज रजा पहलवी की तस्वीरें दिखाई गई हैं। इन प्रतीकों का उभरना इस्लामिक रिपब्लिक की वैचारिक नींव को चुनौती देने का स्पष्ट संकेत है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चेतावनी दी है कि यदि शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों को नुकसान पहुंचाया गया तो ईरान को गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। यूरोपीय देशों, आस्ट्रेलिया और कनाडा ने भी बल प्रयोग, मनमानी गिरफ्तारियों और इंटरनेट बंदी की निंदा की है। इसके जवाब में तेहरान ने अमेरिका और इजरायल पर विरोध भड़काने का आरोप लगाया है और समूचे घटनाक्रम को विदेशी साजिश बताया है।

इस्लामिक गणराज्य की वैचारिक नींव को चुनौती ● फाइल

इस पूरे परिदृश्य ने भारत की चिंताएं बढ़ा दी हैं। ऐसी ही एक चिंता ट्रंप प्रशासन द्वारा ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों पर अतिरिक्त 25 प्रतिशत टैरिफ से जुड़ी है। इससे भी बड़ी चिंता चाबहार बंदरगाह परियोजना को लेकर है, जिसमें भारत ने करीब 50 करोड़ डालर का निवेश किया है। यह बंदरगाह भारत के लिए पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए अफगानिस्तान, मध्य एशिया, रूस और यूरोप तक पहुंच प्रदान करता है। यह 'कनेक्ट सेंट्रल एशिया' नीति का अहम स्तंभ और अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे यानी आइएनएसटीसी का प्रमुख हिस्सा है, जिससे परिवहन समय और लागत में उल्लेखनीय कमी आने की उम्मीद है। ईरान में लंबे समय तक चलने वाली अस्थिरता इस परियोजना की समयसीमा, निरंतरता और रणनीतिक मूल्य को प्रभावित कर सकती है। चाबहार को पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह में चीन की मौजूदगी के संतुलन के रूप में भी देखा जाता रहा है, जो चाबहार से मात्र 170 किलोमीटर दूर है। यदि ईरान में अस्थिरता लंबे समय तक बनी रहती है, तो बीजिंग को वहां अपने प्रभाव विस्तार का अवसर मिल सकता है। विशेषकर तब जब तेहरान को पश्चिमी दबाव के बीच आर्थिक और राजनीतिक समर्थन की आवश्यकता पड़े।

भारत के ऊर्जा हित भी इस परिदृश्य से जुड़े हैं। प्रतिबंधों के कारण भले ही हाल के वर्षों में ईरान से ऊर्जा आयात सीमित रहा हो, लेकिन क्षेत्रीय ऊर्जा समीकरणों में ईरान की भूमिका अहम बनी हुई है। राजनीतिक अस्थिरता भविष्य के ऊर्जा सहयोग को और जटिल बना सकती है। इन परिस्थितियों में भारत की कूटनीतिक रणनीति संतुलित और व्यावहारिक रही है। नई दिल्ली ने ईरानी नेतृत्व के साथ संवाद बनाए रखा है और रणनीतिक सहयोग को तात्कालिक अस्थिरता से अलग रखने की कोशिश की है। जनवरी के मध्य में ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची की संभावित भारत यात्रा इसी दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसमें चाबहार, क्षेत्रीय संपर्क, व्यापार और पश्चिम एशिया के व्यापक मुद्दों पर चर्चा की संभावना है। इस साल भारत ब्रिक्स की अध्यक्षता कर रहा है 'ग्लोबल साउथ' की एक प्रमुख आवाज होने के नाते भी इस मामले में उसकी भूमिका अहम हो जाती है। इसमें भारत के लिए चुनौती यह है कि वह अपने रणनीतिक हितों की रक्षा करे और वह भी ईरान के आंतरिक संघर्षों या महाशक्तियों की प्रतिद्वंद्विता में उलझे बिना।

(लेखक मनोहर पर्रिकर इंस्टीट्यूट फार डिफेंस स्टडीज में एसोसिएट फेलो हैं)

response@jagran.com

## ऊर्जा

### मन का उत्तरायण

मकर संक्रांति के अवसर पर सूर्य देव का उत्तरायण एक खगोलीय घटना है, जिसमें गहरा आध्यात्मिक संदेश निहित है। इसीलिए हमारे मनीषियों ने मकर संक्रांति को एक तिथि या परंपरा नहीं, अपितु ईश्वर से जुड़ने का एक आध्यात्मिक अवसर माना है। सूर्य के उत्तरायण होने का अर्थ है अंधकार से प्रकाश की ओर यात्रा। जैसे सूर्य की दिशा बदलती है, वैसे ही यह घटना हमें भी अपने मन की दिशा बदलने का संदेश देती है। मन में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार एवं नकारात्मक विचार मनुष्य के अंतस को अंधकार के समान ढक लेते हैं। परिणामस्वरूप जीवन चिंता, दुख एवं अंधकार से त्रस्त हो जाता है। इसलिए मन का उत्तरायण होना भी आवश्यक है।

मन के उत्तरायण होने का आध्यात्मिक भाव है मन की नकारात्मक प्रवृत्तियों को त्याग कर सात्विक प्रवृत्तियों के प्रकाश को जागृत करना। हमारे शास्त्रों में भी मन को संकल्प तथा विकल्पों का केंद्र माना गया है। मन ही वह भूमि है, जिस पर विचारों का विशाल प्रवाह बहता है। जब मन में उठने वाले संकल्प एवं विकल्प निकृष्ट तथा उदासीन होते हैं तो वे जीवन में भी उदासीनता, हताशा एवं निकृष्टता जैसी नकारात्मकता उत्पन्न करते हैं। इसके उलट जैसे ही मन के विचारों की यह गति बदलकर ज्ञान रूपी प्रकाश से परिपूर्ण होकर उत्तरायण सूर्य के समान हो जाती है तो यह अवसर मनुष्य के जीवन में एक नए आध्यात्मिक उल्लास के सृजन का निमित्त बनता है।

मन के शुभ संकल्प ही हमें आनंद रूपी उपासना के मार्ग की ओर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। मन के उत्तरायण होने पर जीवन भोग से भक्ति की ओर बढ़ता है। मन में व्याप्त कटुता, द्वेष और घृणा जैसे तत्व लुप्त हो जाते हैं। सूर्य की यह यात्रा मनुष्य को भी जड़ता से गति की ओर बढ़ने का संदेश देती है। मानसिक पटल पर व्याप्त सुषुप्ति एवं अज्ञान की अवस्था को त्याग कर जागृति की ओर बढ़ना ही मन का उत्तरायण है।

आचार्य दीप चंद भारद्वाज

## पाठकनामा

pathaknama@nda.jagran.com

### आत्ममंथन करे विपक्ष

'असहमति की अति से त्रस्त देश' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में राजीव सचान ने समकालीन राजनीति की एक अत्यंत चिंताजनक सच्चाई को उजागर किया है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज देश में सहमति तो दूर, तार्किक और तथ्यपरक असहमति भी दुर्लभ होती जा रही है। वर्तमान परिदृश्य में ऐसा प्रतीत होता है कि विपक्ष का मुख्य उद्देश्य किसी विषय पर गंभीर अध्ययन, विमर्श और राष्ट्रहित के दृष्टिकोण से राय रखना नहीं, बल्कि केवल विरोध के नाम पर विरोध करना रह गया है। न तो मुद्दों की गहराई से पड़ताल की जाती है, न ही किसी नीति या विधेयक के सकारात्मक-नकारात्मक पहलुओं पर संतुलित चर्चा। संसद और सार्वजनिक मंच केवल शोर, नारेबाजी और आत्मप्रचार का माध्यम बनते जा रहे हैं। लोकतंत्र में सशक्त विपक्ष अनिवार्य है, किंतु उसका दायित्व केवल सत्ता का विरोध करना नहीं, बल्कि रचनात्मक सुझाव देना, वैकल्पिक समाधान प्रस्तुत करना और आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय हित में सहमति दिखाना भी है। दुर्भाग्य से आज विपक्ष इस भूमिका से लगातार दूर होता जा रहा है, जिससे देश का विधायी और विकासात्मक कार्य बाधित हो रहा है। यदि असहमति केवल राजनीतिक हथियार बनकर रह जाएगी और उसमें तर्क, अध्ययन तथा देशहित का भाव नहीं होगा तो यह स्थिति लोकतंत्र के लिए किसी दुःस्वप्न से कम नहीं होगी। समय आ गया है कि विपक्ष आत्ममंथन करे और विरोध की नहीं, बल्कि जिम्मेदारी की राजनीति अपनाए।

विमलेश कुमार सिंह चौहान, लखनऊ

### अमर्यादित चुनावी व्यवहार

बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) का कुल बजट लगभग 75 हजार करोड़ रुपए का है, जो एशिया के किसी भी देश की म्युनिसिपल कारपोरेशन से सबसे बड़ा बजट धारक निगम है। 25 सालों से शिवसेना बृहन्मुंबई नगर पालिका पर काबिज है। इस बार जिस तरह की महापालिका चुनावों में टिप्पणियां, धमकियां, अमर्यादित व्यवहार व स्तरहीन राजनीतिक जुमलेबाजी देखने व सुनने को मिली। यह निश्चित ही निंदनीय व अपाच्य स्तर की लगी। विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं की जुबानी शब्दावली या डायलागबाजी ऐसी थी, जैसे इन राजनीतिक दलों को जनता द्वारा चयनित नहीं किया जाना वरन चुनाव प्रचार के दौरान ऐसा लग रहा था मानो ये जनता को आदेश दे रहे हैं कि वोट हमें ही चाहिए। नेताओं की खोखली, आधारहीन और शूद्र राजनीतिक शैली से जनसेवा का भाव ही नदारद था। चौधराहट व अहम का स्तर इतना कि मानों समस्त ब्रह्मांड पर ही एकछत्र राज इन्हीं नेताओं का हो। दादागिरी वाली भाषा शैली, अप्रत्यक्ष रूप से 15 मिनट वाला अशोभनीय डायलाग, मराठी बनाम हिंदी भाषा पर विवाद, लुंगी-पुंगी जैसे बाजारी शब्दों से क्या जनसाधारण के दिलों पर राज किया जा सकता है? मुंबई महापालिका का चुनाव प्रचार विशुद्ध रूप से सी ग्रेड की बालीवुड फिल्म जैसा लगा। एक आध राजनीतिक दल ने ही मुंबई के विकास की बात करी वरना ऐसा लग रहा था, जैसे नेताओं की नजर केवल 75 हजार करोड़ पर लगी हो।

दीपक गौतम, सोनीपत

### ईरान पर हमला ठीक नहीं

वेनेजुएला पर हमला करके वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को जिस तरह से अमेरिका गिरफ्तार करके लाया, उसके बाद ही यह अनुमान लगने लगा था कि अगला निशाना ईरान हो सकता है। उसके बाद ईरान में सत्ता विरोधी लहर देखने को मिली। ईरान में गृह युद्ध की स्थिति बन चुकी है। अमेरिका ईरान पर नजर गड़ाए बैठा है। ईरान को घेर चुका है। लेकिन ईरान पर हमला करना राजनीतिक और आर्थिक रूप से अमरीका के लिए बहुत बड़ी गलती हो सकती है। इसके साथ ही, अमेरिका, ईरान को वेनेजुएला समझने की बिल्कुल भी गलती न करे। ईरान मध्य एशिया की एक बड़ी और आर्थिक शक्ति है अगर अमेरिका ईरान पर हमला करता है तो वह सुरक्षा की रणनीति न अपना कर जवाबी कार्रवाई की रणनीति अपना सकता है। जिससे अमेरिका के राजनीति, सैनिक और आर्थिक हितों को भी नुकसान पहुंच सकता है। साथ ही, अमेरिका को ईराक और अफगानिस्तान से भी सबक लेना चाहिए कि अमेरिका के सैनिक कार्रवाई करने तथा सत्ता बदलने के बाद वहां पर कैसा राजनीतिक गृहयुद्ध शुरू हो गया था। जिससे अमेरिका को वैश्विक स्तर पर बदनामी और नुकसान का ही सामना करना पड़ा था। इसके साथ ही, अमेरिका को यह भी समझना चाहिए कि ईरान को चीन और रूस का पर्याप्त समर्थन मिला हुआ है। कहीं ऐसा ना हो कि ईरान पर अमेरिका का हमला महायुद्ध का रूप ले ले।

विजय किशोर तिवारी, नई दिल्ली

## पोस्ट

जब से भारत ने राफेल विमानों का आर्डर दिया है, तब से देश में कथित रक्षा विशेषज्ञों की बाढ़ आ गई है। वे यह बताने में जुटे हैं कि भारत को क्या करना चाहिए और क्या नहीं। मोहन सिन्हा@Mohansinha

एक मुश्किल पिच पर जहां शीर्ष क्रम चरमरा गया, वहां केएल राहुल का शतक बहुत मायने रखता है। यह दर्शाता है वह 2027 के विश्व कप अभियान का अहम हिस्सा होने जा रहे हैं। भावना@cricbhawana

बताया जा रहा है कि ईरान में 2,000 से अधिक प्रदर्शनकारियों को मार दिया गया। यह बहुत बड़ी संख्या है। ऐसे में हम सभी को ऐसी लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के लिए उस शक्ति का आभार व्यक्त करना चाहिए, जिसकी बदौलत हम सत्ताधारियों की आलोचना कर लेते हैं। यशवंत देशमुख@YRDeshmukh

एक मानवाधिकार रिपोर्ट के अनुसार बीते सात महीनों में बांग्लादेश में 117 अल्पसंख्यकों की हत्या हुई है। इनमें से 11 की हत्या तो पिछले दो हफ्तों में ही हुई। वर्ष 1971 में यहां 36 प्रतिशत रही हिंदू आबादी अब घटकर 9.6 प्रतिशत रह गई है। पल्लवी घोष@_pallavighosh

## जनपथ

दिखता सारे विश्व में आज संक्रमण काल,
बदल रहा है विश्व यह बदल रहा सब हाल।
बदल रहा सब हाल आ रहे भारत चीनी,
किसी देश की भूमि जा रही जबरन छीनी।
दो हजार छब्बीस देखिए क्या है लिखता,
लगता है डर देख अभी तो जो है दिखता!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नईदिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय :0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 181

## एक नजर में

### 'कुछ ही महीनों में 40 लाख फास्टैग वार्षिक पास बेचे गए

**नई दिल्ली:** सरकार ने बताया कि कुछ महीनों में ही 40 लाख से अधिक फास्टैग वार्षिक पास बेचे गए हैं, जिसमें कार यूजर्स की संख्या लगभग 20 प्रतिशत तक पहुंच गई है। यह इस बात का प्रमाण है कि सस्ती और सुविधाजनक सेवाएं एक साथ चल सकती हैं। 15 अगस्त, 2025 को लांच किए गए इस सालाना पास के लिए यूजर्स को 3,000 रुपये का भुगतान करना होता है, जिसके बदले में उन्हें 200 टोल यात्राएं या एक वर्ष की यात्रा का लाभ मिलता है। (आइएएनएस)

### ताजमहल में तीन दिन निशुल्क प्रवेश

**आगरा:** शहंशाह शाहजहां का तीन दिवसीय 371वां उर्स गुरुवार से ताजमहल में मनाया जाएगा। उर्स की शुरुआत दोपहर दो बजे अजान के साथ मुख्य मकबरे में स्थित तहखाने का दरवाजा खोलने से होगी। शाहजहां व मुमताज की तहखाना में स्थित कब्रों को पर्यटक व जायरीन देख सकेंगे। तीन दिन पर्यटकों व जायरीनों को ताजमहल में निशुल्क प्रवेश मिलेगा। (जासं)

### स्विगी व जेप्टो ने भी '10-मिनट' की ब्रांडिंग बदली

**नई दिल्ली:** ब्लिंकिट के बाद क्विक कामर्स कंपनियों स्विगी इंस्टामार्ट, जेप्टो और फ्लिपकार्ट मिनट्स ने भी सरकार की ओर से दबाव के बाद अपने "10-मिनट" में डिलीवरी के दावे का प्रचार बंद कर दिया है और अपनी ब्रांडिंग बदल दी है। इन कंपनियों के एप से बुधवार को इसका पता चला। हालांकि टाटा ग्रुप का बिगबास्केट एप अभी भी "10 मिनट में ग्रोसरी" दिखा रहा है। (रायटर)

### '176 वर्षों में तीसरा सबसे गर्म साल रहा 2025'

**ब्रसेल्स:** साल 2025 पिछले 176 वर्षों में दुनिया का तीसरा सबसे गर्म वर्ष रहा। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने पुष्टि की है कि धरती ने अब तक का सबसे लंबा दौर 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक औसत तापमान के साथ पूरा किया है। डब्ल्यूएमओ द्वारा संकलित आठ वैश्विक जलवायु आंकड़ों में से छह जिनमें यूरोपीय संघ का ईसीएमडब्ल्यूएफ और ब्रिटेन की मौसम सेवा शामिल हैं ने 2025 को तीसरा सबसे गर्म साल बताया, जबकि दो ने इसे दूसरा स्थान दिया। अमेरिकी एजेंसी एनओएए के अनुसार भी 1850 से शुरू रिकार्ड में 2025 तीसरे स्थान पर है। सबसे गर्म साल का रिकार्ड 2024 के नाम है। ईसीएमडब्ल्यूएफ के मुताबिक, 2025 ने पहला ऐसा तीन वर्षीय दौर पूरा किया, जिसमें औसत वैश्विक तापमान औद्योगिक युग से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। (रायटर)

### डायबिटीज व कैंसर जैसे खतरों से बचने को फ्रूट जूस, मीठे पेय पर बढ़ाएं कर

**नई दिल्ली:** विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कहा है कि मोटापा, डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर और अन्य गैर-संक्रामक बीमारियां विशेष रूप से बच्चों और युवाओं में बड़ी समस्या बनकर उभरी है। इससे निपटने के लिए फ्रूट जूस, डब्बा बंद मीठे पेय पदार्थों और शराब पर कर बढ़ाना जरूरी है। डब्ल्यूएचओ ने दो रिपोर्टों में चिंता जताई है कि अधिकांश देशों में कम कर दरों के कारण मीठे पेय पदार्थ व मादक पेय सस्ते होते जा रहे हैं। कहा कि स्वास्थ्य को क्षति पहुंचाने वाले उत्पाद सस्ते होते जा रहे हैं। (आइएएनएस)

### नन्हें कैप्सूल ने पीएसएलवी-सी62 से अलग होने के बाद डाटा भेजा

**चेन्नई, प्रेट्र:** इसरो के राकेट पीएसएलवी-सी62 मिशन में विफलता के बीच एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। इसरो द्वारा भेजे गए विदेशी छोटे सैटेलाइट पुनः प्रवेश कैप्सूल 'केआइडी' ने सक्रिय रहकर डाटा भेजा है। इस पेलोड को विकसित करने वाले स्पेनिश स्टार्टअप आर्बिटल पैराडाइम ने यह दावा किया है। हालांकि, इसरो ने इस दावे पर टिप्पणी व पुष्टि नहीं की है।

इसरो अध्यक्ष वी. नारायणन ने बताया था कि 12 जनवरी को पीएसएलवी-सी62 मिशन विफल हो गया। राकेट 'तीसरे चरण में व्यवधान के कारण उड़ान पथ में विचलन'' के चलते तय कक्षा तक नहीं पहुंच सका। बाद में पता चला कि एक नन्हा विदेशी सैटेलाइट सक्रिय रहा और लक्ष्य तक भी पहुंचा। 25 किलो की स्पेन की सैटेलाइट केस्ट्रल इनीशियल टेक्नोलाजी डिमांस्ट्रेटर (केआइडी) मिशन के 16 उपग्रहों में से एक था। स्पैनिश स्टार्टअप आर्बिटल पैराडाइम ने बताया, 'हमारा केआइडी कैप्सूल पीएसएलवी-सी62 से अलग हुआ, चालू हुआ और डाटा भेजा।

## माता-पिता की बेकद्री की तो कटेगा वेतन

- तेलंगाना सरकार ने सरकारी कर्मियों के लिए इस आशय का प्रस्ताव किया तैयार
- उपेक्षा करने पर वेतन का एक हिस्सा काटकर सीधे माता-पिता को दिया जाएगा

रेवंत रेड्डी ● फाइल फोटो

**हैदराबाद, एएनआइ :** तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने माता-पिता की देखभाल न करने वाले सरकारी कर्मचारियों के वेतन में कटौती का कानून प्रस्तावित किया है। उन्होंने यहां एक कार्यक्रम में 10 से 15 प्रतिशत की कटौती अनिवार्य करने वाले कानून को लागू करने संबंधी योजना की घोषणा की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रेड्डी ने याद दिलाया, 'हाल ही में मैंने ग्रुप-1 और ग्रुप-2 के चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित करते समय एक बयान दिया था। मैंने कहा था कि चयनित अभ्यर्थियों में से 90 प्रतिशत गरीब परिवारों से आते हैं, और यदि विवाह के बाद उनमें से कोई भी अपने माता-पिता की देखभाल नहीं करता है, तो उनके वेतन से 10 से 15 प्रतिशत की कटौती की जाएगी और सीधे उनके माता-पिता को दी जाएगी। इसके लिए एक कानून बनाया जाएगा।

उन्होंने तेलंगाना सरकार की 'प्रणाम योजना' के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा, आज प्रणाम योजना के तहत सरकार ऐसे उपेक्षित माता-पिता को डे-केयर सेंटर में ला रही है, जहां उन्हें सभी सुविधाएं प्रदान की जाएंगी और सरकार उनके लिए एक परिवार की तरह खड़ी रहेगी। बच्चों के लिए सब कुछ त्यागने वाले माता-पिता देखभाल और सम्मान के हकदार हैं, और उन्हें सहयोग देने के लिए हम प्रणाम कार्यक्रम शुरू कर रहे हैं।

## ममता पर ऐसी कार्रवाई हो, जो नजीर बने : ईडी

नीलू रंजन ● जागरण

**नई दिल्ली:** ईडी ने आइपैक के खिलाफ मनी लांड्रिंग की जांच में बाधा डालने और जब्त दस्तावेजों को जबरन ले जाने के मामले में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ ऐसी कार्रवाई की मांग की है, जो नजीर बने और भविष्य में किसी भी राजनीति दल से जुड़ा कोई भी नेता सार्वजनिक रूप से कानून को अपने हाथ में लेने की हिम्मत नहीं करे। इसके साथ ही ईडी ने सुप्रीम कोर्ट से छापा मारने गए अधिकारियों के साथ-साथ घोटाले के पीड़ित बंगाल की आम जनता के मूल अधिकारों की सुरक्षा की भी गुहार लगाई है। माना जा रहा है कि ईडी सुप्रीम कोर्ट में दाखिल याचिका पर गुरुवार को सुनवाई के लिए मेंशन करेगी।

रविवार को दाखिल अपनी याचिका में ईडी ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। ईडी के अनुसार मुख्यमंत्री के साथ-साथ गृहमंत्री का कार्यभार संभाल रही ममता बनर्जी के पास कानून-व्यवस्था बनाए रखने की संवैधानिक जिम्मेदारी है, जिसमें वह विफल रहीं और खुद ही कानून की धज्जियां उड़ा दी।

ईडी द्वारा जब्त सामानों को छीनकर ले गईं। ईडी ने भारतीय न्याय संहिता की गैरजमानती 17 धाराओं में उन पर एफआइआर दर्ज करने और सीबीआइ जांच की मांग की है। ईडी के अनुसार सीसीटीवी कैमरों को भी ममता बनर्जी व पुलिस ले गई क्योंकि उन्हें मालूम था कि इस मामले में एफआइआर दर्ज हो सकती है।

### आइ-पैक मामले में कलकत्ता कोर्ट ने कहा-ईडी ने नहीं किया कोई दस्तावेज जब्त

**राज्य ब्यूरो, जागरण, कोलकाता :** कोलकाता स्थित राजनीतिक परामर्श संस्था आइ-पैक के कार्यालय पर ईडी की छापेमारी के मामले में बुधवार को कलकत्ता हाई कोर्ट में ईडी तथा तृणमूल कांग्रेस व आइ-पैक की अलग-अलग याचिकाओं पर लाइव सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान हाई कोर्ट की न्यायमूर्ति शुभ्रा घोष ने तृणमूल कांग्रेस की याचिका का निपटारा कर दिया, जिसमें उसने अपने डाटा की सुरक्षा का अनुरोध किया था। अदालत ने कहा कि ईडी ने आठ जनवरी को आइ-पैक के निदेशक प्रतीक जैन के घर और कार्यालय से कुछ भी जब्त नहीं किया था। तृणमूल ने ईडी पर पार्टी के गोपनीय दस्तावेज, सूचनाएं व डाटा को अपने कब्जे में लेने का आरोप लगाया था। ईडी ने पिछले सप्ताह कोयला तस्करी मामले में आइ-पैक के कार्यालय व प्रतीक जैन के आवास पर छापेमारी की थी।

ईडी के वकील ने दावा किया कि सीएम ममता बनर्जी जरूरी दस्तावेजों को ईडी अधिकारियों से छीनकर ले गईं। न्यायमूर्ति शुभ्रा घोष ने ईडी की उस याचिका की भी सुनवाई स्थगित कर दी, जिसमें मामले की सीबीआइ जांच का अनुरोध किया गया था।

## 'तमिल संस्कृति सबसे पुरानी सभ्यताओं में एक, इसमें सदियों की बुद्धिमत्ता समाहित'

### प्रधानमंत्री मोदी ने दिल्ली में पोंगल उत्सव में भाग लिया, इसे वैश्विक त्योहार बताया

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को राजधानी दिल्ली में पोंगल उत्सव में भाग लिया और इसे दुनिया की एक प्राचीन सभ्यता का प्रतिनिधित्व करने वाला वैश्विक त्योहार बताया। केंद्रीय सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री एल मुरुगन के आवास पर आयोजित कार्यक्रम में मोदी की उपस्थिति को दक्षिणी राज्य में मतदाताओं से संपर्क साधने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है, जहां अगले कुछ महीनों में विधानसभा चुनाव होने वाला है।

कार्यक्रम में मोदी ने कहा कि तमिल संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है और इसमें सदियों की बुद्धिमत्ता और परंपरा समाहित है, जो इतिहास से सीख लेकर भविष्य का रास्ता दिखाती है। इस विरासत से प्रेरणा लेते हुए आज का भारत आगे बढ़ने में इसकी सांस्कृतिक जड़ों से मजबूती लेता है। पीएम ने कहा कि पोंगल पर्व पर किसानों के परिश्रम का उत्सव मनाया जाता है और पृथ्वी तथा सूर्य के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाती है। पोंगल का त्योहार हमें याद दिलाता है कि कृतज्ञता केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। जब धरती हमें इतना कुछ देती है, तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम इसे संजोएं और इसकी रक्षा करें।

नई दिल्ली में बुधवार को केंद्रीय मंत्री एल मुरुगन (बाएं से दूसरे) के आवास पर पोंगल उत्सव के दौरान पूजा-पाठ करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ● एएनआइ

### 'पराशक्ति' फिल्म के कलाकार भी थे मौजूद

केंद्रीय मंत्री एल मुरुगन के आवास पर आयोजित पोंगल उत्सव में हाल ही में रिलीज तमिल फिल्म 'पराशक्ति' के कलाकार भी मौजूद थे। अभिनेता शिवकार्तिकेयन और रवि मोहन तथा संगीतकार जीवी प्रकाश कुमार सहित पूरी टीम ने पीएम से मुलाकात की। अभिनेता शिवकार्तिकेयन ने कहा कि प्रधानमंत्री से मिलना हमेशा सम्मान व खुशी की बात होती है।

## सबरीमाला को केरल में बड़ा मुद्दा बनाने की तैयारी में भाजपा

नीलू रंजन ● जागरण

**नई दिल्ली :** दूसरे राज्यों की तरह ही केरल में भी भाजपा का चुनाव प्रचार तो सुशासन और विकास ही होगा लेकिन सबरीमाला में सोने की चोरी को बड़ा मुद्दा बनाया जाएगा। भाजपा के रणनीतिकारों का मानना है कि अयोध्या राम मंदिर की तरह सबरीमाला मंदिर भी केरल में हिंदू जागरण का जरिया बन सकता है और चुनावों में उसका लाभ भाजपा को मिल सकता है। पार्टी के प्रमुख चुनावी रणनीतिकार अमित शाह ने ही सबरीमाला को लेकर आक्रामक रहने को कहा है। मकर संक्रांति पर सबरीमाला मंदिर के लिए 10 हजार स्थानों पर दीप जलाकर भाजपा ने इसकी शुरुआत भी कर दी। दरअसल सोने की चोरी केरल में बड़ा मुद्दा बन गई है। कांग्रेस इस पर विजयन सरकार पर हमलावर है और मामले की सीबीआइ जांच की मांग कर रही है। लेकिन यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट) में इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के होने के कारण ज्यादा आक्रामक होने से परहेज कर रही है। भाजपा के लिए ऐसी कोई बंदिश नहीं है। अमित शाह सोना चोरी मामले में निष्पक्ष जांच की मांग भी कर चुके हैं।

## 'धर्म आधारित राजनीति पर कांग्रेस की लचीली नीति से देश को नुकसान'

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने कांग्रेस पर आरोप लगाया है कि उसने अपने शासनकाल में धर्म आधारित राजनीति के प्रति लचीली नीति अपनाई, जिससे देश को नुकसान हुआ। उन्होंने कहा कि यदि कांग्रेस ने 77 साल पहले सांप्रदायिकता के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया होता तो वह सत्ता से बाहर नहीं होती। मदनी ने यह भी कहा कि अगर सांप्रदायिकता को दृढ़ता से कुचला गया होता तो देश को विनाश से बचाया जा सकता था।

मौलाना अरशद मदनी ● फाइल फोटो

उन्होंने कहा- विभाजन के बाद देश भर में जब मुस्लिम विरोधी दंगे शुरू हुए तो उन्हें रोकने के लिए महात्मा गांधी ने उपवास रखा। सांप्रदायिक शक्तियां यहां तक कि कांग्रेस में मौजूद कुछ बड़े नेताओं को यह बात अच्छी नहीं लगी और वह उनके खिलाफ हो गए। अंततः उनकी हत्या कर दी गई।' उन्होंने कहा कि हमारी नजर में महात्मा गांधी की हत्या धर्मनिरपेक्षता की हत्या थी, अफसोस कांग्रेसी नेतृत्व को जो करना चाहिए था, वह उसने नहीं किया।

## चार साल के विलंब के बाद बीएमसी के लिए आज होगा मतदान

**राज्य ब्यूरो, मुंबई :** मुंबई की महानगरपालिका (बीएमसी) के लिए करीब चार साल विलंब से गुरुवार को चुनाव होने जा रहा है। बीएमसी पर 30 वर्षों से शिवसेना का कब्जा रहा है। अब शिवसेना के विभाजन के बाद शिवसेना (यूबीटी) के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे पुनः देश के इस सबसे बड़े बजटवाली महानगरपालिका पर कब्जा बनाए रखना चाहते हैं।

पिछले चुनाव में उनसे सिर्फ दो सीटें पीछे रह गई भाजपा अब मुंबई महानगरपालिका से भी उन्हें बेदखल करने को प्रतिबद्ध है। चार साल तक चुनाव न होने का मूल कारण ओबीसी आरक्षण को लेकर कानूनी विवाद रहा है।

## शाह ने जगन्नाथ मंदिर में की पूजा, पतंग उड़ाई

**अहमदाबाद, एएनआइ :** गृह मंत्री अमित शाह बुधवार को उत्तरायण के अवसर पर अपने परिवार के साथ अहमदाबाद के जगन्नाथ मंदिर गए और पूजा-अर्चना की। शाह ने अपने संसदीय क्षेत्र में पतंगबाजी में भाग लेकर उत्सव का जश्न मनाया। इंटरनेट मीडिया पर जारी तस्वीरों में गृह मंत्री को परिवार के साथ पतंग उड़ाते देखा जा सकता है।

भगवान जगन्नाथ के दर्शन के बाद शाह ने एक्स पर लिखा-इस साल भी उत्तरायण के पवित्र अवसर पर अहमदाबाद स्थित श्रीजगन्नाथ मंदिर में पूजन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाप्रभु की कृपा देशवासियों पर सदैव बनी रहे। पत्नी सोनलबेन और पुत्र जय शाह के साथ जगन्नाथ मंदिर गए शाह ने गाय को चारा भी खिलाया। एक अन्य पोस्ट में गृह मंत्री ने लिखा-अपने संसदीय क्षेत्र के अखबारनगर में पतंग उड़ाकर मन आनंद से भर गया।

अहमदाबाद में पतंग महोत्सव के दौरान पतंग उड़ाते केंद्रीय गृह मंत्री शाह ● एएनआइ

## मकर संक्रांति पर तेजप्रताप के घर पहुंचे एनडीए नेता, लालू भी पहुंचे आशीष देने

विद्या सागर ● जागरण

**पटना :** बिहार में मकर संक्रांति और राजनीति का गहरा संबंध रहा है। इस पर्व के अवसर पर हमेशा राजनीति की कोई न कोई पदचाप सुनी जाती रही है। बात जब राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की हो तो उनकी हर बात के मायने हैं। इस मकर संक्रांति को भी कुछ ऐसा ही हुआ। छह-सात महीने बाद लालू यादव बड़े पुत्र तेजप्रताप यादव के आवास पर दही चूड़ा के भोज में उन्हें आशीर्वाद देने पहुंच गए। मामला भले ही परिवार का हो, पर राजनीतिक संदेश और संकेत से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। विस चुनाव से पहले ही तेजप्रताप परिवार और पार्टी से बाहर कर दिए गए थे।

तेजप्रताप ने मकर संक्रांति पर मामा प्रभुनाथ यादव, साधु यादव और सुभाष यादव को भी आमंत्रित किया। साधु तेजस्वी और तेजप्रताप पर बरसते रहे हैं, पर बुधवार को वे भी तेजप्रताप के आवास पर थे। तेजस्वी की प्रतीक्षा होती रही, पर वे नहीं आए। तब तेजप्रताप ने व्यंग्य किया कि जयचंदों से घिरे होंगे, इसलिए नहीं आए। लालू प्रसाद ने भी तेजप्रताप को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे उससे नाराज नहीं हैं। परिवार में मतभेद होता है, इसका अर्थ यह नहीं कि दूरी हो गई। इसे परिवार में उनकी वापसी के रूप में भी देखा जा रहा है। तेजप्रताप ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि उनकी पार्टी जेजेडी ही लालू की असली पार्टी है। हम बंगाल में ममता बनर्जी के विरुद्ध लड़ेंगे। तेजस्वी राजद का जेजेडी में विलय कर दें। तेज प्रताप के संबंध में लालू बोले, जहां जाएं मेरा आशीर्वाद है।

तेज प्रताप यादव के आवास पर दही चूड़ा के भोज में पहुंचे लालू यादव ● जागरण

## लालू-तेजस्वी के खिलाफ मुकदमे पर रोक नहीं लगेगी : कोर्ट

**जासं, नई दिल्ली:** दिल्ली हाई कोर्ट ने बुधवार को कहा कि अदालत आइआरसीटीसी घोटाले में आरजेडी नेता लालू प्रसाद और उनके बेटे तेजस्वी यादव के खिलाफ चल रहे मुकदमे पर रोक नहीं लगाएगी। हालांकि, न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की पीठ ने कहा कि ट्रायल कोर्ट अगले सप्ताह गवाहों से जिरह कर सकता है। तब तक वह मामले में आरोप तय करने के ट्रायल कोर्ट के आदेश के खिलाफ पिता-पुत्र की याचिकाओं पर फैसला कर लेगी।

लालू की तरफ से पेश अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने बताया कि पिछली बार अदालत ने आरोप तय करने के खिलाफ वर्तमान याचिकाओं के लंबित रहने के दौरान मुकदमे पर रोक लगाने के मुद्दे पर सुनवाई के लिए 14 जनवरी का समय निर्धारित किया था। उन्होंने कहा कि गवाहों की जांच के बाद ट्रायल कोर्ट गवाहों से जिरह की कार्यवाही शुरू करेगा।

## महिला सशक्तीकरण में यूपी और बिहार का बेहतर प्रदर्शन

**जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली:** नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे- 5 के आंकड़ों का विश्लेषण करके तैयार किए गए महिला सशक्तीकरण सूचकांक (डब्लूईआइ) की बात करें तो उत्तर भारत के प्रमुख राज्य उत्तर प्रदेश और बिहार का स्कोर क्रमशः 19.06 और 19.18 है। वहीं आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जैसे दक्षिण भारतीय राज्यों का स्कोर 17.36 और 17.35 है। वहीं गोवा 27.4 अंक के साथ शीर्ष पर है।

**प्रमुख राज्यों का महिला सशक्तीकरण सूचकांक**

| राज्य | आर्थिक सशक्तीकरण | फैसले लेने में भूमिका | स्वास्थ्य एवं पोषण | लैंगिक भूमिका | डब्ल्यूईआइ |
|---|---|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | 4.5 | 1.24 | 8.47 | 3.14 | 17.36 |
| बिहार | 3.6 | 2.86 | 9.21 | 3.52 | 19.18 |
| कर्नाटक | 6.41 | 1 | 10.65 | 0.97 | 19.03 |
| उत्तर प्रदेश | 3.33 | 2.58 | 9.17 | 3.98 | 19.06 |
| केरल | 3.28 | 2.49 | 10.14 | 5.32 | 21.23 |
| मध्य प्रदेश | 3.32 | 2.16 | 9.4 | 4.47 | 19.35 |
| जम्मू एवं कश्मीर | 5.11 | 0.8 | 10.9 | 4.59 | 21.41 |
| हरियाणा | 3.53 | 2.66 | 9.49 | 5.45 | 21.13 |
| पंजाब | 4.78 | 3.66 | 9.11 | 5.11 | 22.67 |

## शिवकुमार की पोस्ट से कर्नाटक में फिर उभरा नेतृत्व संघर्ष

**बेंगलुरु, आइएएनएस :** कर्नाटक में नेतृत्व संघर्ष फिर से सुर्खियों में आ गया है, जब मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष और उप मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने बुधवार को एक्स पर साझा किया जिसमें संदेश दिया गया था, ''प्रयास विफल हो सकते हैं, लेकिन प्रार्थनाएं कभी विफल नहीं होतीं।''

कांग्रेस के राष्ट्रीय नेतृत्व के बारे में मजबूत अटकलें हैं कि वे मुख्यमंत्री सिद्दरमैया और शिवकुमार को संक्रांति महोत्सव के बाद नेतृत्व संघर्ष को सुलझाने के लिए दिल्ली बुला सकते हैं। शिवकुमार के खेमे को ''अच्छी खबर'' मिलने की उम्मीद है। राहुल गांधी के मैसुरु के मंडकल्लि हवाई अड्डे पर उनसे बातचीत से अटकलें बढ़ गई हैं।

वहीं शिवकुमार ने स्पष्ट किया कि राहुल की यात्रा के दौरान सीएम पद में बदलाव पर चर्चा नहीं हुई।

## ललयाली की लड़ाई में दुश्मन पर काल बन टूट पड़े थे भारत मां के तीन सपूत

### जांबाज विरेंद्र साही, मोहन लाल लखोत्रा और बाना सिंह ने वीरता न दिखाई होती तो जम्मू का बड़ा क्षेत्र पाकिस्तान के कब्जे में होता

**जागरण विशेष**

भारतीय थल सेना दिवस

विवेक सिंह ● जागरण

**जम्मू:** 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान जम्मू-कश्मीर के अखनूर में ललयाली पोस्ट के लिए भीषण लड़ाई लड़ी गई। यहां आठ जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री (आठ-जैकलाई) के तीन जांबाज अपने साथियों संग दुश्मन पर काल बनकर टूट पड़े थे। ललयाली पोस्ट हाथ से निकल जाती तो आज जम्मू के छंब सेक्टर का 48 वर्ग किलोमीटर का इलाका पाकिस्तान के कब्जे में होता। भारतीय थल सेना दिवस पर इन सपूतों की वीर गाथा को याद करना देश की रक्षा में लगे जवानों के बलिदान और योगदान को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ललयाली की लड़ाई के नायक आठ जैकलाई के वीर चक्र विजेता कर्नल विरेंद्र साही घायल होने के बाद भी दुश्मन से लड़ते रहे। गोलियां से छलनी होने के बावजूद वह दुश्मन के सामने डटे रहे। उनके साथ लड़ रहे लांस नायक मोहन लाल लखोत्रा को भी गोलियां लगी थीं। वह जय दुर्गे, भारत माता की जय के उद्घोष के साथ अंतिम सांस तक दुश्मन से लड़ते रहे। इन वीरों के साथ परमवीर चक्र विजेता कैप्टन बाना सिंह ने ललयाली के पास ही देवा बटाला इलाके में पाकिस्तानी सैनिकों के साथ लोहा लेकर आठ जैकलाई की वीरता की परंपरा को कायम रखा।

ललयाली की लड़ाई में चार्ली कंपनी की कमान संभालने वाले मेजर विरेंद्र साही 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान पीस स्टेशन ग्वालियर मुख्यालय में तैनात थे। साही ने स्टेशन मुख्यालय को पत्र लिखा था कि उन्हें बंगाल में युद्ध क्षेत्र में भेजा जाए। जब इसे स्वीकार नहीं किया गया तो उन्होंने तत्कालीन आर्मी चीफ मानेकशा को पत्र लिखकर युद्ध में भेजने का आग्रह किया। इस पर आर्मी चीफ ने निर्देश दिए थे कि अगर युवा अधिकारी युद्ध क्षेत्र में जाना चाहता है तो उसे क्यों रोका जा रहा है। इसके बाद साही को छंब सेक्टर में लड़ाई को भेजा गया।

**नाकाम की पाकिस्तान की साजिश:** पाकिस्तान ने बंगाल में भारतीय सेना की कार्रवाई का बदला लेने के लिए जम्मू के छंब सेक्टर को कब्जे में लेने के लिए जम्मू-कश्मीर में तीन दिसंबर, 1971 को आपरेशन गजब छेड़ा था। पाकिस्तान अखनूर के पुल को कब्जा कर पूरे क्षेत्र को काटना चाहता था। अखनूर के पुल पर कब्जा होने से पाकिस्तान राजौरी, पुंछ जिलों पर काबिज हो जाता। दुश्मन को रोककर उसके मंसूबों को नाकाम बना दिया गया।

### हमारे 17 सैनिक बलिदान हुए, दुश्मन के 87 मार गिराए: साही

सेनानिवृत्त कर्नल विरेंद्र साही ने बताया कि ललयाली पोस्ट सेना के लिए बहुत मायने रखती थी। मेरी कंपनी में 117 लोग थे, इनमें एक लांस नायक मोहन लाल लखोत्रा भी थे। वीर चक्र विजेता लांस नायक मोहन लाल लखोत्रा बलिदान हुए। इस लड़ाई में हमारे 17 सैनिक बलिदान हुए, जबकि हमने दुश्मन के 87 सैनिकों के शव लौटाए थे। मेरे शरीर पर 200 टांके लगे थे।

### परमवीर चक्र विजेता कैप्टन बाना सिंह बोले-हमने दुश्मन को बुरी तरह परास्त कर खदेड़ा

आठ जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री के परमवीर चक्र विजेता कैप्टन बाना सिंह बताते हैं कि वह 1971 के युद्ध में छंब सेक्टर के देवा बटाला में तैनात थे। सेना में शामिल हुए सिर्फ तीन साल हुए थे। हमने दुश्मन को बुरी तरह परास्त कर उसे खदेड़ दिया। बाद में हमने लद्दाख में सियाचिन ग्लेशियर की कायद चौकी को वापस लिया था। इसके लिए मुझे परमवीर चक्र मिला। वर्ष 1971 का युद्ध सबसे खराब परिस्थितियों में भी भारतीय सैनिकों के उच्च मनोबल, अटूट संकल्प, जीतने के अडिग विश्वास व देश के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक था।

वीर चक्र विजेता लांस नायक मोहन लाल लखोत्रा

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

## उप्र में अब झूठी एफआइआर कराने वालों पर चलेगा केस

**विधि संवाददाता, जागरण प्रयागराज:** इलाहाबाद हाई कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव वाला फैसला देते हुए झूठी एफआइआर दर्ज कराने की प्रवृत्ति पर कड़ा अंकुश लगाने की दिशा में स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए हैं। कोर्ट ने फैसले में निर्देश दिया है कि झूठी एफआइआर दर्ज कराने वाले और उनके गवाहों के खिलाफ भी आपराधिक केस चलाया जाए। कोर्ट ने कहा है कि फाइनल या क्लोजर रिपोर्ट के साथ विवेचना अधिकारी को शिकायतकर्ता व गवाहों के लिए कंप्लेंट फार्मेट दाखिल करना होगा। लापरवाही बरतने वाले न्यायिक मजिस्ट्रेट व पुलिस विवेचना अधिकारी भी नहीं बच सकेंगे।

न्यायमूर्ति प्रवीण कुमार गिरि ने कहा कि यदि विवेचना अधिकारी जांच करता है और पाता है कि कोई अपराध नहीं बनता है तो वह न केवल अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए बाध्य है, अपितु पुलिस रेगुलेशन के अनुसार उसे बीएनएस की धारा 212 व 217 (आइपीसी की धारा 177 व 182) में पुलिस को झूठी जानकारी देने के लिए लिखित शिकायत दर्ज कराना भी जरूरी है।

दैनिक जागरण
# सप्तरंग
तकनीक की दुनिया का
गुरुवार, 15 जनवरी, 2026

## गैजेट रिव्यू
## पोको एम8

पोको ने नए साल में पोको एम8 को पेश किया है। स्लीक डिजाइन, कर्व्ड डिस्प्ले और बेहतर परफार्मेंस के हिसाब देखें तो 20 हजार की रेंज में यह एक बैलेंस फोन है।

**डिजाइन एवं डिस्प्ले :** एम सीरीज के पूर्ववर्ती फोन के मुकाबले इसका डिजाइन काफी आकर्षक है। मात्र 7.35 एमएम पतले इस फोन का वजन भी 178 ग्राम ही है। फोन में 120 हर्ट्ज रिफ्रेश रेट के साथ 6.77 इंच की कर्व्ड एमोलेड स्क्रीन है। इसमें 3200 निट्स की पीक ब्राइटनेस मिलती है, जिससे धूप में भी डिस्प्ले संतुलित रहता है। ड्यूरेबिलिटी की बात करें तो वाटर और डस्ट के लिए आइपी66 रेटिंग है।

**परफार्मेंस :** इस फोन में स्नैपड्रैगन 6 जेन3 चिपसेट के साथ 8जीबी तक रैम और 256जीबी तक स्टोरेज है। इस बजट में अन्य फोन के मुकाबले यह बेहतर आप्शन है। हालांकि, एंड्रायड 15 और हाइपरओएस2 होने से फोन के थोड़ा बेहतर होने की गुंजाइश थी। कंपनी की तरफ से चार साल के एंड्रायड वर्जन अपडेट और छह वर्ष के सिक्योरिटी अपडेट का वादा फोन को लंबे समय तक प्रयोग करने के योग्य बनाता है। अगले कुछ महीनों में हाइपरओएस3 अपडेट मिलने की संभावना है। हालांकि, इसमें कई सारे प्री-लोडेड एप्स हैं, जिन्हें आप सुविधानुसार हटा या प्रयोग कर सकते हैं। लाक स्क्रीन, आइकन और वालपेपर में भी बदलाव करने का आप्शन मिलता है। फोन में एआइ के लगभग सभी बेसिक फीचर्स का प्रयोग कर सकते हैं।

**कैमरा :** रियर कैमरे की बात करें तो 50 एमपी प्राइमरी कैमरा, दो एमपी डेप्थ सेंसर और फ्रंट में 20 एमपी का सेल्फी कैमरा है। अच्छी रोशनी में फोटो में पर्याप्त डिटेल्स और कंट्रास्ट होते हैं, पोर्ट्रेट मोड भी संतोषजनक है। हालांकि, कम रोशनी या अंधेरे में कैमरा का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमतर है, यानी फोन के कैमरे की परफार्मेंस औसत है।

**बैटरी :** एम8 में 5520 एमएएच की बैटरी है। दिनभर में छह से सात घंटे मीडिया कंटेंट, गेमिंग आदि के लिए फोन का प्रयोग करते हैं तो भी बैटरी शेष रहती है। इसमें 45 वाट फास्ट चार्जर है, जिससे फोन लगभग एक घंटे में फुल चार्ज हो जाता है।

**कीमत :** पोको एम8 की शुरुआती कीमत 18,999 रुपये है।

इन दिनों

# तकनीकें जो इस साल बदल देंगी जिंदगी

फोटो फ्रीपिक

**कंज्यूमर टेक्नोलाजी में हो रहे इनोवेशन हमारी रोजमर्रा की जिंदगी पर असर डालते हैं। यही कारण है कि टेक ट्रेंड्स पर लोगों की नजर रहती है और नए बदलावों का बेसब्री से इंतजार। नए साल में हमारी जीवन को तकनीक कैसे करेगी प्रभावित, बता रहे हैं ब्रह्मानंद मिश्र...**

बीते कुछ वर्षों से तकनीक के विकास और एआइ की बढ़ती ताकत के चलते इंटरनेट के साथ यूजर्स का संबंध नया रूप ले रहा है। नई जानकारियां प्राप्त करने, तथ्यों का मूल्यांकन करने और परिवर्तन को महसूस करने, यहां तक कि कुछ भी याद रखने के तरीकों में तेजी से बदलाव आ रहा है। एल्गोरिदम की सुविधा और इंसानी आजादी के बीच एक लंबी जद्दोजहद चल रही है। चूंकि, विश्वास ही इनोवेशन की करेंसी है, इसलिए किसी भी तकनीकी नवाचार को स्थापित होने में लंबा समय लगता है। पूर्व में कई सारे तकनीकी नवाचार चर्चा में आए, लेकिन समय के साथ ओझल हो गए। बीते कुछ वर्षों से एआइ सब कुछ बदल देने को तैयार है, पर विश्वास बहाली का उसका संघर्ष अभी भी जारी है।

हालांकि, एआइ का विकास आज उस मुकाम पर है, जहां आने वाले महीनों में मशीनी दिमाग का हम एक विश्वसनीय सहयोगी के रूप में विकसित होते देखेंगे, जो केवल सवालों का जवाब ही नहीं देगा, बल्कि कई सारे कार्यों को आसान बनाने, नया रचने और समस्याओं का समाधान निकालने में भी असरकारक साबित होगा। एआइ की खूबियों के चलते आज कंज्यूमर टेक्नोलाजी में हो रहे बदलाव लोगों में उत्सुकता जगा रहे हैं। स्मार्ट होम, फिटनेस टेक और इलेक्ट्रिक कार जैसे नवाचार हाल के महीनों में दुनियाभर चर्चा में रहे हैं। हालांकि, ये सभी तकनीकें अभी मैच्योर होने की स्टेज में हैं। साल 2026 में कंपनियां गैजेट्स को कितना उपयोगी बना पाएंगी, स्मार्टफोन की स्मार्टनेस किस हद तक बढ़ेगी और किस तरह के नए उपकरण सामने आएंगे, इन सभी पर नजर रहेगी।

### कंप्यूटर से होगी इंसानों की तरह बात

आने वाले दिनों में एक भरोसेमंद सहयोगी के रूप में यूजर एआइ चैटबाट की सेवाएं ले सकेंगे। हालांकि, इस वर्ष एआइ की आवाज की कृत्रिमता दूर होने और सार्वजनिक स्थानों पर कंप्यूटर से बातचीत करने के ट्रेंड की आहट मिलनी शुरू हो जाएगी। चैटजीपीटी और जेमिनी की आवाज को अधिक नेचुरल बनाने के लिए कंपनियां अनेक स्तरों पर काम कर रही हैं। इन खूबियों के चलते कन्वर्सेशनल एआइ से स्वाभाविक जुड़ाव बढ़ेगा। वहीं, एआइ की प्रतिक्रिया से भ्रमित होने और भावनात्मक लगाव में फंस कर खुद को ही नुकसान पहुंचाने की प्रवृत्ति भी बढ़ती दिखेगी। ऐसे कई सारे मामले हाल के महीनों में चर्चा में रह चुके हैं। हालांकि, लोग दशकों से सीरी, अलेक्सा और गूगल असिस्टेंट से बात करते रहे हैं, लेकिन इनका प्रयोग म्यूजिक प्ले करने और मौसम का हाल जानने जैसे बेसिक कार्यों तक ही सीमित रहा है। वहीं चैटजीपीटी, जेमिनी और क्लाउड जैसे एडवांस एआइ चैटबाट हेल्थकेयर, फाइनेंस, एजुकेशन, सेल्फ सर्विस, डाटा कलेक्शन, पर्सनलाइजेशन जैसे कई सारे कार्यों में उपयोगी साबित हो सकते हैं, बिल्कुल एक बुद्धिमान सहयोगी की तरह।

### बदलती वेलनेस की दुनिया

जीवनशैली की बढ़ती चुनौतियों को देखते हुए लोगों का वेलनेस टेक की तरफ तेजी से झुकाव बढ़ रहा है। वेलनेस भविष्य की उम्मीद नहीं बल्कि आज की जरूरत है। लोग आहार, फिटनेस, नींद के विज्ञान और भावनात्मक नियंत्रण मामलों में ऐसे तरीकों की तलाश में हैं जो असरदार वादों के बजाय तुरंत राहत दें। पर्सनलाइज्ड हेल्थ कोच, न्यूट्रिशनिस्ट जैसे ट्रेंड अब लोकप्रिय हो रहे हैं। मेडिकली गाइडेड थेरेपी जैसे उपाय अब मेनस्ट्रीम कल्चर में जागरूकता का हिस्सा बन रहे हैं। वियरेबल टेक में एआइ की खूबियों के जुड़ने से हाइपर पर्सनलाइजेशन, प्रो-एक्टिव और प्रेडिक्टिव केयर, हेल्थ डाटा विश्लेषण लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। वियरेबल और स्मार्ट डिवाइसेज एक तरह के एआइ कोच के रूप में आपका सहयोग करने के लिए तैयार हो रही हैं।

### कैसा होगा वियरेबल टेक

करीब दशक भर पहले पारदर्शी डिस्प्ले और कैमरा आदि खूबियों वाले हेडसेट 'गूगल ग्लास' ने सुर्खियां बटोरी थीं। कारण जो भी रहे हों, लेकिन यह आम यूजर्स को आकर्षित करने में पूरी तरह फ्लाप साबित हुआ। स्मार्ट ग्लास का ट्रेंड एक बार फिर चर्चा में है। फोटो लेने, म्यूजिक सुनने जैसी सुविधाओं वाला मेटा रे-बैन ग्लास युवाओं को आकर्षित कर रहा है। इसका बिल्ट-इन डिस्प्ले डाटा और एप्स को दिखाने में सक्षम है। यही कारण है कि एक बार फिर से गूगल और कई अन्य कंपनियां स्मार्ट ग्लासेज को पेश करने की तैयारी में हैं। इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि कंपनियां स्मार्टफोन के इतर अलग-अलग डिवाइसेज में एआइ की खूबियों को आजमा रही हैं, ताकि पर्सनल कंप्यूटिंग को एक नए रूप में पेश किया जा सके। इसके अलावा स्मार्टवाच, फिटनेस बैंड्स, स्मार्टक्लोदिंग, हियरिंग एड्स में भी इस वर्ष खास तरह का नवाचार होता दिखेगा। इसके आगे की राह ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस (बीसीआइ) भी तैयार होती दिख रही है।

### बदल रहा है वेब ब्राउजिंग का तरीका

सर्च इंजन पर कुछ भी जानने का प्रयास करें, तो अब एआइ जेनरेटेड रिप्लाई अवश्य मिलेगी। इसे डिस्केल करने का कोई आप्शन नहीं है। नए ब्राउजर कंटेंट की समरी बनाने, जटिल प्रश्नों का हल निकालने, टास्क को मैनेज करने और हाइपर रिलेवेंट सुझाव देने में सक्षम हैं। इंस्टाग्राम व वाट्सएप में भी मेटा का बिल्ट इन एआइ चैटबाट ऐसी ही प्रतिक्रियाएं दे रहा है। माइक्रोसाफ्ट अपने प्रोडक्ट में एआइ को आजमा रहा है। यहां कोपायलट यूजर्स के सवालों पर प्रतिक्रिया देता है। वेब का एआइ-फिकेशन इस वर्ष बढ़ेगा। गूगल जेमिनी में एआइ की सुविधा जोड़ रहा है, तो वहीं वर्ड, एक्सेल आदि में कोपायलट की सुविधाएं मिलने लगी हैं।

### स्मार्टफोन की बढ़ती स्मार्टनेस

नए खासकर फ्लैगशिप स्मार्टफोन में अब आन डिवाइस एआइ का डीप इंटीग्रेशन चर्चा में बना रहेगा। इस वर्ष एप्पल की तरफ से पहला फोल्डेबल फोन पेश किया जा सकता है, तो वहीं सैमसंग, गूगल समेत अनेक कंपनियां फोल्डेबल सेगमेंट में नई खूबियों के साथ बाजार में उतरेंगी। हालांकि, फोल्डेबल फोन बहुत महंगा है और इसके ड्यूरेबल होने की आशंकाएं अभी बरकरार रहने वाली हैं। नए स्मार्टफोन में प्रोएक्टिव असिस्टेंट, पावरफुल फोटोग्राफी फीचर्स, नेक्स्ट जेनरेशन कनेक्टिविटी और मल्टीस्क्रीन सुविधाएं यूजर्स को आने वाले दिनों में अधिक आकर्षित करेंगी।

---

टेक अपडेट

# विंडोज में छुपा कोपायलट का जादू

**पहले लैपटाप सिर्फ टाइपिंग और इंटरनेट चलाने के लिए उपयोग होते थे, लेकिन अब यह एक पावरफुल मल्टीटास्किंग मशीन बन चुके हैं। अलग-अलग कार्यों में इसे कैसे बना सकते हैं उपयोगी, आइए जानें...**

आज का दौर पूरी तरह डिजिटल हो चुका है। पढ़ाई, नौकरी, बिजनेस, कंटेंट क्रिएशन, गेमिंग और आनलाइन मीटिंग- हर जगह लैपटाप जरूरी हो गया है। नए लैपटाप में ऐसे फीचर आ गए हैं, जो काम को तेज, सुरक्षित और ज्यादा स्मार्ट बनाते हैं। माइक्रोसाफ्ट का एआइ प्लेटफार्म है- कोपायलट। यह विंडोज, मैक, वेब और मोबाइल एप के लिए उपलब्ध है।

**कोपायलट क्या कर सकता है :** माइक्रोसाफ्ट का कोपायलट ईमेल, रिपोर्ट, स्टोरी और यहां तक कि कोड भी बना सकता है। यह अपलोड की गई इमेज, पीडीएफ, टेक्स्ट फाइल और माइक्रोसाफ्ट आफिस डाक्यूमेंट को समझ और विश्लेषित कर सकता है। कोपायलट का इमेज क्रिएटर आपके टेक्स्ट के आधार पर लोगो, ड्राइंग, फोटो या दूसरी इमेज तैयार कर सकता है। कोपायलट विजन आपके पीसी या मोबाइल कैमरे से दिख रही चीजों को देखकर सवालों के जवाब भी दे सकता है।

इसका बेसिक वर्जन फ्री है। माइक्रोसाफ्ट 365 पर्सनल, फैमिली और प्रीमियम तीनों में कोपायलट अलग-अलग एप्स के साथ जुड़ा हुआ मिलता है। आप वर्ड, एक्सेल, पावरप्वाइंट, वननोट और आउटलुक में इसकी मदद ले सकते हैं।

**माइक्रोसाफ्ट कोपायलट कैसे ओपन करें :** आप विंडोज 11 और विंडोज 10 में सीधे कोपायलट ओपन कर सकते हैं। बस टास्कबार में कोपायलट आइकन पर क्लिक करना होता है और यह एक फ्लोटिंग विंडो में खुल जाएगा। वहीं मैकओएस के लिए भी कोपायलट का अलग एप है। आप किसी भी ब्राउजर में इसे चला सकते हैं, लेकिन कोपायलट एज में ऊपर दायीं तरफ कोपायलट आइकन पर क्लिक करने पर यह साइडबार में खुल जाता है। आइओएस या एंड्रायड के लिए एप इंस्टाल करके मोबाइल पर भी कोपायलट चला सकते हैं।

**अपना चुनें मोड:** कोपायलट में कई तरह के मोड मिलते हैं। वेब, डेस्कटाप और मोबाइल में ये मोड थोड़े अलग दिख सकते हैं, लेकिन आम तौर पर इनमें स्मार्ट, स्मार्ट प्लस, क्विक रिस्पांस, थिंक डीपर, डीप रिसर्च, स्टडी एंड लर्न और सर्च शामिल हैं। स्मार्ट (डिफाल्ट मोड) के पास बने डाउन एरो पर क्लिक करें और अपनी पसंद का मोड चुन लें। अगर आपको बहुत डिटेल में जवाब चाहिए तो थिंक डीपर या डीप रिसर्च चुन सकते हैं।

**अपलोड फाइल का विश्लेषण:** आप कोपायलट से अपलोड की गई फाइल का विश्लेषण करवा सकते हैं और उससे जुड़े सवाल पूछ सकते हैं। यह फीचर जेपीजी, पीएनजी, वेबपी इमेज, पीडीएफ, माइक्रोसाफ्ट आफिस डाक्यूमेंट, एचटीएमएल फाइल और टेक्स्ट फाइल को सपोर्ट करता है। कोपायलट वेबसाइट या डेस्कटाप एप में प्लस (+) आइकन पर क्लिक करें, ऐड इमेज या फाइल्स चुनें और अपनी फाइल अपलोड करें।

**इमेज बनाएं और एडिट करें:** कोपायलट से आप आसानी से इमेज बनवा सकते हैं। प्लस आइकन पर क्लिक करें और जेनरेट इमेज चुनें। अगर उस इमेज में कुछ बदलाव या नया एलिमेंट जोड़ना हो, तो वही बात दोबारा लिख दें।

**अपनी प्राइवेसी कंट्रोल करें :** कोपायलट आपका डाटा सेव करता है ताकि बातचीत को पर्सनल बना सके। अगर आप ऐसा नहीं चाहते हैं, तो एप की सेटिंग्स में जाकर प्राइवेसी आप्शन ओपन करें। वहां माडल ट्रेनिंग आन टेक्स्ट और माडल ट्रेनिंग आन वायस को बंद कर दें। आप चाहें तो पर्सनलाइजेशन, मेमोरी और एड पर्सनलाइजेशन भी बंद कर सकते हैं। अगर आपने पहले कोई पर्सनल जानकारी दी है, तो उसे भी डिलीट कर सकते हैं।

**पाडकास्ट जेनरेट करें:** आप किसी भी विषय पर कोपायलट से कह सकते हैं कि वह दो एआइ होस्ट के साथ पाडकास्ट तैयार करे। इसे आप कभी भी, कहीं भी सुन सकते हैं। इसके लिए प्लस आइकन पर क्लिक करें, क्रिएट ए पाडकास्ट चुनें, फिर सब्जेक्ट लिखें और सबमिट करें।

**खुद के डाटा के साथ काम करें :** आप इसे वनड्राइव, आउटलुक, गूगल कैलेंडर, जीमेल, गूगल ड्राइव और गूगल कांटैक्ट्स जैसी सर्विस से जोड़ सकते हैं। इसके बाद ईमेल, अपाइंटमेंट, कांटैक्ट या डाक्यूमेंट के बारे में सवाल पूछ सकते हैं।

**अपनी आवाज में बातचीत:** स्क्रीन के नीचे बने माइक्रोफोन आइकन पर टैप करें। कोपायलट आपको नाम से बुलाएगा। अब आप बोलकर सवाल पूछ सकते हैं और वह आवाज में ही जवाब देगा। बातचीत खत्म होने पर एक्स बटन दबाएं।

**कोपायलट विजन :** डेस्कटाप पर किसी फाइल, एप या वेबपेज को ओपन करें, कोपायलट एप ओपन करें, चश्मे वाले आइकन पर क्लिक करें और शेयर बटन से उस स्क्रीन को चुनें। अब आप उस कंटेंट से जुड़े सवाल पूछ सकते हैं। कोपायलट आवाज में बताना शुरू कर देगा।

**माइक्रोसाफ्ट एज में कोपायलट:** एज ब्राउजर में कोपायलट साइडबार में खुलता है। यह आपके सामने खुले वेब पेज को देखकर उसका सार बता सकता है या उससे जुड़े सवालों के जवाब दे सकता है।

**माइक्रोसाफ्ट 365 में कोपायलट:** अगर आपके पास माइक्रोसाफ्ट 365 पर्सनल, फैमिली और प्रीमियम सब्सक्रिप्शन है, तो आप वर्ड, एक्सेल, पावरप्वाइंट और आउटलुक में कोपायलट का उपयोग कर सकते हैं। वर्ड में डाक्यूमेंट लिखने और सुधारने के लिए, एक्सेल में डाटा और फार्मूला समझने के लिए, पावरप्वाइंट में प्रेजेंटेशन बनाने के लिए और आउटलुक में ईमेल लिखने के लिए कोपायलट काफी मददगार है।

संतोष आनंद

---

# मनोरंजन

## तिल गुड़ सिर्फ स्वाद नहीं, जीवन में मिठास की एक भावना है: संदीपा धर

@iamsandeepadhar

**मकर संक्रांति** का पर्व हर किसी के लिए अलग-अलग मायनों में खास होता है। दबंग 2 और हीरोपंती फिल्मों की अभिनेत्री संदीपा धर इसे नई ऊर्जा के साथ नए शुरुआत का त्योहार मानती हैं। इस पर्व को लेकर वह कहती हैं, 'मुझे मकर संक्रांति बहुत सादगी से अपने लोगों के साथ मनाना अच्छा लगता है। घर का माहौल, धूप, हंसी-मजाक और थोड़ा सा ठहराव, बस यही मेरा तरीका है। इस बार भी ऐसे ही मनाऊंगी। कभी-कभी सादगी ही सबसे बड़ी लग्जरी होती है। यह त्योहार अलग-अलग जगहों पर अलग रंगों में मनाया जाता है, लेकिन मेरे लिए इसका असली मतलब है पुरानी ऊर्जा को छोड़कर नई शुरुआत का स्वागत करना। इस दिन मीठा खाने और पतंग उड़ाने दोनों का ही अपना मजा है। हालांकि, अगर चुनना पड़े तो मुझे इस त्योहार पर बनने वाले मिष्ठान पसंद हैं। तिल-गुड़ सिर्फ स्वाद नहीं, एक भावना है कि जिंदगी में मिठास बनी रहे, फिर परिस्थितियां कैसी भी हों।'

## अर्जुन अब भी मेरे जीवन का अहम हिस्सा हैं: मलाइका

@malaikaaroraofficial

रिश्ता भले ही टूट जाए, लेकिन कुछ अहसास हमेशा दिल में रह जाते हैं। माडल और डांसर मलाइका अरोड़ा और अभिनेता अर्जुन कपूर ने भले ही अपने प्यार के रास्ते पिछले साल अलग कर लिए हों, लेकिन अब भी मलाइका उन्हें जीवन का अहम हिस्सा मानती हैं। मलाइका ने अर्जुन से ब्रेकअप और नए शख्स के साथ बनी उनकी लिंकअप की खबरों पर खुलकर बात की।

**समय के साथ भर जाते हैं जख्म:** अर्जुन से ब्रेकअप को लेकर मलाइका कहती हैं, 'ब्रेकअप से मुझे तकलीफ हुई थी। मुझे लगता है कि गुस्सा और तकलीफ जीवन के किसी खास दौर में होती है और ऐसा हर किसी के साथ होता है। लेकिन जैसे-जैसे आप समय के साथ आगे बढ़ते हैं, सुनने में घिसा-पिटा लगेगा, लेकिन यह बात सही है कि समय हर जख्म भर देता है। जो हुआ वह इससे अलग नहीं था। इसके बावजूद, अर्जुन मेरे लिए बहुत अहम हैं और मेरी जिंदगी का एक अहम हिस्सा हैं। मैं अपने अतीत या भविष्य के बारे में ज्यादा बात नहीं करना चाहती, क्योंकि उस पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है। मैं जानती हूं कि मैं जिस व्यवसाय में हूं, वहां इन चीजों के लिए तैयार होना पड़ता है।'

**जब कुछ होगा, दुनिया जानेगी:** अर्जुन से ब्रेकअप के कुछ समय बाद मलाइका का वीडियो एक व्यक्ति के साथ प्रसारित हुआ, जब वह मुंबई में हुए स्पेनिश गायक एनरिक इग्लेसियस के कंसर्ट में नजर आईं। इस पर मलाइका ने कहा, 'लोगों को बातें करना पसंद है। अगर आपको किसी के साथ देखा जाता है, तो वह बड़ा मुद्दा बन जाता है। यकीन मानिए, जब भी मैं बाहर निकली हूं, चाहे वह मेरा कोई पुराना दोस्त हो, कोई शादीशुदा दोस्त हो, कोई पुराना दोस्त हो, मैनेजर हो या कोई भी, मेरा नाम तुरंत उस व्यक्ति के साथ जोड़ दिया जाता है। मैं जिस दिन तैयार रहूंगी (रिश्ते में जाने के लिए), उस दिन दुनिया जानेगी।'

## प्रोडक्शन हाउस के लिए आलिया ने तैयार कर रखी है 10 साल की योजना

@aliaabhatt

**साल 2022** में प्रदर्शित फिल्म डार्लिंग्स से अभिनेत्री आलिया भट्ट भी उन कलाकारों की सूची में शामिल हो गईं, जो अभिनय के साथ-साथ लगातार प्रोड्यूसर की भूमिका भी निभा रही हैं। आलिया ने अपने ही प्रोडक्शन में फिल्म जिगरा भी बनाई। प्रोडक्शन के मामले में उनकी योजना काफी लंबी है। अपने प्रोडक्शन हाउस एटर्नल सनशाइन प्रोडक्शंस को लेकर आलिया कहती हैं, 'इस साल काफी दिलचस्प चीजें आने वाली हैं। इस महीने हम कुछ बड़ी घोषणाएं करेंगे। मैं, मेरी बहन शाहीन भट्ट और मेरी पार्टनर कृष्णा, हम तीनों ने मिलकर अपने प्रोडक्शन की शुरुआत की थी। हमारा सपना आगे बढ़ते रहने का है। मेरी योजना अगले 10 वर्षों में पूरी तरह से फला फूला प्रोडक्शन हाउस बनाने की है। हमने जो भी बनाया है या बना रहे हैं, वो ऐसा कंटेंट है, जो हम स्वयं देखना चाहते हैं। ओरिजनल, मनोरंजक और दिल को छू लेने वाली ऐसी कहानियां जो लोगों के साथ रह जाए।'

मनोरंजन से जुड़ी अन्य खबरों के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

---

## आज का भविष्यफल: 15 जनवरी, 2026 गुरुवार

पं. के.ए. दुबे पद्मेश

आज की ग्रह स्थिति : माघ मास कृष्ण पक्ष द्वादशी का राशिफल।
आज का राहुकाल : दोपहर 01 बजकर 30 मिनट से 03 बजे तक।
आज का दिशाशूल : दक्षिण
आज का पर्व एवं त्योहार : तिल द्वादशी, मकर संक्रांति
विशेष : मंगल मकर राशि में।

**कल 16 जनवरी, 2026 का पंचांग**

कल का दिशाशूल : पश्चिम
कल का पर्व एवं त्योहार : प्रदोष व्रत
कल की भद्रा : रात्रि 10 बजकर 22 मिनट से 17 जनवरी को प्रातः 11 बजकर 13 मिनट तक।
विक्रम संवत 2082 शके 1947 उत्तरायण माघ मास कृष्ण पक्ष त्रयोदशी, तत्पश्चात चतुर्दशी मूल नक्षत्र 30 घंटे 48 मिनट तक, ध्रुव योग 21 घंटे 07 मिनट तक, तत्पश्चात व्याघात योग धनु में चंद्रमा।

**मेष :** व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। रचनात्मक प्रयास फलीभूत होंगे। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी।

**वृष :** सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। रिश्तों में निकटता आएगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

**मिथुन :** स्थानांतरण, विभागी परिवर्तन या व्यावसायिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

**कर्क :** आर्थिक प्रगति होगी। पिता या अधिकारी का सहयोग मिलेगा। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी।

**सिंह :** विरोधी सक्रिय रहेगा। मन अशांत हो सकता है। निजी सुख में व्यवधान आ सकता है।

**कन्या :** आर्थिक सुधार होगा। व्यावसायिक योजना फलीभूत होगी। शासन का सहयोग रहेगा।

**तुला :** रचनात्मक प्रयास फलीभूत होंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद होगी।

**वृश्चिक :** राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।

**धनु :** गृह उपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। संपत्ति में सफलता मिलेगी। रचनात्मक प्रयास सफल होगा।

**मकर :** आर्थिक सफलता मिलेगी। व्यावसायिक योजना फलीभूत होगी। शासनसत्ता का सहयोग रहेगा।

**कुंभ :** स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें। जीविका में प्रयास सार्थक होगा। धन, सम्मान में वृद्धि होगी।

**मीन :** सहयोग लेने में सफलता मिलेगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। प्रयास फलीभूत होगा।

## वर्ग पहेली - 3220

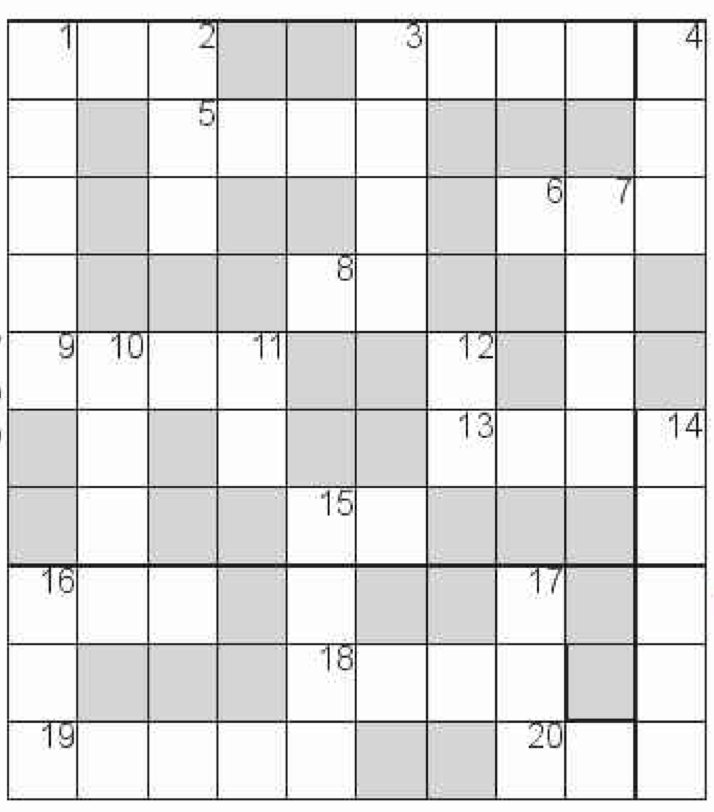

© Bird Features & Writing Agency

**बाएं से दाएं:**
1. जो कठिन न हो, सुगम (3)।
3. पालन-पोषण, देखभाल (5)।
5. तबाही, जलजला, जजमेंट (4)।
6. बहुत बड़ा, विशाल (3)।
8. बड़ी झाड़ी, पौधा (2)।
9. नहीं मानना, इन्कार कर देना (4)।
13. फैलाना (4)।
15. अभी, इस समय (2)।
16. आश्रय, शरण (3)।
18. छुटपन, बाल्यावस्था (4)।
19. तमाशा देखने वाला, मूक दर्शक (5)।
20. मुख ढंकने का जालीदार कपड़ा (3)।

**ऊपर से नीचे:**
1. स्वयं पर अभिमान (5)।
2. लेख आदि की प्रतिलिपि, कापी (3)।
3. शिशिर ऋतु (4)।
4. उचित समय, सही वक्त (3)।
7. खलबली, हलचल (4)।
10. यहां कल-पुर्जे बनते हैं (4)।
11. नृत्य (2)।
12. बद्दुआ, श्राप (2)।
14. असफल (5)।
15. मनमुटाव, आपस में मेल न रहना (4)।
16. पहाड़ (3)।
17. मुख, मुंह (3)।

### कल का हल

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सां[1] | | पा[2] | | | ला[3] | ज | ब | चां[4] | ना |
| च[5] | म | न | | का[6] | ल | | | वां | |
| को | | | दा[7] | म | न | | | क[8] | ला |
| आं | | | | | पा | | स[9] | | |
| च[10] | ह[11] | ल[12] | प | ह[13] | ल | | मा[14] | ली[15] | |
| | क[16] | ड़ा | | द[17] | न | द | ना | द | न[18] |
| | | का | | से | | | | | म |
| र[19] | वि[20] | | | बा[21] | द[22] | ल | | | क |
| | यो | | | ह[23] | र | | प[24] | टा | खा |
| म[25] | ग | ल | वा | र | | | ट | | ना |

## सुडोकू-3220

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | | | | 9 | | 1 | | 8 |
| | | 8 | 1 | | | | 9 | |
| | | 2 | | 3 | 8 | | | 6 |
| 9 | 1 | | 3 | | | 7 | | 5 |
| | 8 | 7 | | | 1 | | 2 | |
| 2 | | | | 4 | 7 | | | 3 |
| | 3 | | 8 | | | | 5 | |
| | | 1 | | | 9 | | 3 | |
| 4 | | 9 | 6 | | 3 | | | 7 |

### कल का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 4 | 9 | 8 | 3 | 7 | 6 | 5 | 2 |
| 6 | 2 | 3 | 4 | 5 | 9 | 7 | 1 | 8 |
| 7 | 8 | 5 | 2 | 6 | 1 | 3 | 4 | 9 |
| 3 | 6 | 8 | 7 | 1 | 5 | 9 | 2 | 4 |
| 4 | 1 | 7 | 6 | 9 | 2 | 8 | 3 | 5 |
| 9 | 5 | 2 | 3 | 8 | 4 | 1 | 6 | 7 |
| 2 | 9 | 6 | 5 | 7 | 3 | 4 | 8 | 1 |
| 8 | 7 | 4 | 1 | 2 | 6 | 5 | 9 | 3 |
| 5 | 3 | 1 | 9 | 4 | 8 | 2 | 7 | 6 |

## चिंतन

# दुनिया में गंभीर संकट पैदा कर रहे ईरान के बिगड़ते हालात

ईरान में बिगड़ते हालात (आर्थिक संकट, सरकार विरोधी प्रदर्शन और हालिया इजराइल-ईरान संघर्ष के बाद की स्थिति) दुनिया को युद्ध की ओर धकेल रहे हैं, क्योंकि इससे क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ रही है, जिससे एक बड़े टकराव की आशंका पैदा हो गई है, खासकर अमेरिका और इजराइल के साथ। इस बीच भारत ने भी ईरान में अपने नागरिकों के लिए एडवाइजरी जारी कर कहा कि जो भी भारतीय नागरिक, चाहे वे छात्र हों, तीर्थयात्री हों, व्यापारी हों या पर्यटक, इस समय ईरान में हैं, उन्हें जल्द से जल्द वहां से निकल जाना चाहिए। सभी भारतीय नागरिकों को सावधानी बरतनी चाहिए। विरोध प्रदर्शन या भीड़भाड़ वाली जगहों से दूर रहें। ईरान की बदलती परिस्थितियों को देखते हुए यह सलाह जारी की गई है। वहीं, विश्लेषकों का कहना है कि ईरान कमजोर हुआ है और आंतरिक असंतोष के बीच सरकार दबाव में है, जबकि बाहरी शक्तियां हस्तक्षेप की फिराक में हैं, जिससे स्थिति और विस्फोटक हो सकती है। किसी भी छोटी सी चूक से क्षेत्र में बड़ा संघर्ष छिड़ सकता है और विश्वभर में गंभीर संकट पैदा हो सकता है। ईरान में अमेरिका के दखल के बाद से हालात और पेचिदा हो रहे हैं। हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर ईरानी प्रदर्शनकारियों से कहा कि मदद रास्ते में है। ईरानी देशभक्तों, विरोध जारी रखिए। हत्यारों और अत्याचारियों के नाम सुरक्षित रखिए। वे इसकी भारी कीमत चुकाएंगे। ट्रंप की इस टिप्पणी के गंभीर मायने हैं। इससे दुनिया में तनाव बढ़ गया है। अमेरिका के करीबी तीन खाड़ी अरब देश सऊदी अरब, कतर और ओमान ईरान पर किसी भी तरह की सैन्य कार्रवाई को रोकने की कोशिश कर रहे हैं। ये डिप्लोमैटिक लेवल पर सक्रिय हैं, क्योंकि ट्रम्प ने ईरान के खिलाफ कार्रवाई की धमकी दी है। हालांकि ट्रंप ने ईरान के खिलाफ मिलिट्री कार्रवाई का प्लान फिलहाल होल्ड पर रख दिया है, लेकिन अमेरिकी सेना को तैयार रहने के लिए कहा गया था, ताकि आदेश मिलते ही तुरंत एक्शन लिया जा सके। अब सवाल यह है कि अमेरिका आखिर चाहता क्या है। क्योंकि ट्रंप दुनिया को अस्थिरता की ओर धकेल रहे हैं। इसके गंभीर परिणाम सामने आएंगे। अगर अमेरिका ईरान पर हमला करता है तो वह कतर से ईरान को निशाना बना सकता है। चूंकि कतर को मध्य पूर्व में अमेरिका का अहम सैन्य साझेदार माना जाता है। यहां स्थित अल उदीद एयर बेस अमेरिका का सबसे बड़ा और रणनीतिक सैन्य अड्डा है, जहां 10 हजार से ज्यादा अमेरिकी सैनिक, आधुनिक फाइटर जेट और ड्रोन तैनात हैं। इसके अलावा पाकिस्तान भी हमले के लिए अमेरिका को अपना एयरबेस देने के लिए तैयार है। इस तरह के हालात डरावने हो सकते हैं। निश्चित रूप से युद्ध जैसी स्थिति के परिणाम दुनिया के लिए गंभीर खतरा होंगे। ईरान में सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के ख़िलाफ़ सड़कों पर उबाल जारी है। एक अधिकारिक रिपोर्ट के मुताबिक ईरान में अब तक करीब 3,000 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं, प्रदर्शनकारियों को आतंकवादी करार देते हुए उन्हें कुचला जा रहा है, लेकिन यह केवल आंतरिक हिंसा नहीं है, बाहर से अमेरिका इस आग में घी डालने का काम लगातार कर रहा है। अब ईरान सरकार जल्द से जल्द आर्थिक सुधार लागू करे और साथ ही धार्मिक कट्टरता कम करके उदार और प्रगतिशील साथियों की मदद ले, उसी से पूंजीवादी गिद्धों को दूर रखा जा सकेगा और बाहरी ताकतों को रोककर देश में शांति व्यवस्था को कायम किया जा सकेगा।

## अंगीठी का दंश

मनोज कुमार अग्रवाल

# घर-घर में साइलेंट किलर जरा सी चूक जीवन पर भारी

इन दिनों देश के अनेक भागों में कड़ाके की ठंड पड़ने से तापमान शून्य से भी नीचे चला गया है। ऐसे में ताप के लिए चंद लोग कमरों में अंगीठी जलाकर सोने के कारण जहरीला धुआं चढ़ने से मृत्यु के शिकार हो रहे हैं। वहीं सैकड़ों लोग बिना वेंटिलेशन वाले बाथरूम में गैस गीजर के इस्तेमाल से आक्सीजन कम होने पर जान गंवा देते हैं। भारत के अलग-अलग हिस्सों से हर कुछ महीनों में एक जैसी खबरें सामने आती हैं। बाथरूम में नहाते समय गैस गीजर से निकली जहरीली गैस, दम घुटना और फिर अचानक बाथरूम में नहाने वाले की मौत हो जाना। ये खबरें चौंकाती जरूर हैं, लेकिन कुछ दिनों बाद भुला दी जाती हैं। यही भूल सबसे खतरनाक है। क्योंकि गैस गीजर कोई अचानक खराब होने वाली मशीन नहीं, बल्कि एक ऐसा खामोश खतरा है, जो जरा सी लापरवाही पर जान ले सकता है। आपको पता हो कि कमरे में लकड़ी या कोयले की अंगीठी जलाकर रखने से 'ऑक्सीजन' की कमी हो जाती है और 'कार्बन मोनोआक्साइड' सीधे दिमाग पर असर डालती है, जो सांस के जरिए पूरे शरीर में फैल जाती है। इससे शरीर में ' हीमोग्लोबिन' कम हो जाने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। इसी तरह बाथरूम में गैस गीजर चलाने पर भी आक्सीजन कम हो जाती है और कई लोग हर साल जान गंवा देते हैं। कुछ दुखद घटनाओं की बानगी देखिए 22 दिसंबर को यूपी के पीलीभीत में शहर कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ले गुरुकुल पुरम में बाथरूम में गैस गीजर का प्रयोग करने के कारण ऑक्सीजन की मात्रा कम होने से डीआरडीए के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी और उनकी पत्नी की मौत हो गई। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ। नहाते समय पत्नी का दम घुटने पर पति उन्हें बचाने के लिए पहुंचा, लेकिन वह भी चपेट में आ गया और दोनों की मौत हो गई। 2 जनवरी को पंजाब के शिवसेना नेता दीपक कंबुज की 22 वर्षीय पुत्री मुनमुन की बाथरूम में दम घुटने से मौत हो गई। 27 दिसम्बर, 2025 को 'छपरा' (बिहार) में ठंड से बचने के लिए एक कमरे में अंगीठी जलाकर सो रहे 3 बच्चों और उनकी नानी की दम घुटने से मृत्यु हो गई तथा परिवार के 3 अन्य सदस्य गंभीर रूप से बीमार हो गए। इस घटना में मारे गए तीनों बच्चे रिश्ते में भाई-बहन थे जो सर्दी की छुट्टियों में ननिहाल आए हुए थे 31 दिसम्बर, 2025 को 'गयाजी' (बिहार) के 'कुर्किहार' गांव में कमरे के भीतर ठंड से बचने के लिए दरवाजा और खिड़की बंद करके अंगीठी जला कर सो रहे 'सुजीत कुमार' और 'अंशु कुमारी' नामक भाई-बहन तथा उनकी नानी 'मीना देवी' की दम घुटने से मौत हो गई। 8 जनवरी, 2026 को 'तरनतारन' (पंजाब) में 'गुरमीत सिंह' तथा उनकी पत्नी 'जसबीर कौर' की ठंड से बचने के लिए जला कर कमरे में रखी लकड़ियों की गैस से दम घुटने के कारण मौत हो गई। 8 जनवरी, 2026 को ही 'पटौदी' (हरियाणा) में ठंड से बचने के लिए कमरे में अंगीठी सुलगा कर सोना एक श्रमिक के परिवार पर आफत बन कर टूटा तथा दम घुटने से एक 11 वर्षीय बच्ची की मृत्यु एवं परिवार के 3 अन्य सदस्य गंभीर रूप से बीमार हो गए। 9 जनवरी, 2026 को 'हजारीबाग' (झारखंड) के 'बानादाग' गांव में कड़ाके की ठंड से बचने के लिए कमरे में अंगीठी जलाकर सो रहे दम्पति की दम घुटने से जान चली गई। 9 जनवरी, 2026 को ही 'कोडरमा' (झारखंड) के 'पूरना नगर' में ठंड से बचने के लिए बंद कमरे में कोयला जलाकर सो रहे पति-पत्नी 'वीरेंद्र शर्मा' और 'कांति देवी' की दम घुटने से मौत हो गई। 9 जनवरी, 2026 को ही 'उत्तर काशी' (उत्तराखंड) के 'चाम्पकोट' में कमरे में जल रही अंगीठी की गैस के कारण एक युवक की मृत्यु हो गई जबकि दूसरा गंभीर रूप से बीमार हो गया। 10 जनवरी, 2026 को 'आरा' (बिहार) के 'छोटकी सिंगरी' गांव में एक कमरे में अपने माता-पिता और बहन के साथ ठंड से बचने के लिए अंगीठी जलाकर सो रहे 12 वर्षीय बच्चे 'बजरंगी सिंह' की मौत हो गई जबकि उसके माता-पिता और बहन गंभीर रूप से बीमार हो गए। और अब 11 जनवरी, 2026 को 'तरनतारन' (पंजाब) में ठंड से बचने के लिए अंगीठी जलाकर सो रहे' अर्शदीप सिंह' (20), उसकी पत्नी' जशनदीप कौर' (19) तथा 2 महीने के मासूम बेटे 'गुरबाज सिंह' की दम घुटने से मौत हो गई और 'अर्शदीप सिंह' का साला 'किशन सिंह' बेहोश हो गया। उक्त सब घटनाओं का सबक यही है कि बंद कमरे में अंगीठी नहीं जलानी चाहिए और यदि जलानी ही पड़े तो सोने से पहले उसे बुझा देना चाहिए ताकि धुआं पैदा न हो। स्थानीय प्रशासन और स्वयं सेवी संस्थाओं को भी चाहिए कि इस बारे लोगों को जागरूक करे, ताकि इस तरह की दर्दनाक और असामयिक मौतों से बचा जा सकें।

( लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

## ऊर्जा नीति

रोहित माहेश्वरी

# भारत में सौर ऊर्जा का तेजी से होता विस्तार

> भारत में सौर ऊर्जा का तेजी से विस्तार होना एक बड़ी सफलता माना जा रहा है, जो वर्ष 2014 में मात्र 3 गीगावाट से बढ़कर वर्ष 2025 में लगभग 129 गीगावाट तक पहुंच गई है। इसमें ग्राउंड-माउंटेड प्रोजेक्ट, रूफटॉप सोलर, हाइब्रिड सिस्टम और ऑफ-ग्रिड इंस्टॉलेशन शामिल हैं। बड़े सौर पार्कों के साथ-साथ लाखों घरों पर लगे रूफटॉप सिस्टम अब बिजली पैदा कर ग्रिड में ऊर्जा पहुंचा रहे हैं। अब भारत को वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता हासिल करने के लिए प्रेरित करती है। भारत की सौर ऊर्जा क्षमता जुलाई 2025 तक 4,000 प्रतिशत बढ़ गई थी और देश की कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 227 गीगावाट तक पहुंच गई थी।

मोदी सरकार के प्रयासों से भारत की सौर ऊर्जा क्षमता में पिछले दशक में उल्लेखनीय रूप से विस्तार हुआ है। विशाल सौर पार्कों से लेकर शहरों, कस्बों और गांवों की नीली छतों तक, हर जगह सोलर पैनल नजर आते हैं। सिर्फ एक दशक पहले, भारत का सौर ऊर्जा परिदृश्य अपनी प्रारंभिक अवस्था में था, जहां सोलर पैनल केवल कुछ छतों और रेगिस्तानों में ही दिखते थे। आज, देश इतिहास रचने की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत आधिकारिक तौर पर जापान को पीछे छोड़कर दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा उत्पादक देश बन गया है। असल में, नवीकरणीय ऊर्जा देश की जलवायु रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

भारत में सौर ऊर्जा का तेजी से विस्तार होना एक बड़ी सफलता माना जा रहा है, जो वर्ष 2014 में मात्र 3 गीगावाट से बढ़कर वर्ष 2025 में लगभग 129 गीगावाट तक पहुंच गई है। इसमें ग्राउंड-माउंटेड प्रोजेक्ट, रूफटॉप सोलर, हाइब्रिड सिस्टम और ऑफ-ग्रिड इंस्टॉलेशन शामिल हैं। बड़े सौर पार्कों के साथ-साथ लाखों घरों पर लगे रूफटॉप सिस्टम अब बिजली पैदा कर ग्रिड में ऊर्जा पहुंचा रहे हैं। दरअसल, भारत उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में स्थित है, जहां कर्क रेखा कई राज्यों से होकर गुजरती है। इससे देश में सौर ऊर्जा उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं। भारतीय महाद्वीप की कुल सौर ऊर्जा क्षमता 748 गीगावाट है। राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में देश की सबसे अधिक सौर ऊर्जा क्षमता है, जो उन्हें भारत के स्वच्छ ऊर्जा विकास के प्रमुख चालक बनाती है। चूंकि सौर ऊर्जा अब भारत के ऊर्जा मिश्रण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है तथा भारत को वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता हासिल करने के लिए प्रेरित करती है। भारत की सौर ऊर्जा क्षमता जुलाई 2025 तक 4,000 प्रतिशत बढ़ गई थी और देश की कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 227 गीगावाट तक पहुंच गई थी। जम्मू-कश्मीर का पल्ली गांव एक उल्लेखनीय उदाहरण बन गया, जो पूरी तरह से सौर ऊर्जा पर चलने के कारण भारत की पहली कार्बन-न्यूट्रल पंचायत के रूप में उभरा। भविष्य की ऊर्जा मांगों को पूरा करने के लिए ऊर्जा भंडारण और नई तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। देश में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु शीर्ष सौर उत्पादक राज्यों में शामिल हैं, जिनमें राजस्थान की सौर क्षमता अत्यधिक है तथा वहां निरंतर विस्तार के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। पीएम सूर्य घर मिशन, नवीकरण ऊर्जा और नेट-जीरो उत्सर्जन की ओर भारत के प्रयासों के मुख्य स्तंभों में से एक है। 13 फरवरी 2024 को मंत्रिमंडल की मंजूरी के साथ शुरू की गई इस योजना का कुल खर्च 75,021 करोड़ रुपये है। इसका मकसद एक करोड़ घरों को रूफटॉप सौर ऊर्जा प्रणाली देना है, जिससे हर महीने 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली मिलेगी। यह योजना नवीकरण ऊर्जा स्रोत अपनाने को बढ़ावा देती है, जिससे भारत के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के वादे को समर्थन मिलता है। दिसंबर 2025 तक, 23.9 लाख घरों में पहले ही 7 जीडब्ल्यू स्वच्छ ऊर्जा की स्थापित क्षमता के साथ रूफटॉप सोलर लगाए जा चुके हैं और पीएम सूर्य घर के तहत 13,464.6 करोड़ रुपये की सब्सिडी जारी की गई है, जिससे यह योजना 1 करोड़ सौर ऊर्जा आधारित घरों के अपने लक्ष्य को पाने की राह पर है। सरकारी आंकड़ों के

मुताबिक सब्सिडी योजना के तहत लगभग 24 लाख घरों में सौर ऊर्जा प्लांट लगे हैं। पीएम-कुसुम योजना किसानों को डीजल के बजाय सौर ऊर्जा का उपयोग करने में सहायता करती है। सरकार बिजली ग्रिड से जुड़े बड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना के लिए 'सोलर पार्कों और अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा परियोजनाओं का विकास' नामक एक योजना चला रही है। गौरतलब है कि वर्ष 2014 के बाद भारत की सोलर पीवी सेल बनाने की क्षमता लगभग 21 गुना बढ़ गई है। मध्य प्रदेश स्थित ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर पार्क, एशिया के सबसे बड़े फ्लोटिंग सोलर पार्कों में से एक है, जिसकी नियोजित क्षमता 600 मेगावाट है। इसकी लागत 330 करोड़ रुपये है, जिसमें केंद्र सरकार 49.85 करोड़ रुपये का सहयोग प्रदान करेगी। सौर ऊर्जा की बढ़त से भारत की कोयले पर निर्भरता कम हो गई है। हालांकि थर्मल और अन्य गैर-नवीकरणीय स्रोतों से अब भी कुल क्षमता का आधे से ज्यादा हासिल होता है। सौर ऊर्जा अब कुल ऊर्जा में 20 फीसदी से अधिक का योगदान करती है। यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि तो है लेकिन इसके साथ एक चुनौती भी है। बेशक यह इस्तेमाल में साफ यानी प्रदूषण मुक्त है, लेकिन अगर सही तरीके से प्रबंधन न किया जाए तो सोलर पैनल पर्यावरण के लिए खतरा बन सकते हैं। सोलर पैनल का ज्यादातर हिस्सा रिसाइकल किया जा सकता है। इनमें कांच, एल्युमिनियम, चांदी और पॉलिमर होते हैं। लेकिन इनमें थोड़ी मात्रा में ही मौजूद सीसा और कैडमियम जैसी जहरीली धातुओं को अगर ठीक तरीके से संभाला न जाए तो ये मिट्टी और पानी को प्रदूषित कर सकती हैं। आमतौर पर सोलर पैनल लगभग 25 साल तक चलते हैं, उसके बाद उन्हें हटाकर फेंक दिया जाता है। फिलहाल भारत में सौर कचरे को रिसाइकल करने के लिए अलग से कोई बजट नहीं है और पुराने पैनलों को प्रोसेस करने के लिए कुछ छोटे-छोटे केंद्र ही हैं। भारत के पास सौर कचरे का कोई आधिकारिक आंकड़ा नहीं है। एक अध्ययन के मुताबिक 2023 तक लगभग 1 लाख टन और 2030 तक 6 लाख टन तक सौर कचरा पैदा हो सकता है। अभी यह मात्रा कम है, लेकिन विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि कचरे का असली बोझ आगे आने वाला है। ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद (सीईईडब्ल्यू) के एक नए अध्ययन के मुताबिक, भारत में 2047 तक 1.1 करोड़ टन से ज़्यादा सौर कचरा पैदा हो सकता है। इसे सुरक्षित रूप से ठिकाने लगाने के लिए लगभग 300 विशिष्ट रीसाइक्लिंग केंद्र चाहिए होंगे और अगले दो दशक में करीब 47.80 करोड़ डॉलर का निवेश करना होगा। संभावित खतरों को देखते हुए भारत में 2022 में सोलर पैनलों को ई-वेस्ट नियमों के तहत लाया गया। इससे अब यह निर्माताओं की जिम्मेदारी है कि पैनलों की उम्र पूरी होने पर वे (निर्माता) उन्हें इकट्ठा करें, स्टोर करें, तोड़ें और रिसाइकल करें। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत की सौर ऊर्जा की यात्रा इस बात का उदाहरण है कि कैसे लक्षित नीति, प्रौद्योगिकी नवाचार और रणनीतिक सहयोग किसी देश के ऊर्जा परिदृश्य को बदल सकते हैं। असल में सौर ऊर्जा न केवल भारत के नवीकरण ऊर्जा मिश्रण की रीढ़ बन गई है, बल्कि सतत आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा और क्लाइमेट लीडरशिप के लिए अहम कारक है। अंतरराष्ट्रीय सौर अलायंस और ओएसओडब्ल्यूओजी जैसी पहलों के जरिए वैश्विक भागीदारी के साथ बड़े पैमाने पर योजनाओं पर अमल के साथ, भारत यह दिखा रहा है कि सौर ऊर्जा एक घरेलू समाधान और वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा प्रगति का जरिया, दोनों हो सकती है। जैसे-जैसे भारत अपनी सौर ऊर्जा क्षमता बढ़ा रहा है, नवाचार को बढ़ावा दे रहा है और सबको साथ लेकर चलने वाली पहुंच मुमकिन बना रहा है, यह एक मजबूत, निम्न-कार्बन वाले भविष्य की ओर एक साफ रास्ता बना रहा है-दुनिया को दिखा रहा है कि सौर ऊर्जा राष्ट्रीय और वैश्विक, दोनों तरह के जलवायु लक्ष्यों को पाने के लिए जरूरी है।

( लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **haribhoomi@gmail.com** पर दे सकते हैं।

# मुंह के मौन से ज़्यादा ज़रूरी 'मन का मौन'

संकलित

दर्शन

हम सभी मनुष्य जन्मते ही अपना मुख चलाना शुरू कर देते हैं, जिसका प्रमाण है जन्म लेते ही शिशु का रोना। बोलना हमारी स्वाभाविक क्रिया है, जो हमें करनी ही पड़ती है। यह बात और है कि कभी-कभी बाहर के शोर में हम इतने खो जाते हैं कि ईश्वर का स्वर हमें सुनाई ही नहीं पड़ता। इसीलिए ही महापुरुषों से हमें एक उत्तम राय मिलती है कि सप्ताह में या माह में एक दिन अवश्य मौन रहें, परंतु हम मुख को तो बंद कर लेते हैं, परंतु हमारे मन का बोलना बंद नहीं हो पाता। इसलिए ही तो अधिकतर डाक्टर सभी मरीजों को कहते हैं कि 'अपने मन को ज्यादा नहीं चलाओ।' अर्थात 'मन का मौन' करो। कहते हैं कि बिना हड्डी की जीभ जब बोलने लगती है, तो कइयों की हड्डियां तोड़ देती है। इसीलिए तो हमें यह बचपन से सिखाया जाता है कि पहले सोचो फिर बोलो, क्योंकि जैसे कमान से निकला हुआ तीर वापस नहीं आता, ठीक उसी तरह मुख से निकला हुआ वचन भी वापस नहीं लिया जा सकता। इसका सबसे श्रेष्ठ उदहारण है महाभारत की कथा, जिससे हमें यह सीख मिलती है कि कैसे एक जुबान के फिसलने से संकटकाल का निर्माण हो गया। इसीलिए 'कम बोलें-धीरे बोलें-मीठा बोलें।' हम जब भी कुछ बोलें तो हमारे वचन दूसरों के लिए सुखदायी हों, न कि कांटा चुभाने वाले दुखदायी। संसार में ऐसे अनेक लोग हैं जिन्होंने कटु वचन बोलने के संस्कार के कारण अपने संबंधों में खटास पैदा कर ली है। इसलिए हमें सदैव सही समय और सही जगह पर सही शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

# अर्जुन को विद्या पर था घमंड, शिवजी ने तोड़ा था

संकलित

प्रेरणा

महाभारत का प्रसंग है। कोरव और पांडवों का युद्ध तय हो गया था। दोनों ही पक्ष युद्ध की तैयारियां कर रहे थे। उस समय अर्जुन ने एक पर्वत पर देवराज इंद्र से दिव्यास्त्र पाने के लिए तप किया। देवराज इंद्र प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि मुझसे दिव्यास्त्र लेने से पहले तुम्हें शिव जी को प्रसन्न करना होगा। इंद्र देव की बात मानकर अर्जुन ने शिव जी को प्रसन्न करने तप शुरू कर दिया। जिस जगह अर्जुन तप कर रहे थे, वहां एक दिन एक जंगली सूअर आ गया। सूअर एक मायावी दैत्य था। अर्जुन ने जैसे ही जंगली सूअर को देखा, उन्होंने अपने धनुष पर बाण चढ़ा लिया। तभी वहां किरात वनवासी पहुंच गया। किरात वनवासी कोई और नहीं, बल्कि शिवजी ही थे, जो वेष बदलकर आए थे। वनवासी ने अर्जुन को बाण चलाने से रोक दिया और कहा कि ये मेरा शिकार है। ये बात सुनने के बाद भी अर्जुन ने तीर सूअर की ओर छोड़ दिया। वनवासी ने भी उसी समय बाण छोड़ दिया। अर्जुन और वनवासी के बाण एक साथ उस सूअर को लगे। सूअर तो मर गया, लेकिन इन दोनों के बीच विवाद होने लगा। ये विवाद युद्ध तक पहुंच गया। युद्ध के बीच में वनवासी का एक बाण अर्जुन को लग गया। इसके बाद अर्जुन ने कुछ देर के लिए युद्ध रोका और मिट्टी का एक शिवलिंग पूजा की। पूजा में जो माला अर्जुन ने शिवलिंग पर चढ़ाई थी, वह उस वनवासी के गले में दिखाई देने लगी। ये देखकर अर्जुन समझ गए कि ये स्वयं शिव जी ही हैं।

## अंतर्मन

## आज की पाती

### मकर संक्रांति और संस्कृति

मकर संक्रांति का पर्व भारतीय संस्कृति में केवल एक तिथि नहीं, बल्कि ऋतु परिवर्तन, सामाजिक सहभागिता और लोकजीवन की जीवंत अभिव्यक्ति है। यह वह समय है जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर अग्रसर होता है और प्रकृति के साथ-साथ मानव जीवन में भी नई ऊर्जा का संचार होता है। इस पर्व से जुड़ी पतंगबाज़ी की परंपरा सदियों से चली आ रही है, जिसने समय के साथ स्वयं को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य संबंधी आयामों को भी अपने भीतर समाहित किया है। आज पतंग उड़ाना सिर्फ छतों पर खड़े होकर डोर खींचने का खेल नहीं, बल्कि सामूहिक उत्सव, मानसिक प्रसन्नता और शारीरिक सक्रियता का प्रतीक बन चुका है।

*-गिरीश देवांगन, दुर्ग*

## ट्रेंड

### मकर संक्रांति व पोंगल की बधाई

पोंगल का त्योहार हमें प्रकृति, परिवार और समाज के बीच एक अच्छा संतुलन बनाए रखने का महत्व सिखाता है। जमीन और सूरज के प्रति हमारी कृतज्ञता दिखाता है। मकर संक्रांति और पोंगल कि देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

### देशवासियों के कल्याण की कामना

स्वसंस्कृति व स्वधर्म की रक्षा के लिए सरबंस दानी गुरु गोबिंद सिंह जी ने त्याग व बलिदान के जो आदर्श स्थापित किए थे, वे हर देशवासी के लिए आज भी प्रेरणास्रोत हैं। आज अहमदाबाद के थलतेज में गुरुद्वारा गोबिंद धाम में मत्था टेक कर देशवासियों के कल्याण की कामना की।

-अमित शाह, गृह मंत्री

### वेटरन्स को उचित सम्मान

सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद जीवन का एक नया अध्याय शुरू होता है। सरकार का प्रयास है कि यह अध्याय गरिमा और आत्मनिर्भरता से परिपूर्ण हो। अपने वेटरन्स के साथ-साथ हम उन सैनिकों को भी उचित सम्मान दे रहे है, जिन्होंने राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया है।

-राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

### तमिल संस्कृति पर हमला

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की ओर से 'जना नायकन' को रोकने की कोशिश तमिल संस्कृति पर हमला है। मिस्टर मोदी, आप कभी भी तमिल लोगों की आवाज को दबाने में सफल नहीं होंगे। भारत लोकतांत्रिक देश है व लोकतंत्र का मतलब है कि हर नागरिक की आवाज सुनी जाए।

-राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद

## करंट अफेयर

# मेरी किताब लोगों को जुड़ने करेगी प्रेरित : पद्मा लक्ष्मी

भारतीय-अमेरिकी टेलीविजन हस्ती और पाक कला विशेषज्ञ पद्मा लक्ष्मी ने कहा कि अमेरिका में मौजूदा वक्त 'अंधकारमय' है और साथ ही उन्होंने उम्मीद जताई कि उनकी नयी किताब ऐसे समय में अलग-अलग समुदायों के लोगों को एक-दूसरे के प्रति जिज्ञासा जगाने, संवाद करने और जुड़ने के लिए प्रेरित करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि यह दौर शायद और भी 'अंधकारमय हो जाएगा', फिर अंत में रोशनी की किरण दिखाई देगी। पाक कला पर लक्ष्मी की नवीनतम पुस्तक 'पद्माज़ ऑल अमेरिकन : टेल्स, ट्रेवल्स, एंड रेसिपीज़ फ्रॉम टेस्ट द नेशन एंड बियॉन्ड' अमेरिका की समृद्ध पाक कला और प्रवासी विविधता का संग्रह है। अमेरिका और दुनिया के अन्य हिस्सों में प्रवासियों के विरोध की बढ़ती भावना के समय में, लक्ष्मी ने आशा व्यक्त की है कि उनकी नयी पुस्तक लोगों में अन्य समुदायों के प्रति जिज्ञासा जगाएगी और उन्हें अन्य संस्कृतियों और देशवासियों से जुड़ने तथा संपर्क स्थापित करने में सक्षम बनाएगी। लक्ष्मी ने पिछले महीने यहां 'एशिया सोसाइटी' में 'द कल्चर ट्री' के साथ साझेदारी में आयोजित एक वार्ता के दौरान कहा, 'हमारा देश इस समय एक बहुत ही अंधकारमय दौर से गुजर रहा है और मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि प्रकाश वापस आने से पहले शायद यह और भी अंधकारमय होगा।'

## ऑफ बीट

# प्लास्टिक कप से निकल सकते हैं माइक्रोप्लास्टिक के कण

एक नए अध्ययन में दावा किया गया है कि प्लास्टिक या प्लास्टिक-लाइनिंग वाले कॉफी कप के गर्म पेय के संपर्क में आने पर बड़ी संख्या में माइक्रोप्लास्टिक कण निकल सकते हैं, जो सीधे पेय में मिल जाते हैं। शोध के अनुसार, तापमान माइक्रोप्लास्टिक के उत्सर्जन का सबसे अहम कारण है और कप की सामग्री इसमें निर्णायक भूमिका निभाती है। जैसे-जैसे पेय का तापमान बढ़ता है, प्लास्टिक से सूक्ष्म कणों के निकलने की दर भी बढ़ जाती है। अध्ययन में बताया गया है कि ऑस्ट्रेलिया में हर साल लगभग 1.45 अरब सिंगल-यूज हॉट बेवरेज कप इस्तेमाल किए जाते हैं, जबकि वैश्विक स्तर पर यह संख्या करीब 500 अरब प्रतिवर्ष है। यह संख्या अधिक भी हो सकती है। इतने बड़े पैमाने पर उपयोग के कारण संभावित स्वास्थ्य जोखिम भी व्यापक हो सकते हैं। शोधकर्ताओं ने पहले 30 अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें पॉलीएथिलीन और पॉलीप्रोपाइलीन जैसे सामान्य प्लास्टिक के व्यवहार को परखा गया। इसमें पाया गया कि गर्म तरल के संपर्क में माइक्रोप्लास्टिक का उत्सर्जन कुछ सौ कणों से लेकर लाखों कण प्रति लीटर तक हो सकता है। वहीं, पेय को कप में कितनी देर तक रखा गया, यह उतना महत्वपूर्ण कारक नहीं पाया गया जितना उसका तापमान महत्वपूर्ण होता है।

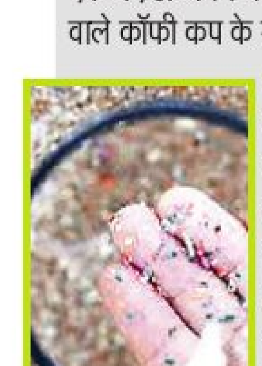

## अपने विचार

**हरिभूमि कार्यालय**

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

# इसे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और सद्भाव का प्रतीक बताया

## दिल्ली में पोंगल उत्सव में उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन और भाजपा अध्यक्ष नड्डा हुए शामिल

नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नबीन, वीरेंद्र सचदेवा, मनोज तिवारी और अन्य लोग भी पहुंचे

केंद्रीय राज्य मंत्री मुरुगन के आवास पर था कार्यक्रम

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

पोंगल पर केंद्रीय राज्य मंत्री एल. मुरुगन के दिल्ली स्थित आवास पर कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन समेत भाजपा के कई बड़े नेताओं ने हिस्सा लिया। इसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन भी शामिल हुए। उपराष्ट्रपति और नबीन ने पोंगल को भारत की सांस्कृतिक विरासत, कृतज्ञता, एकजुटता और समृद्धि का प्रतीक बताते हुए सभी को त्योहार की शुभकामनाएं दीं। नबीन ने कहा कि मैं नई दिल्ली में केंद्रीय राज्य मंत्री एल. मुरुगन की ओर से आयोजित पोंगल समारोह में शामिल हुआ।

पोंगल के कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन भी शामिल हुए।

### प्रकृति का ख्याल रखूंगीः बांसुरी

भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने सभी को पोंगल पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मुरुगन के आवास परकार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी आए। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि पोंगल अन्नदाता की मेहनत, धरती माता और भगवान सूर्य की कृपा का पर्व है। देश के युवाओं को भी संदेश दिया कि हम बढ़-चढ़कर प्रकृति का ख्याल रखें। इसी मूलमंत्र को मैं आत्मसात करके यहां से निकली हूं।

### पोंगल मूल रूप से तमिलों का त्योहारः नागेंद्रन

तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष नैनार नागेंद्रन ने कहा कि पोंगल तमिल लोगों का त्योहार है। यह तमिल लोगों की कला और संस्कृति का उत्सव है। भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष वनथी श्रीनिवासन ने कहा कि हम बहुत खुश हैं क्योंकि प्रधानमंत्री चौथी बार पोंगल मना रहे हैं। हर पोंगल पर, वह तमिलनाडु के लोगों को शुभकामनाएं देते हैं। हम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' में पक्का विश्वास करते हैं।

अहमदाबाद। यहां उत्तरायण उत्सव के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पतंग उड़ाते हुए।

## खबर संक्षेप

### आदित्य साहू बने झारखंड भाजपा के अध्यक्ष

रांची। आदित्य साहू को भाजपा की झारखंड प्रदेश इकाई का नया अध्यक्ष चुना गया है। केंद्रीय चुनाव पदाधिकारी जुएल ओराम ने उनके निर्वाचन की औपचारिक घोषणा की। ओराम ने भाजपा की राष्ट्रीय परिषद के लिए झारखंड से 21 सदस्यों के निर्वाचन की भी घोषणा की। इनमें कड़िया मुंडा, अर्जुन मुंडा, रघुवर दास आदि हैं।

### चीनी मांझे की चपेट से डॉक्टर की मौत

जौनपुर। जिले में बुधवार को चीनी मांझे की चपेट में आकर एक युवक की मौत हो गई। घटना से मौके पर अफरातफरी मच गई। घटना पंचहटिया स्थित प्रसाद इंटरनेशनल स्कूल के पास हुई। मृतक की पहचान डॉक्टर समीर हासिमी के रूप में हुई है। गर्दन कटने से काफी खून बह रहा था, जिससे मौके पर मौत हो गई।

### भ्रष्टाचार केस में दुबे को लोकपाल से क्लीनचिट

नई दिल्ली। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के खिलाफ लगे भ्रष्टाचार के आरोपों को एएम खानविलकर की अध्यक्षता वाले लोकपाल ने पूरी तरह खारिज कर दिया है। दुबे को शिकायतकर्ता के खिलाफ कार्रवाई की भी छूट दी है। पूर्व आईपीएस अमिताभ ठाकुर ने दुबे और उनके परिवार के खिलाफ बेहिसाब संपत्ति की शिकायत की थी।

### एयरलाइन ने किफायती सेवा का आफर दिया

नई दिल्ली। देश की दो बड़ी एयरलाइन कंपनी नए साल में यात्रियों के लिए ऑफर दिए हैं। यात्रियों को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय फ्लाइट्स पर किफायती किराए के साथ कई जरूरी सेवाओं पर आकर्षक छूट मिल रही है इंडिगो की सेल 13 जनवरी से 16 जनवरी 2026 तक टिकट बुकिंग के लिए खुली रहेगी।

## पश्चिम बंगाल में ईडी की छापेमारी से जुड़े विवाद पर सुनवाई

# कलकत्ता हाईकोर्ट से लगा ममता सरकार को झटका, अदालत ने उनकी याचिका खारिज की

एजेंसी ▶▶ कोलकाता

पश्चिम बंगाल में ईडी की छापेमारी से जुड़े विवाद पर कलकत्ता हाईकोर्ट में सुनवाई की गई। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और पश्चिम बंगाल की सत्ताधारी टीएमसी ने अलग-अलग याचिकाएं दायर की हैं। ऐसे में बुधवार को सुनवाई के दौरान कलकत्ता हाई कोर्ट ने टीएमसी की याचिका को खारिज कर दिया है। अदालत ने ईडी के इस बयान को रिकॉर्ड किया कि उसने 8 जनवरी को फर्म के डायरेक्टर प्रतीक जैन के घर और ऑफिस से कुछ भी जब्त नहीं किया था। ईडी की ओर से पेश हुए एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू कहा कि एजेंसी ने जो कुछ भी अपने कब्जे में लिया था, उसे सीएम ममता ले गईं। इससे पहले ईडी ने हाई कोर्ट को बताया कि पिछले हफ्ते राजनीतिक परामर्श फर्म के डायरेक्टर जैन के घर और ऑफिस पर हुई तलाशी के सिलसिले में दायर याचिकाओं को टाल दिया जाए। वहीं टीएमसी के वकील मेनका गुरुस्वामी ने कहा कि पार्टी सिर्फ अपने डेटा की सुरक्षा चाहती है।

टीएमसी को डेटा सुरक्षा चाहिए

### ईडी ने कहा- कुछ भी जब्त नहीं किया

कलकत्ता उच्च न्यायालय

### ईडी का दावाः अदालतों ने इसे संज्ञेय अपराध माना था

9 जनवरी को ईडी ने दावा किया है कि इस घटना में राज्य के सर्वोच्च राजनीतिक नेतृत्व की सीधी भागीदारी थी और पुलिस बल का दुरुपयोग किया गया। एजेंसी ने आग्रह किया है कि वह सीबीआई को एफआईआर दर्ज करने और मुख्यमंत्री सहित सभी संलिप्त व्यक्तियों की भूमिका की जांच करने का निर्देश दे। सीबीआई की जांच जरूरी है, क्योंकि कलकत्ता हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट दोनों ने लगातार यह माना है कि जहां राज्य में ऊंचे और शक्तिशाली लोग संज्ञेय अपराधों को करने में शामिल होते हैं, वहां जांच सीबीआई को ट्रांसफर कर दी जानी चाहिए। ईडी ने जबरदस्ती ले गए सभी डिजिटल उपकरणों, इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड, स्टोरेज मीडिया और दस्तावेजों को तत्काल जब्त करने, सील करने, की मांग की थी।

### टीएमसी ने भी दायर की थी याचिका

इस मामले को लेकर टीएमसी ने आई पैक पर ईडी की छापेमारी के खिलाफ कलकत्ता हाई कोर्ट में याचिका दायर की है। टीएमसी बंगाल में एसआईआर के खिलाफ आवाज उठा रही है और विरोध कर रही है।

### हाई कोर्ट से बोले एसएसजी राजू

### यहां आसमां नहीं फटने वाला फिलहाल रोक दीजिए सुनवाई

सुनवाई के दौरान ईडी ने दावा किया कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता ने आई- पैक के डायरेक्टर प्रतीक जैन के घर पर हो रही छापेमारी के दरमियान नाटकीय तौर पर एंट्री की थी और सरकारी काम में बाधा डाला। ईडी ने आरोप लगाया है कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी रेड वाली जगहों पर गईं और अहम सबूत ले गईं। दूसरी तरफ, ममता की तरफ से दावा किया गया कि ईडी के छापे अवैध थे और जांच एजेंसी ने सारी सीमाएं लांघ दी थीं। इस दौरान टीएमसी ने ईडी द्वारा जब्त किये गये चुनाव संबंधी उसके डाटा की सुरक्षा के लिए अदालत से गुहार लगाई।

### सुनवाई स्थगित करने का अनुरोध

ईडी ने उच्चतम न्यायालय में दायर याचिका का हवाला देते हुए मामले की सुनवाई स्थगित करने का अनुरोध किया। ईडी की तरफ से पेश हुए, राजू ने कोर्ट को बताया कि एजेंसी ने सुप्रीम कोर्ट में दो याचिकाएं दायर की हैं। इसलिए हाई कोर्ट इस मामले की सुनवाई न करे। उन्होंने दलील दी, यह मामला सुप्रीम कोर्ट में आ सकता है। लिहाजा, इस मामले की सुनवाई को टाल दिया जाए। आज सुनवाई नहीं होने से कोई आसमान फटकर नहीं गिरने वाला है।

### आई- पैक की गैरमौजूदगी पर भी उठे सवाल

एएसजी राजू ने आई- पैक की गैरमौजूदगी पर भी सवाल उठाए। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि पॉलिटिकल कंसल्टेंसी फर्म को कोर्ट में पेश होना चाहिए था। उन्होंने कहा कि पूरी याचिका चुनाव से जुड़े तर्कों पर आधारित है, न कि किसी अधिकार के उल्लंघन पर। किसी के घर से किसी का डेटा जब्त किया गया है, उन्हें तो कोर्ट आना चाहिए था। आई -पैक को यहां आना चाहिए था।

## 'आप' सांसद ने की चुनाव आयोग से एसआईआर को लेकर पारदर्शिता की मांग

# यूपी की मतदाता सूची से गायब हुए 4.5 करोड़ मतदाताओं के नाम चुनाव आयोग जवाब देः संजय

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

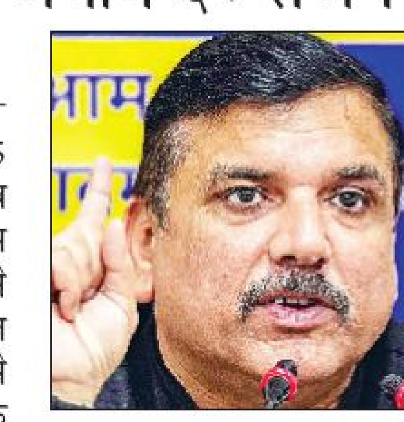

उत्तर प्रदेश की मतदाता सूची में 4.5 करोड़ मतदाताओं के नाम गायब होने का आरोप लगाते हुए आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह ने चुनाव प्रक्रिया पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने चुनाव आयोग से पारदर्शिता और रिकॉर्ड सार्वजनिक करने की मांग की है। संजय सिंह ने बुधवार को आरोप लगाया कि उत्तर प्रदेश में लगभग 4.5 करोड़ मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए हैं, जिससे मतदाता सूची संशोधन प्रक्रिया पर गंभीर सवालों के घेरे में आ गई है।

संजय सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश से 4.5 करोड़ वोट हटा दिए गए। राज्य चुनाव आयोग ने दिसंबर में होने वाले नगर निगम और ग्राम पंचायत चुनावों के लिए मतदाताओं की एक सूची जारी की है, जिसमें कुल 17 करोड़ मतदाता हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने ज्ञानेश कुमार और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ मिलकर विधानसभा चुनावों के लिए एक और सूची जारी की है, जिसमें ग्रामीण और शहरी मतदाताओं को मिलाकर कुल 12 करोड़ 55 लाख मतदाता हैं। ये 4.5 करोड़ मतदाता कहां गायब हो गए?... मैं चुनाव आयोग को पत्र लिखूंगा। उनके पास उन 2 करोड़ 17 लाख लोगों के फॉर्म 10 के रिकॉर्ड जरूर होंगे जिन्हें उन्होंने 'स्थानांतरित' श्रेणी में दिखाया है। उन्हें ये रिकॉर्ड सार्वजनिक करना चाहिए।

सिंह ने की चुनाव आयोग से रिकॉर्ड सार्वजनिक करने की मांग

आम आदमी पार्टी के सांसद ने आरोप लगाया कि बड़ी संख्या में मतदाताओं को स्थानांतरित श्रेणी में दिखाया गया है और उन्होंने चुनाव आयोग से पारदर्शिता की मांग की। उन्होंने कहा कि वे चुनाव आयोग को पत्र लिखकर बूथ स्तरीय अधिकारियों (बीएलओ) द्वारा रखे गए फॉर्म-10 के उन रिकॉर्डों का विवरण मांगेंगे, जिनमें कथित तौर पर स्थानांतरित के रूप में चिह्नित 2 करोड़ 17 लाख मतदाताओं का विवरण होगा। सिंह ने मांग की कि चुनाव आयोग पारदर्शिता सुनिश्चित करने और चुनावी प्रक्रिया में जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए इन रिकॉर्डों को सार्वजनिक करे।

# कांग्रेस ने चीन मुद्दे पर भाजपा के दोहरे रवैये को उजागर किया- भाजपा मुख्यालय में चीन के नेताओं के बीच हुई गुप्त

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

भाजपा मुख्यालय में भाजपा व चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) के नेताओं के बीच हुई गुप्त बैठक के तुरंत बाद चीन द्वारा कश्मीर की शक्सगाम घाटी पर दावा किए जाने को लेकर कांग्रेस ने मंगलवार को भाजपा को कठघरे में खड़ा किया है। चीन मुद्दे पर भाजपा के दोहरे रवैये को उजागर करते हुए कांग्रेस ने कहा कि देश को यह जानने का अधिकार है कि भाजपा और चीन की सत्तारूढ़ पार्टी के बीच बंद कमरों में हुई बैठकों में क्या बातचीत हुई।

कांग्रेस कार्यालय में पत्रकार वार्ता करते हुए पार्टी के मीडिया व पब्लिसिटी विभाग के चेयरमैन पवन खेड़ा ने वीडियो दिखाते हुए तंज कसा कि गिरगिट ने भी भाजपा से रंग बदलना सीख लिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि मोदी सरकार ने चीन के प्रति 'आत्मसमर्पण की नीति' अपनाई है। उन्होंने कहा कि सरकार का दोहरा रवैया और चुप्पी न केवल भारत की विदेश नीति को कमजोर कर रही है, बल्कि राष्ट्रीय हितों से भी गंभीर समझौता कर रही है खेड़ा ने कहा कि सोमवार को भाजपा मुख्यालय में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और भाजपा नेताओं की बैठक हुई और उसके कुछ ही घंटों बाद चीन ने कश्मीर की शक्सगाम घाटी पर अपना दावा ठोक दिया। उन्होंने कहा कि एक तरफ मोदी सरकार द्वारा जनता से चीनी सामान नहीं खरीदने को कहा जाता है, दूसरी तरफ चीनी प्रतिनिधिमंडल के लिए भाजपा मुख्यालय में रेड कारपेट बिछाया जाता है। चीनी कंपनियों को भारत में निवेश, जमीन और ठेके दिए जा रहे हैं।

खेड़ा ने कहा कि भारत में चीनी सामान की बाढ़ आ गई है, लेकिन सरकार इसे रोकने के लिए ठोस कदम नहीं उठा रही। चीन ने रेयर अर्थ और खाद पर अघोषित प्रतिबंध लगाकर भारतीय किसानों को नुकसान पहुंचाया, जिस पर मोदी सरकार ने चुप्पी साधे रखी। मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तो वहां स्कूलों में चीन की भाषा सीखने की पैरवी करते थे। उन्होंने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध में मध्यस्थता करने जैसे दावे अब चीन भी कर रहा है। चीन पैंगोंग त्सो झील के रास्ते से मिलिट्री पुल और ब्रह्मपुत्र नदी के पास डैम बना रहा है। चीन ने कई बार डोकलाम, सिलीगुड़ी कॉरिडोर, शक्सगाम से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक भारत के साथ नापाक हरकत की। लेकिन मोदी सरकार खामोश है। भारत की सीमाओं के पास चीन ढांचे का निर्माण कर रहा है और मोदी सरकार चीनी मजदूरों को वीजा दे रही है। खेड़ा ने याद दिलाया कि गलवान में 20 बहादुर सैनिकों की शहादत के बाद प्रधानमंत्री ने चीन को क्लीन चिट देकर पूरे विश्व में भारत की स्थिति कमजोर की थी। भाजपा-आरएसएस स्पष्ट करें कि सीपीसी के साथ उनकी गुप्त बैठकों का एजेंडा क्या है? क्या बंद दरवाजों की इन बैठकों में चीन के अतिक्रमण पर कोई चर्चा हुई? उन्होंने सवाल किया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन द्वारा पाक को दी गई सैन्य मदद पर भाजपा ने सवाल क्यों नहीं पूछे?


## अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

(धारा 82 सीआरपीसी देखिए)

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **मो. कामरान पुत्र मो. जाकिर पताः टी-257, ईदगाह रोड कुरैश नगर सदर बाजार, दिल्ली ने ई-एफआईआर संख्या 00483/2018 धारा 411 भा.द.स. के तहत** थानाः कश्मीरी गेट, दिल्ली के अधीन दंडनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारंट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त **मो. कामरान** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधान प्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त **मो. कामरान** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा है)। अतः इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **ई-एफआईआर संख्या 00483/2018 धारा 411 भा.द.स. के तहत थाना कश्मीरी गेट, दिल्ली के उक्त मो. कामरान** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **16.02.2026** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
वैभव गर्ग
न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी-11
(केन्द्रीय), कमरा नं.138
तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली

DP/26/N/2026



## उत्तर रेलवे

### प्रथम शुद्धिपत्र निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से उप मुख्य अभियंता/निर्माण, उत्तर रेलवे, शिवाजी ब्रिज, नई दिल्ली दो पैकेट पद्धति ई-निविदा के आधार पर नीचे लिखे हुए कार्य के लिए निविदा आमंत्रित करते हैं।

| | |
|---|---|
| कार्य का नाम व स्थल | उतरी रेलवे के दिल्ली डिवीजन मे TKJ-ANVR रेलवे स्टेशन के बीच तीसरी-चौथी रेलवे लाइन के संबध में, मंडावली चंदर विहार रेलवे स्टेशन पर रेजिडेंशियल टाइप-II क्वार्टर (24 यूनिट) टाइप-III क्वार्टर (04 यूनिट) और टाइप-IV क्वार्टर (01 यूनिट) का निर्माण, 24 टाइप-II क्वार्टर 04 टाइप-III क्वार्टर और 01 टाइप-IV क्वार्टर के लिए फायर फाइटिंग व्यवस्था सड़क कार्य, 120 किलोलीटर क्षमता का ओवर हेड टैंक, 120 किलोलीटर क्षमता का अंडर ग्राउंड टैंक, बाउंड्री वॉल, HL पैसेंजर प्लेटफॉर्म का निर्माण/चौड़ीकरण/विस्तार, तटबंध में मिट्टी भराई का काम, फॉर्मेशन में कटिंग, ब्लैकेटिंग का प्रावधान, नाली का निर्माण, रिटेनिंग वॉल, सबवे, रैंप/सीढ़ी, प्लेटफॉर्म शेल्टर, फेंसिंग, स्टेशन बिल्डिंग, मौजूदा FOB और मौजूदा प्लेटफॉर्म RCC बैक वॉल को तोड़ना, वाटर बूथ और अन्य विविध संबंधित कार्य। |
| कार्य पूरा होने की अवधि | 18 (अठारह) माह |
| कार्य की अनुमानित लागत | रु.3268.15 लाख |
| धरोहर राशि (जो कि ऑनलाइन जमा की जानी है) | रु.17,84,100/- |
| ई-निविदा प्रस्तुत करने और निविदा खुलने की तिथि और समय | निविदा दस्तावेज 14:00 बजे दिनांक 10.01.2026 से 31.01.2026 तक आईआरईपीएस की वेबसाईट अर्थात www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे। |
| निविदा अपलोड करने की अंतिम तिथि/समय | 31.01.2026 को 14:00 बजे तक निविदा कर्ता द्वारा 10.01.2026 से 31.01.2026 तक आईआरईपीएस की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर निविदा दस्तावेज अपलोड की जा सकती है। |
| ई-निविदा खुलने की तिथि एवं समय | 14:00 बजे दिनांक 31.01.2026 को खोली जाएंगी। उपरोक्त कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर भी विस्तृत सूचना देखी जा सकती है। |

सं0 545-ACS-QRTRS-MWC-CSB दिनांक : 14.01.2026 139/2026

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ


## पशु नस्ल पंजीकरण प्रमाणपत्र एवं नस्ल संरक्षण पुरस्कार कार्यक्रम में शामिल हुए

# देशी पशुधन किसानों की समृद्धि एवं कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ः

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने बुधवार को नई दिल्ली स्थित ए. पी. शिंदे ऑडिटोरियम में पशु नस्ल पंजीकरण प्रमाणपत्र एवं नस्ल संरक्षण पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

केंद्रीय मंत्री ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जानवरों की इकोलॉजिकल अहमियत और भारत की देसी जानवरों की नस्लों को बचाने के लिए मिलकर काम करने की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जानवरों के साथ भारत का रिश्ता सिर्फ आर्थिक या न्यूट्रिशन से जुड़ा नहीं है, बल्कि असल में इकोलॉजिकल है। उन्होंने कहा, यह बैलेंस का रिश्ता

है। इस बैलेंस में किसी भी तरह की गड़बड़ी का सीधा असर पर्यावरण और आखिर में, धरती की भलाई पर पड़ता है। उन्होंने देसी नस्लों को बचाने के लिए देश भर में काम कर रहे साइंटिस्ट, इंस्टीट्यूशन और किसान समुदायों की बहुत तारीफ की।

चौहान ने कहा कि उनकी कोशिशें जानवरों को बचाने से कहीं आगे हैं। वे बायोडायवर्सिटी की रक्षा कर रहे हैं, गांवों की रोजी-रोटी को मजबूत कर रहे हैं और सस्टेनेबल खेती के भविष्य को सुरक्षित कर रहे हैं। देसी जानवरों की नस्लों को बचाने के लिए 2019 में शुरू की गई नेशनल पहल का जिक्र करते हुए, मंत्री ने इसे एक अहम और तारीफ़ के काबिल कदम बताया। उन्होंने कहा कि देसी मवेशी, भैंस, मुर्गी और छोटे जुगाली करने वाले जानवर हमारी खेती की इकोनॉमी की रीढ़ हैं। उनका विकास सीधे किसानों की खुशहाली, मजबूती और इनकम सिक्योरिटी से जुड़ा है।

चौहान ने जोर दिया कि इस मिशन को पॉलिसी और कॉन्फ्रेंस से आगे बढ़कर एक जन आंदोलन बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह काम सिर्फ़ पॉलिसी फ्रेमवर्क या कॉन्फ्रेंस प्लेटफॉर्म तक ही सीमित नहीं रह सकता। इसे गांवों, खेतों और किसान परिवारों तक पहुंचना चाहिए और एक सच्चा जन आंदोलन बनना चाहिए। इस कार्यक्रम में देश भर के सीनियर अधिकारियों, साइंटिस्ट्स, रिसर्चर्स, प्रोग्रेसिव किसानों एवं स्टेकहोल्डर्स ने शिरकत की।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप) के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट ने कहा कि विकसित भारत - पशु धन का विज़न लंबे समय तक संरक्षण के साथ-साथ जिम्मेदारी से रिसोर्स का इस्तेमाल करने पर केन्द्रित है। उन्होंने पिछले पंद्रह सालों में किसानों की अहम भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि वे नस्ल संरक्षण की कोशिशों के केंद्र में बने हुए हैं। 2008 से, 242 जानवरों की नस्लें रजिस्टर की गई हैं। 2047 तक विकसित भारत को पाने के लिए, भाकृअनुप का लक्ष्य सभी देसी जानवरों की नस्लों का 100 परसेंट रजिस्ट्रेशन करना है।

कल्पमेधा

*शुभ और अशुभ हमारे मन पर अवलंबित हैं, मन जब स्थिर और शांत होता है, तो शुभ-अशुभ उसे छू भी नहीं पाते हैं।*
– स्वामी विवेकानंद

# सुरक्षा की फिक्र

आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी और अत्यधिक व्यस्तता के बीच आनलाइन सामान पहुंचाने का कारोबार न केवल रोजगार का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत बन गया है, बल्कि यह उपभोक्ताओं के लिए एक बड़े बाजार की शक्ल ले चुका है। खासकर कोविड महामारी के बाद से इसमें जबरदस्त उछाल आया है और अब मांग पर हर तरह के उत्पाद मिनटों में घर पर पहुंच जाते हैं। मगर तत्काल सामान पहुंचाने की होड़ में इस कार्य से जुड़े कर्मियों पर आनलाइन कंपनियों के दबाव और उनकी सुरक्षा को लेकर चिंताएं भी बढ़ी हैं। सामान पहुंचाने के दौरान सड़क हादसों में मौत हो जाने की देश भर में कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं। यही वजह है कि केंद्र सरकार ने अब दस मिनट में सामान पहुंचाने से संबंधित कंपनियों के दावों पर रोक लगाने का आदेश दिया है। सवाल है कि आखिर सरकार को इस मामले में हस्तक्षेप क्यों करना पड़ा? क्या संबंधित कंपनियों की यह जिम्मेदारी नहीं है कि वे अपने कर्मियों की सुरक्षा और बेहतरी की फिक्र करे?

बीते वर्ष के के आखिरी दिन यानी 31 दिसंबर 2025 को घर पर सामान पहुंचाने वाले कर्मियों ने हड़ताल का आह्वान कर अपनी दिक्कतों की तरफ देश, समाज और सरकार का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की थी। कुछ अरसे से आनलाइन बाजार की यह कह कर हिमायत की जा रही है कि इससे रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं और उपभोक्ताओं को भी अपनी पसंद के सामान की खरीदारी का आसान विकल्प मिल गया है। साथ यह भी कहा जाता है कि इस क्षेत्र में काम करने वाले कर्मियों को अपने कार्य की अवधि खुद तय करने की आजादी है। मगर, क्या वास्तव में उन्हें काम करने की आजादी है? निर्धारित समय के भीतर सामान पहुंचाने और प्रतिदिन का लक्ष्य पूरा करने का दबाव कई बार उन्हें मानसिक ही नहीं, बल्कि शारीरिक तकलीफ भी देता है। इस दबाव में सड़क पर तेज रफ्तार में दोपहिया वाहन चलाने से हर समय जान का जोखिम बना रहता है। ऐसे में दस मिनट में सामान पहुंचाने के वादों पर रोक लगाना निहायत जरूरी हो गया था।

नीति आयोग की वर्ष 2022 की एक रपट के अनुसार, वर्ष 2020 में देश भर में आनलाइन मांग पर सामान पहुंचाने वाले कर्मियों की संख्या करीब 77 लाख थी और यह आंकड़ा 2030 तक 2.35 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। इससे यह बात तो स्पष्ट है कि आनलाइन बाजार के कारोबार से रोजगार के नए अवसर पैदा हुए हैं, लेकिन साथ ही संबंधित कंपनियों की प्रतिस्पर्धा में कर्मियों की सुरक्षा और काम के दबाव का संकट भी पैदा हुआ है। कहा जा रहा है कि सरकार के आदेश के बाद आनलाइन कंपनियों ने अपने मंच से दस मिनट में सामान पहुंचाने का दावा हटा लिया है। मगर इस तरह की कोशिशें फिर से किसी दूसरे रूप में न हों, इसके लिए सरकार की ओर से एक निगरानी तंत्र बनाने की जरूरत है। सरकार को संबंधति आनलाइन मंचों के साथ मिलकर यह कोशिश करनी होगी कि श्रमशक्ति का यह हिस्सा सुरक्षित वातारण में विकास और सामाजिक गतिशीलता की सीढ़ी बने और उनके अधिकारों की भी रक्षा हो सके।

# धोखाधड़ी पर लगाम

पिछले कुछ वर्षों में साइबर धोखाधड़ी का जाल इतना व्यापक हो गया है कि कब कौन ठगी का शिकार हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। जिस तेजी से इस तरह के मामले बढ़ रहे हैं, वह गंभीर चिंता का विषय है। सवाल है कि आधुनिक तकनीक के इस दौर में साइबर ठगी पर अंकुश क्यों नहीं लग पा रहा है? जालसाजी में फंसकर लोगों के जीवन भर की जमा पूंजी हाथ से निकल जाती है। 'डिजिटल अरेस्ट' जैसे मामलों में तो पीड़ित को मानसिक यातना भी झेलनी पड़ती है। इस तरह के अपराधों पर लगाम लगाने के प्रयासों के तहत केंद्र सरकार ने गृह मंत्रालय के विशेष सचिव की अगुआई में अंतर-मंत्रालयी समिति बनाई है। साथ ही यह भी कहा है कि 'डिजिटल अरेस्ट' से संबंधित सभी मामलों की जांच अब सीबीआइ करेगी। मगर, सरकार का यह कदम तभी कारगर साबित होगा, जब साइबर धोखेबाजों को किसी वारदात को अंजाम देने से पहले ही रोक दिया जाए।

गौरतलब है कि शीर्ष अदालत ने अपने एक आदेश में 'डिजिटल अरेस्ट' की बढ़ती घटनाओं पर चिंता जताते हुए कहा था कि सरकार को इससे निपटने के लिए कड़े कदम उठाने चाहिए। दरअसल, देश में आनलाइन लेन-देन बढ़ने के साथ ही साइगर ठगी के मामलों में भी बढ़ोतरी हुई है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि आम नागरिक और खासकर बुजुर्ग नई तकनीक और आनलाइन जोखिम से अनजान हैं। जरा सी चूक होने पर लाखों रुपए जालसाजों के हाथ में चले जाते हैं। चिंता की बात यह है कि साइबर धोखाधड़ी के लिए आए दिन नए-नए तरीके अपनाए जा रहे हैं। ऐसे में जरूरी है कि आम लोगों को डिजिटल साक्षरता के जरिए व्यापक स्तर पर जागरूक किया जाए। मसला सिर्फ इस तरह के मामलों की जांच का नहीं है, बल्कि जरूरत इस बात की है कि अपराध होने से पहले ही उसे रोक दिया जाए। जब तक साइबर अपराधियों की धर-पकड़ के लिए मजबूत तंत्र स्थापित नहीं किया जाएगा, तब तक इस ऐसे मामलों पर पूरी तरह रोक लगा पाना संभव नहीं हो पाएगा।

# विविधता का संगम

**काशी-तमिल संगमम का चौथा संस्करण दो दिसंबर, 2025 को आरंभ हुआ। इस बार का विषय बहुत रोचक था- तमिल करकलम् यानी तमिल सीखें। इससे काशी और दूसरी जगहों के लोगों को तमिल भाषा सीखने का अनूठा अवसर मिला।**

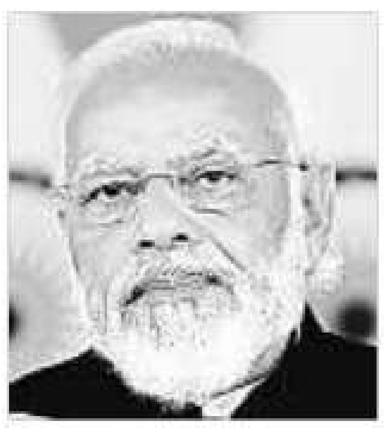

**नरेंद्र मोदी**

कुछ दिन पहले मुझे सोमनाथ की पवित्र भूमि पर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में हिस्सा लेने का सुअवसर मिला। इस पर्व को हम वर्ष 1026 में सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार साल पूरे होने पर मना रहे हैं। इस क्षण का साक्षी बनने के लिए देश के कोने-कोने से लोग सोमनाथ पहुंचे। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतवर्ष के लोग जहां अपने इतिहास और संस्कृति से गहराई से जुड़े हैं, वहीं कभी हार न मानने वाला साहस भी उनके जीवन की बड़ी विशेषता है। यही भावना उन्हें एक साथ जोड़ती भी है। इस कार्यक्रम के दौरान मेरी मुलाकात कुछ ऐसे लोगों से भी हुई, जो इससे पहले सौराष्ट्र-तमिल संगमम के दौरान सोमनाथ आए थे और इससे पहले काशी-तमिल संगमम के समय काशी भी गए थे। ऐसे मंचों को लेकर उनकी सकारात्मक सोच ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इसलिए मैंने तय किया कि इस विषय पर अपने कुछ विचार साझा करूं।

'मन की बात' की एक शृंखला के दौरान मैंने कहा था कि अपने जीवन में तमिल भाषा न सीख पाने का मुझे बहुत दुख है। यह हमारा सौभाग्य है कि बीते कुछ वर्षों से हमारी सरकार तमिल संस्कृति को देश में और लोकप्रिय बनाने में निरंतर जुटी हुई है। यह 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को और सशक्त बनाने वाला है। हमारी संस्कृति में संगम का बहुत महत्त्व है। इस पहलू से भी काशी-तमिल संगमम एक अनूठा प्रयास है। इसमें जहां भारत की विविध परंपराओं के बीच अद्भुत सामंजस्य दिखता है, वहीं यह भी पता चलता है कि कैसे हम एक दूसरे की परंपराओं का सम्मान करते हैं।

काशी तमिल संगमम के आयोजन के लिए काशी सबसे उपयुक्त स्थान कहा जा सकता है। यह वही काशी है, जो अनादि काल से हमारी सभ्यता की धुरी बनी हुई है। यहां हजारों वर्षों से लोग ज्ञान, जीवन के अर्थ और मोक्ष की खोज में आते रहे हैं। काशी का तमिल समाज और संस्कृति से अत्यंत गहरा नाता रहा है। काशी बाबा विश्वनाथ की नगरी है, तो तमिलनाडु में रामेश्वरम तीर्थ है। तमिलनाडु की तेनकासी को दक्षिण की काशी या दक्षिण काशी कहा जाता है। कुमारगुरु स्वामीजी ने अपनी विद्वता और आध्यात्म परंपरा के माध्यम से काशी और तमिलनाडु के बीच एक सशक्त और स्थायी संबंध स्थापित किया था। तमिलनाडु के महान सपूत महाकवि सुब्रमण्यम भारती को भी काशी में बौद्धिक विकास और आध्यात्मिक जागरण का अद्भुत अवसर दिखा। यहीं उनका राष्ट्रवाद और प्रबल हुआ, साथ ही उनकी कविताओं को एक नई धार मिली। यहीं पर स्वतंत्र और अखंड भारत की उनकी संकल्पना को एक स्पष्ट दिशा मिली। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो काशी और तमिलनाडु के बीच गहरे आत्मीय संबंध को दर्शाते हैं।

वर्ष 2022 में वाराणसी की धरती पर काशी-तमिल संगमम की शुरुआत हुई थी। मुझे इसके उद्घाटन समारोह में शामिल होने का सौभाग्य मिला था। तब तमिलनाडु से आए लेखकों, विद्यार्थियों, कलाकारों, विद्वानों, किसानों और अतिथियों ने काशी के साथ-साथ प्रयागराज और अयोध्या के दर्शन भी किए थे। इसके बाद के आयोजनों में इस पहल को और विस्तार दिया गया। इसका

उद्देश्य यह था कि संगमम में समय-समय पर नए विषय जोड़े जाएं, नए और रचनात्मक तरीके अपनाए जाएं और इसमें लोगों की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो। प्रयास यह था कि यह आयोजन अपनी मूल भावना से जुड़े रह कर भी निरंतर आगे बढ़ता रहे। वर्ष 2023 के दूसरे आयोजन में प्रौद्योगिकी का बड़े

> **वर्ष 2022 में वाराणसी की धरती पर काशी-तमिल संगमम की शुरुआत हुई थी। तब तमिलनाडु से आए लेखकों, विद्यार्थियों, कलाकारों, विद्वानों, किसानों और अतिथियों ने काशी के साथ-साथ प्रयागराज और अयोध्या के दर्शन भी किए थे। इसके बाद के आयोजनों में इस पहल को और विस्तार दिया गया। इसका उद्देश्य यह था कि संगमम में समय-समय पर नए विषय जोड़े जाएं, नए और रचनात्मक तरीके अपनाए जाएं और इसमें लोगों की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो। प्रयास यह था कि ये आयोजन अपनी मूल भावना से जुड़े रह कर भी निरंतर आगे बढ़ता रहे।**

पैमाने पर उपयोग किया गया, ताकि यह सुनिश्चित हो कि भाषा इसमें बाधा न बने। इसके तीसरे संस्करण में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर विशेष जोर दिया गया। इसके साथ ही शैक्षिक संवादों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, प्रदर्शनियों और संवाद सत्रों में लोगों की बड़ी भागीदारी देखने को मिली। हजारों लोग इनका हिस्सा बने।

काशी-तमिल संगमम का चौथा संस्करण दो दिसंबर, 2025 को आरंभ हुआ। इस बार का विषय बहुत रोचक था- तमिल करकलम् यानी तमिल सीखें...। इससे काशी और दूसरी जगहों के लोगों को खूबसूरत तमिल भाषा सीखने का अनूठा अवसर मिला। तमिलनाडु से आए शिक्षकों ने काशी के विद्यार्थियों के लिए इसे अविस्मरणीय बना दिया। इस बार कई और विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। प्राचीन तमिल साहित्य ग्रंथ तोलकाप्पियम का चार भारतीय और छह विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया।

इसके अलावा काशी में स्वास्थ्य शिविरों और डिजिटल साक्षरता शिविर के आयोजन के साथ ही कई और सराहनीय प्रयास भी किए गए। इस अभियान में सांस्कृतिक एकता के संदेश का प्रसार करने वाले पांड्य वंश के महान राजा आदि वीर पांडियन जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूरे आयोजन के दौरान नमो घाट पर प्रदर्शनियां लगाई गईं। बीएचयू में शैक्षणिक सत्र का आयोजन हुआ, साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। काशी-तमिल संगमम में इस बार जिस चीज ने मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता दी, वह हमारे युवा साथियों का उत्साह है। इससे अपनी जड़ों से और अधिक जुड़े रहने के उनके उत्साह का पता चलता है। उनके लिए यह एक ऐसा अद्भुत मंच है, जहां वे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं। संगमम के अलावा काशी की यात्रा भी यादगार बने, इसके लिए विशेष प्रयास किए गए। भारतीय रेल ने लोगों को तमिलनाडु से उत्तर प्रदेश ले जाने के लिए विशेष रेलगाड़ियां चलाईं। इस दौरान कई स्टेशनों पर, विशेषकर तमिलनाडु में उनका खूब उत्साह बढ़ाया गया।

यहां मैं काशी और उत्तर प्रदेश के अपने भाइयों और बहनों की सराहना करना चाहूंगा, जिन्होंने काशी-तमिल संगमम को विशेष बनाने में अपना अद्भुत योगदान दिया है। उन्होंने अपने अतिथियों के स्वागत और सत्कार में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। कई लोगों ने तमिलनाडु से आए अतिथियों के लिए अपने घरों के दरवाजे तक खोल दिए। स्थानीय प्रशासन भी चौबीसों घंटे जुटा रहा, ताकि मेहमानों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो। वाराणसी का सांसद होने के नाते मेरे लिए यह गर्व और संतोष दोनों का विषय है। इस बार काशी-तमिल संगमम का समापन समारोह रामेश्वरम में आयोजित किया गया, जिसमें तमिलनाडु के सपूत उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन भी मौजूद रहे। उन्होंने इस कार्यक्रम को अपने विचारों से समृद्ध बनाया। भारतवर्ष की आध्यात्मिक समृद्धि पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि कैसे इस तरह के मंच राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करते हैं।

काशी-तमिल संगमम का बहुत गहरा प्रभाव देखने को मिला है। इसके जरिए जहां सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिली है, वहीं शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को भी काफी बढ़ावा मिला है। इससे हमारी संस्कृतियों के बीच संबंध और प्रगाढ़ हुए हैं। इस मंच ने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को आगे बढ़ाया है, इसलिए आने वाले समय में हम इस आयोजन को और जीवंत बनाने वाले हैं। ये वह भावना है, जो शताब्दियों से हमारे पर्व-त्योहार, साहित्य, संगीत, कला, खान-पान, वास्तुकला और ज्ञान-पद्धतियों का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रही है।

वर्ष का यह समय हर देशवासी के लिए बहुत ही पावन माना जाता है। लोग बड़े उत्साह के साथ संक्रांति, उत्तरायण, पोंगल और माघ बिहू जैसे अनेक त्योहार मना रहे हैं। ये सभी उत्सव मुख्य रूप से सूर्यदेव, प्रकृति और कृषि को समर्पित हैं। ये त्योहार लोगों को आपस में जोड़ते हैं, जिससे समाज में सद्भाव और एकजुटता की भावना और प्रगाढ़ होती है। इस अवसर पर मैं आप सभी को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि इन उत्सवों के साथ हमारी साझी विरासत और सामूहिक भागीदारी की भावना देशवासियों की एकता को और मजबूत करेगी।

*(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं)*

# सीखने का सफर

**राजेंद्र जोशी**

पढ़ने-लिखने और सीखने की कोई उम्र सीमा नहीं होती है। आजीवन सीखते रहने का पहलू महत्त्वपूर्ण है, जो व्यक्ति और समाज के विकास के लिए जरूरी है। ज्ञानार्जन और नवीनतम कौशल विकास की ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवनपर्यंत चलती है। इसमें सीखने के औपचारिक और अनौपचारिक रूप शामिल होते हैं। यह एक स्वैच्छिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति स्वयं चुनता है कि उसे क्या सीखना है, कैसे सीखना है और किस तरह की गतिविधियों का हिस्सा बनना है। मसलन- कला, संगीत, खेल, हस्तशिल्प और समाज सेवा इत्यादि। शिक्षा कोई समयबद्ध गतिविधि या खोज नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व विकास और सफल जीवन का आधार है। भारत में नई शिक्षा नीति 2020 के साथ ही आजीवन शिक्षा की तरफ ध्यान केंद्रित हुआ है।

ताउम्र सीखने की प्रक्रिया में प्रौढ़ शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसके माध्यम से व्यक्ति को कौशल और ज्ञान अर्जित करने का अवसर मिलता है, जिससे उन्हें अपने जीवन की राह को आसान बनाने मदद मिलती है। वे रोजगार प्रशिक्षण के जरिए आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम आगे बढ़ा सकते हैं। प्रकृति के साथ सह अस्तित्व को बढ़ाने के लिए नई तकनीक को सीखने और सिखाने की जरूरत को भी समझना होगा।

साक्षरता और बुनियादी शिक्षा व्यक्ति के जीवनपर्यंत सीखने के अवसरों को आगे बढ़ाती है। देश और समाज में व्यक्ति के स्तर पर सहयोगी बनने की दिशा में निरंतर प्रयासों की जरूरत है। शिक्षा की ताकत और बुनियादी साक्षरता के प्रयासों से विकसित भारत के उद्देश्य को भी बल मिलेगा। वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों के आंकड़े दर्शाते हैं कि राष्ट्र की साक्षरता दर और उसकी प्रति व्यक्ति आय में गहरा संबंध होता है। इसी उद्देश्य से जीवनपर्यंत शिक्षा को विकास में सहयोगी के रूप में देखा जाता है। दूसरी ओर किसी समुदाय का गैर साक्षर होना, उस वर्ग के उत्थान में बाधा बन सकता है।

बुनियादी वित्तीय लेनदेन कर पाना, गुणवत्ता अथवा मात्रा की तुलना, नौकरियां के आवेदन फार्म भरना, समाचार मीडिया में सार्वजनिक सूचनाओं को समझना, व्यापार को संचालित करना, पारंपरिक एवं पेशेवर तरीके को बेहतर बनाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल तथा दिशाओं और सुरक्षा निर्देशों को समझने के लिए जीवनपर्यंत शिक्षा का होना अति आवश्यक है। आजीवन शिक्षा व्यवस्था के लिए सबसे पहले राजनीतिक इच्छाशक्ति, संगठनात्मक संरचना, प्रभावी कार्ययोजना और पर्याप्त वित्तीय सहायता का होना जरूरी है। इसके अलावा स्वयं सेवी कार्यकर्ताओं एवं संगठनों की गुणवत्तापूर्ण क्षमता संवर्धन के साथ-साथ सामुदायिक भागीदारी का पहलू भी जीवनपर्यंत साक्षरता कार्यक्रमों की सफलता के लिए आवश्यक है। सकारात्मक सामाजिक बदलाव और न्याय के लिए समुदाय की भागीदारी शिक्षा के जरिए ही संभव हो पाती है। सामाजिक मुद्दों का चर्चा और विमर्श के माध्यम से समाधान निकालने की प्रक्रिया में भी साक्षरता की अहम भूमिका है। आजीवन सीखने को बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से नवाचारी पहल खासकर समुदाय की भागीदारी को सुगम बनाना और प्रौद्योगिकी के सुचारु एवं लाभकारी एकीकरण को आगे बढ़ाना होगा। साथ ही बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान, व्यावसायिक कौशल विकास, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता और सतत शिक्षा पर जोर देते हुए इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि कई मामलों में बच्चों और प्रौढ़ को सिखाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले तरीके, प्रशिक्षण सामग्री और शिक्षण पद्धतियों में भी सुधार की आवश्यकता होगी।

प्रौढ शिक्षा के माध्यम से लोगों को अपने कौशल और ज्ञान में सुधार करने का अवसर मिलता है, जिससे वे अपने जीवन में आसानी से आगे बढ़ सकते हैं। प्रौढ शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम और सेवाएं उपलब्ध हैं, जैसे कि प्रौढ़ शिक्षा केंद्र, आनलाइन पाठ्यक्रम और सामुदायिक शिक्षा कार्यक्रम। आजीवन सीखने को बढ़ावा देने के लिए हमें शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना होगा। प्रौद्योगिकी के उपयोग और वित्तीय मदद की पर्याप्त व्यवस्था करनी होगी। साथ ही स्वयंसेवक और सामुदायिक कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से प्रशिक्षित करना होगा। इसके जरिए हम एक शिक्षित, सक्षम और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं। इसके अलावा, हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि प्रौढ़ शिक्षा और आजीवन सीखने के अवसर सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध हों, चाहे उनकी जाति, धर्म, लिंग, या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। हमें शिक्षा को अधिक सुलभ, अनुकूल और ज्यादा प्रभावी बनाने के लिए काम करना होगा।

आजीवन सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने से न केवल लोगों के जीवन को आसान बनाने में मदद की जा सकती है, बल्कि समाज को एक नई दिशा भी दी जा सकती है। इन प्रयासों के तहत शिक्षा को सभी के लिए सुलभ और परिस्थितियों के अनुकूल बनाना होगा। नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग करके शिक्षा को प्रयोगात्मक और प्रभावी बनाना होगा तथा शिक्षा में अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देना होगा। शिक्षा और ज्ञान व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारता है। यह वह प्रकाश है, जो अज्ञानता के अंधेरे को दूर करता है और तर्कसंगत सोच विकसित करता है। शिक्षा से व्यक्ति और समाज अपने दम पर निर्णय लेने में सक्षम हो पाता है और यही क्षमता उन्हें वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना करने में मदद करती है।

**दुनिया मेरे आगे**

> **आजीवन सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने से न केवल लोगों के जीने की राह आसान होगी, बल्कि समाज को नई दिशा भी दी जा सकती है। इन प्रयासों के तहत शिक्षा को सभी के लिए सुलभ, प्रयोगात्मक एवं प्रभावी बनाना होगा। साथ ही शिक्षा में अनुसंधान और विकास को भी बढ़ावा देना होगा।**

## खामोशी की वजह

हाल में वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो पर मादक पदार्थों की तस्करी के आरोप लगाते हुए अमेरिका ने उन्हें अपनी हिरासत में ले लिया। इस पूरे घटनाक्रम पर विश्व समुदाय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की चुप्पी कई गंभीर प्रश्न खड़े करती है। अमेरिका लंबे समय से वेनेजुएला पर गंभीर आरोप लगाता रहा है। बिना युद्ध लड़े किसी भी देश को अस्थिर करने का यह सबसे खतरनाक तरीका है। विडंबना यह है कि स्वयं अमेरिका भी नशीले पदार्थों की समस्या से जूझ रहा है, जहां उसकी युवा पीढ़ी बड़े पैमाने पर इसकी चपेट में है। ऐसे में वेनेजुएला के मामले में कई देशों की ओर से विरोध न किया जाना या तो नशे के खिलाफ सख्ती के समर्थन के रूप में देखा जा सकता है या फिर यह उन देशों की मौन सहमति है। आर्थिक दृष्टि से भी अमेरिका की वेनेजुएला में गहरी रुचि किसी से छिपी नहीं है। पहले इराक, अफगानिस्तान और अब वेनेजुएला, यह सिलसिला अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों के पालन को लेकर सवाल खड़े करता है। हर देश की संप्रभुता का सम्मान जरूरी है और बातचीत से विवाद हल करने चाहिए।

*– अरविंद रावल, झाबुआ, मप्र*

## बेरोजगारी का दंश

प्रत्येक वर्ष हम युवा दिवस मनाते हैं। सवाल है कि क्या देश का युवा वास्तव में राष्ट्र के निर्माण में अपनी भूमिका निभा रहा है या उसे पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं? आज सच्चाई यह है कि युवाओं को बेरोजगारी का दंश झेलना पड़ रहा है। वे जहां कुंठा में जी रहे हैं, वहीं कुछ युवा गलत रास्तों पर भटक रहे हैं। इसलिए सरकार को संकल्प लेना चाहिए कि योजनाएं इस तरीके से बनाई जाएं कि युवाओं को अधिकतम लाभ मिले, रोजगार सृजन के अवसर बढ़ें और युवा वर्ग के लिए शिक्षा और चिकित्सा पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के बाद बेरोजगारी की मार न झेलनी पड़े, बल्कि वे स्वयं अपना कोरोबार चलाएं, अपना रोजगार बनाएं और दूसरों को भी रोजगार दे। हमें संकल्प लेना होगा कि देश के युवाओं को अच्छी शिक्षा और जीविका मिले, ताकि युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण में प्रोत्साहित किया जा सके।

*– वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली*

## सुनियोजित साजिश

इन दिनों जिस तरह से बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदू आबादी पर हमले हो रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि ये सब सोची समझी साजिश के तहत किया जा रहा है। यह भी कहा जा रहा है कि आज के समय ये हमले पाकिस्तान समर्थक बंग्लादेशियों द्वारा किए जा रहे हैं। गौरतलब है कि हमने पाकिस्तान से अलग बंगलादेश बनवाया था। तब यह पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था। भारतीय सेना की कार्रवाई के बाद पश्चिमी पाकिस्तान के नब्बे हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने एक साथ आत्मसमर्पण किया था। इन दिनों वर्तमान सरकार बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई कर रही है और उन्हें गिन-गिन कर भारतीय सीमा से खदेड़ कर बाहर किया जा रहा है। यह एक बड़ा काम है और बड़ी चुनौती भी। लिहाजा अब बड़ी कार्रवाई का समय है। पाकिस्तान की ही तरह बांग्लादेश को भी अब सबक सिखाया जाना चाहिए।

*– एमएम राजावतराज, शाजापुर*

## साइबर फर्जीवाड़ा

साइबर फर्जीवाड़े के मामले आए दिन सामने आ रहे हैं। शायद ही कोई दिन जाता होगा, जब ठगी की घटनाएं नहीं घटती हो। दिल्ली में बुजुर्ग दंपति से 14 करोड़ की ठगी की गई। ऐसी कई घटनाओं में लोगों को लाखों की चपत लग चुकी है। समझ में नहीं आता कि तकनीक के इस दौर में भी साइबर ठगी की घटनाएं क्यों नहीं रोकी जा रही है। हालांकि सतर्क रहने की चेतावनी दी जाती है। बचाव और जागरूकता के अभियान भी चलाए जाते हैं। जनता को अपनी व्यक्तिगत जानकारी या अनजान फोन से सतर्क रहना होगा। पैसे से संबंधित या बैंक खातों से संबधित जानकारी किसी भी अनजान व्यक्ति से साझा न करें। क्योंकि इससे जीवनभर की जमा पूंजी हाथ से निकल जाती है। 'डिजिटल अरेस्ट' ओर ठगी की अन्य घटनाओं से बचने के लिए सतर्कता ओर समझदारी का परिचय देना चाहिए।

*– योगेश जोशी, बड़वाह*

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

**तथ्य**

अप्रैल 2025 में भारत की कुल बेरोजगारी दर 5.1% रही, जबकि 15–29 वर्ष के युवाओं में यह 13.8% दर्ज की गई, जिसमें शहरी युवाओं की स्थिति अधिक चिंताजनक रही। जून 2025 में युवा बेरोजगारी बढ़कर 15.3% हो गई, यानी लगभग हर सातवां युवा बेरोजगार रहा। जुलाई–सितंबर 2025 में कुल बेरोजगारी घटकर 5.2% हुई, लेकिन युवा बेरोजगारी अब भी करीब 14.8% बनी रही, जो अवसरों की कमी को दर्शाती है। कई सर्वे बताते हैं कि अच्छी पढ़ाई पूरी करने के बावजूद युवाओं को स्थिर नौकरी नहीं मिल पा रही है क्योंकि शिक्षा और उद्योग की मांग के बीच तालमेल नहीं बैठ पा रहा है।

युवा शक्ति
जनसत्ता | 15 जनवरी, 2026

### 'स्वयं' का जनवरी 2026 सेमेस्टर परीक्षा का कार्यक्रम जारी

राष्ट्रीय परीक्षा एजंसी ने स्वयं (स्टडी वेब्स आफ एक्टिव लर्निंग फार यंग एस्पायरिंग माइंड्स) जनवरी 2026 सेमेस्टर की परीक्षाओं का कार्यक्रम जारी कर दिया है। परीक्षा में शामिल होने के इच्छुक अभ्यर्थी आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर समय-सारिणी देख सकते हैं। अधिसूचना के अनुसार परीक्षाएं 17, 18, 19, 20 और 21 जून 2026 को आयोजित होंगी। 22 और 23 जून को आरक्षित तिथियां निर्धारित की गई हैं। परीक्षाएं दो पालियों में होंगी। प्रश्नपत्र सामान्यत: अंग्रेजी माध्यम में होंगे, जबकि भाषा विषय संबंधित भाषाओं में आयोजित किए जाएंगे। बहुविकल्पीय प्रश्नों में गलत उत्तर पर नकारात्मक अंकन नहीं होगा। ये परीक्षाएं 648 पाठ्यक्रमों के लिए हाइब्रिड माध्यम से आयोजित की जाएंगी।



# प्रकृति के साथ करिअर की नई राह

**विशेषज्ञ की कलम से**

आज के दौर में जब दुनिया जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है, लोग अपनी जीवनशैली को अधिक टिकाऊ और प्राकृतिक बनाने की ओर झुक रहे हैं। भागदौड़ भरी जिंदगी और लगातार स्क्रीन (मोबाइल, कंप्यूटर) के सामने समय बिताने के कारण मानसिक तनाव बढ़ा है। यही कारण है कि अब डिजिटल सामग्रियों से विश्राम और प्राकृतिक स्थलों की ओर रुझान बढ़ा है। जंगल, पहाड़, नदी और अन्य प्राकृतिक स्थल न केवल शांति देते हैं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए वरदान साबित होते हैं।

इसी बदलती सोच ने इको-टूरिज्म (पारिस्थितिक पर्यटन) नामक पर्यटन के नए रूप को जन्म दिया है। यह सिर्फ प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित नहीं करता, बल्कि युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी खोल रहा है। अब इको-टूरिज्म केवल एक फैशन या ट्रेंड नहीं, बल्कि समाज और दुनिया की बदलती प्राथमिकताओं का प्रतिबिंब है।

#### नौकरी के अवसर

सरकारी क्षेत्र में हाल ही में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, केरल और उत्तराखंड के राज्य पर्यावरणीय पर्यटन बोर्ड सक्रिय हो गए हैं और प्रोजेक्ट मैनेजर, फेलो तथा कंसल्टेंट की नियुक्तियां लगातार जारी हैं। वन विभाग में नेचर गाइड, जैव वैज्ञानिक और पर्यावरणीय पर्यटन प्रबंधक के पद उपलब्ध हैं, जबकि राज्य पर्यटन विकास निगम इको-रिसाट्र्स का संचालन करते हुए मैनेजर और स्टाफ के लिए नए अवसर खोल रहा है। निजी क्षेत्र में भी तेजी से मांग बढ़ रही है, इको-लाज और बुटीक रिसाट्र्स जैसे ओबेराय वन्यविलास और ताज सफारी में पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन की नौकरियां लगातार भरी जा रही हैं। टूर आपरेटर और ट्रेवल एजंसियां विशेष ट्रेकिंग और वन्यजीव पर्यटन के लिए प्रशिक्षित गाइड्स की तलाश में हैं, वहीं एडवेंचर स्पोर्ट्स संस्थाएं रिवर राफ्टिंग, कयाकिंग और पैराग्लाइडिंग प्रशिक्षकों की भर्ती कर रही हैं। गैर-सरकारी और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया और वाइल्डलाइफ ट्रस्ट आफ इंडिया संरक्षण परियोजनाओं के लिए विशेषज्ञ नियुक्त कर रहे हैं, वहीं यूनेस्को और यूएनडीपी भारत में सतत पर्यटन प्रोजेक्ट्स के लिए पर्यावरणीय पर्यटन विशेषज्ञों की लगातार तलाश में हैं। स्वरोजगार के क्षेत्र में भी अवसर बढ़ रहे हैं, लोग अपने घर या किसी शांत स्थल पर ईको-फ्रेंडली होमस्टे खोल सकते हैं और फ्रीलांस टूर गाइड बनकर विशेष रूप से विदेशी पर्यटकों के साथ काम कर सकते हैं।

#### योग्यता के अनुसार चुनें रास्ता

**12वीं के बाद (शुरुआती स्तर)**
पर्यटन, यात्रा प्रबंधन में 6 महीने से एक साल का सर्टिफिकेट या डिप्लोमा।
स्थानीय नेचर गाइड या वाइल्डलाइफ वालंटियर के रूप में कार्य करना।

**स्नातक स्तर**
बीबीए/बीए पर्यटन या यात्रा प्रबंधन में 3 साल की डिग्री।
पर्यावरण विज्ञान, वनस्पति या जीवविज्ञान में बीएससी डिग्री।
न्यूनतम 50 फीसद अंक आवश्यक।

**विशेषज्ञ और प्रबंधन स्तर**
मास्टर डिग्री: पर्यावरण विज्ञान, वन्यजीव विज्ञान या पारिस्थितिकी।
पर्यटन प्रबंधन में एमबीए: बड़े रिसाट्र्स और कंपनियों में प्रबंधन पद।
सरकारी फेलो या उच्च पदों के लिए 60 फीसद अंक अनिवार्य।

#### प्रशिक्षण और शिक्षा

- भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान (आइआइटीटीएम) ग्वालियर, नोएडा, भुवनेश्वर
- केरल इंस्टीट्यूट आफ टूरिज्म एंड ट्रैवल स्टडीज (केआइटीटीएस)
- अशोक इंस्टीट्यूट आफ हास्पिटैलिटी एंड टूरिज्म मैनेजमेंट (एआइएचटीएम), नई दिल्ली
- वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट आफ इंडिया (डब्ल्यूआइआइ), देहरादून

#### वेतनमान

प्रारंभिक स्तर पर मासिक 15,000 से 25,000 रुपए तक की आमदनी होती है, मध्यम स्तर पर मैनेजर या विशेषज्ञ के रूप में 40,000 से 70,000 तक, जबकि अनुभवी गाइड या रिसार्ट मालिक उच्च स्तर पर प्रति सीजन लाखों में कमा सकते हैं और विदेशी पर्यटकों के साथ कार्य करने पर आय और अधिक बढ़ जाती है।

– **अविनाश चंद्रा,** *लोकनीति के जानकार*

## सूचनापट्ट

### एनआइओएस

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआइओएस) ने प्राइमरी टीचर एजुकेशन के लिए छह महीने के सर्टिफिकेट ब्रिज कोर्स के पंजीकरण की अंतिम तिथि बढ़ा दी है। अब इच्छुक अभ्यर्थी इस कोर्स के लिए 19 जनवरी 2026 तक आवेदन कर सकते हैं। यह ब्रिज कोर्स उन शिक्षकों के लिए तैयार किया गया है, जिनके पास पहले से बीएड की डिग्री है और जो प्राथमिक स्तर पर पढ़ाना जारी रखना चाहते हैं। इस कोर्स का उद्देश्य शिक्षकों का प्रोफेशनल डेवलपमेंट करना है। इस कोर्स को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने शिक्षा मंत्रालय के तहत डिजाइन किया है। यह कोर्स उन शिक्षकों के लिए अनिवार्य है, जिनकी नियुक्ति 28 जून 2018 से 11 अगस्त 2023 के बीच केवल बीएड योग्यता के आधार पर हुई थी।

**अंतिम तिथि : 19 जनवरी, 2026**

### पीएचडी

भारतीय प्रबंधन संस्थान लखनऊ ने 2026 शैक्षणिक वर्ष के लिए अपने प्रबंधन में डाक्टरेट कार्यक्रम (पीएचडी) के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। इस पूर्णकालिक कार्यक्रम का उद्देश्य वैश्विक और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप

उन्नत प्रबंधन अनुसंधान के लिए विद्वानों को प्रशिक्षित करना है। लगभग 4.5 वर्षों में पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया, यह कार्यक्रम डिग्री के लिए आवश्यक मुख्य शोध गतिविधियों के अलावा, अकादमिक, कार्पोरेट क्षेत्र और सार्वजनिक संस्थानों में नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए शोध स्नातकों को तैयार करता है। इच्छुक आवेदकों को जल्द से जल्द आवेदन करने और सभी पात्रता मानदंडों की जांच करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अधिक जानकारी के लिए, कृपया आईआईएम लखनऊ पीएचडी कार्यक्रम की आधिकारिक वेबसाइट देखें।

**अंतिम तिथि : 16 फरवरी, 2026**

### वायुसेना अग्निवीर

भारतीय वायुसेना ने अग्निपथ योजना के अंतर्गत अग्निवीर भर्ती प्रक्रिया शुरू की है। इसके तहत अविवाहित पुरुष और महिला अभ्यर्थियों को चार वर्ष तक सेवा का अवसर मिलेगा। आवेदन केवल वायु सेना की आधिकारिक भर्ती वेबसाइट के माध्यम से किए जाएंगे। पंजीकरण 12 जनवरी से शुरू होकर एक फरवरी 2026 को रात ग्यारह बजे तक चलेगा। आनलाइन परीक्षा 30 और 31 मार्च को होगी। पात्रता के अनुसार अभ्यर्थी का जन्म एक जनवरी 2006 से एक जुलाई 2009 के बीच होना चाहिए। अधिकतम आयु इक्कीस वर्ष निर्धारित है। विज्ञान वर्ग से बारहवीं उत्तीर्ण तथा अन्य निर्धारित योग्यताएं आवश्यक हैं। चयन तीन चरणों में होगा। चयनित अभ्यर्थियों को प्रारंभ में तीस हजार रुपए मासिक वेतन और चार वर्ष बाद सेवा निधि दी जाएगी। चार वर्ष की सेवा पूरी होने पर अग्निवीर को लगभग दस लाख चार हजार रुपये का सेवा निधि पैकेज एकमुश्त दिया जाएगा। यह राशि पूरी तरह कर मुक्त होगी और इसमें सरकार व अभ्यर्थी दोनों का योगदान शामिल होगा।

सेवा समाप्ति के बाद अग्निवीर को सेवा अनुभव प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। भारतीय वायु सेना में हर बैच से पच्चीस फीसद तक अग्निवीरों को प्रदर्शन और आवश्यकता के आधार पर स्थायी कैडर में शामिल होने का अवसर मिल सकता है।

अंतिम तिथि, 1 फरवरी, 2026

### रेलवे ग्रुप डी भर्ती

रेलवे में नौकरी का सपना देख रहे युवाओं के लिए रेलवे भर्ती बोर्ड ने ग्रुप डी भर्ती 2026 का नोटिस जारी कर दिया है। इस भर्ती के माध्यम से देशभर में लगभग 22000 पदों पर नियुक्तियां की जाएंगी। यह अवसर दसवीं पास और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान से योग्य अभ्यर्थियों के लिए है। आनलाइन आवेदन प्रक्रिया 21 जनवरी से शुरू होकर 20 फरवरी 2026 तक चलेगी। न्यूनतम आयु 18 वर्ष और अधिकतम आयु 33 वर्ष तय की गई है। चयन लिखित परीक्षा, शारीरिक दक्षता परीक्षा, दस्तावेज सत्यापन और चिकित्सकीय जांच के आधार पर होगा। चयनित अभ्यर्थियों को लगभग 23500 रुपए मासिक वेतन, भत्ते, सामाजिक सुरक्षा, स्थायी रोजगार की संभावना और भविष्य में पदोन्नति का अवसर मिलेगा। ग्रुप डी भर्ती के लिए आवेदन शुल्क वर्ग के आधार पर निर्धारित किया गया है। सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए आवेदन शुल्क पांच सौ रुपए रखा गया है। वहीं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य आरक्षित वर्गों के अभ्यर्थियों के लिए आवेदन शुल्क दो सौ पचास रुपए निर्धारित है।

अंतिम तिथि, 20 फरवरी, 2026

## जानें-सीखें

### वीडियो के लिए आकर्षक थंबनेल है जरूरी

आज के डिजिटल युग में वीडियो बनाना जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी उसका आकर्षक थंबनेल होना भी है। थंबनेल दर्शकों के सामने वीडियो की पहली झलक होता है। यही कारण है कि थंबनेल जितना प्रभावशाली होगा, उतनी ही अधिक संख्या में लोग वीडियो देखने के लिए प्रेरित होंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि कई बार विषय अच्छा होने के बावजूद कमजोर थंबनेल के कारण वीडियो अपेक्षित लोकप्रियता हासिल नहीं कर पाता।

थंबनेल बनाने के लिए अब तकनीकी ज्ञान का विशेषज्ञ होना आवश्यक नहीं रह गया है। मोबाइल और कंप्यूटर दोनों के लिए कई सरल और उपयोगी टूल उपलब्ध हैं, जिनकी मदद से कोई भी व्यक्ति कुछ ही मिनटों में आकर्षक थंबनेल तैयार कर सकता है। इनमें कैनवा, पिक्सआर्ट, स्नैपसीड जैसे टूल आम लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। ये टूल पहले से तैयार नमूने, आसान लिखावट और रंग संयोजन की सुविधा प्रदान करते हैं।

थंबनेल बनाते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि उसमें वीडियो का सार साफ दिखाई दे। कम शब्दों का प्रयोग, साफ तस्वीर और चमकीले रंग थंबनेल को प्रभावी बनाते हैं। चेहरे की भाव-भंगिमा वाले चित्र दर्शकों का ध्यान जल्दी खींचते हैं। साथ ही, भ्रामक या अतिरंजित थंबनेल से बचना चाहिए, क्योंकि इससे दर्शकों का भरोसा कमजोर होता है।

#### मोबाइल के लिए

मोबाइल से थंबनेल बनाने के लिए सबसे पहले किसी थंबनेल टूल को खोलकर नया डिजाइन तैयार किया जाता है। इसके बाद वीडियो से जुड़ी तस्वीर लगाकर दो से चार शब्दों में मुख्य बात लिखी जाती है। लिखावट बड़ी और स्पष्ट होनी चाहिए ताकि छोटे आकार में भी पढ़ी जा सके। अंत में तैयार थंबनेल को चित्र के रूप में सुरक्षित कर लिया जाता है। मोबाइल पर थंबनेल बनाने के लिए कैनवा सबसे सरल टूल है। पिक्सआर्ट फोटो एडिटिंग और प्रभाव जोड़ने में मदद करता है। स्नैपसीड से फोटो की रोशनी और रंग सुधारे जा सकते हैं। फोटोएडिटर छोटे समय में टेक्स्ट और स्टिकर जोड़कर आकर्षक थंबनेल बनाता है।

#### कंप्यूटर के लिए

कंप्यूटर पर कैनवा वेब संस्करण शुरुआती और पेशेवर दोनों के लिए आसान है। कंप्यूटर उपयोगकर्ता फोटोशाप जैसे टूल का सहारा लेकर अधिक पेशेवर थंबनेल बना सकते हैं, हालांकि इसके लिए थोड़े अभ्यास की जरूरत होती है। कोरल ड्रा बड़े ग्राफिक डिजाइन के लिए उपयुक्त है, जबकि गिम्प मुफ्त में फोटोशाप जैसा अनुभव देता है। ये टूल्स वीडियो थंबनेल को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

**युवा शक्ति डेस्क**

## लोकरंग

नई दिल्ली में केंद्रीय राज्य मंत्री एल मुरुगन के आवास पर बुधवार को पोंगल त्योहार को लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देतीं कलाकार।

# बोर्ड परीक्षा का तनाव स्वाभाविक; घबराएं नहीं, सकारात्मक रहें

**परामर्श**

बोर्ड परीक्षा हर विद्यार्थी के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण चरण होती है। इस समय घबराहट, चिंता और मानसिक दबाव महसूस होना बिल्कुल स्वाभाविक है। पढ़ाई का भार, अच्छे अंकों की अपेक्षा और भविष्य को लेकर मन में उठने वाले प्रश्न कई बार विद्यार्थियों को तनावग्रस्त कर देते हैं। इसी समस्या को समझते हुए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने कक्षा दसवीं और बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए मनो-सामाजिक परामर्श सेवाएं शुरू की हैं।

यह पहल बोर्ड परीक्षा 2026 से पहले विद्यार्थियों के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से की गई है। बोर्ड के अनुसार यह वार्षिक निःशुल्क परामर्श सेवा का पहला चरण है, जो वर्तमान समय से आरंभ होकर एक जून दो हजार छब्बीस तक जारी रहेगा। इस सेवा का लाभ विद्यार्थी और उनके अभिभावक प्रतिदिन सुबह 9:30 से शाम 5:30 तक ले सकते हैं। यह सुविधा शनिवार और रविवार को उपलब्ध नहीं रहेगी। इस परामर्श सेवा के अंतर्गत विद्यार्थी और अभिभावक 73 प्रशिक्षित विशेषज्ञों से संवाद कर सकते हैं। इनमें केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रधानाचार्य, परामर्शदाता, विशेष शिक्षक तथा योग्य मनोवैज्ञानिक शामिल हैं।

बोर्ड का कहना है कि इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को आगामी बोर्ड परीक्षाओं के लिए मानसिक रूप से तैयार करना है, ताकि वे 17 फरवरी 2026 से आरंभ होने वाली सैद्धांतिक परीक्षाओं का सामना आत्मविश्वास, संतुलन और स्पष्ट सोच के साथ कर सकें। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिए चौबीसों घंटे स्वचालित काल सहायता प्रणाली भी उपलब्ध कराई गई है। इसके लिए टोल फ्री नंबर 1800118004 पर संपर्क किया जा सकता है।

# स्नातक प्रवेश के लिए सीयूईटी यूजी पंजीकरण शुरू

**जरूरी जानकारी**

राष्ट्रीय परीक्षा एजंसी ने देशभर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों और सहभागी उच्च शिक्षण संस्थानों में स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए साझा विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा – स्नातक (सीयूईटी यूजी) 2026 की पंजीकरण प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। इस परीक्षा के माध्यम से 47 केंद्रीय विश्वविद्यालयों तथा 300 से अधिक महाविद्यालयों में विभिन्न स्नातक कार्यक्रमों में प्रवेश दिया जाएगा।

अभ्यर्थी 30 जनवरी 2026 की रात्रि 11 बजकर 50 मिनट तक आवेदन कर सकते हैं। आवेदन शुल्क का भुगतान 31 जनवरी 2026 की रात्रि 11 बजकर 50 मिनट तक किया जा सकेगा। इसके बाद अभ्यर्थियों को आवेदन पत्र में संशोधन का अवसर 2 फरवरी से 4 फरवरी 2026 तक प्रदान किया जाएगा। सीयूईटी यूजी 2026 की परीक्षा का आयोजन संभावित रूप से 11 मई से 31 मई 2026 के बीच किया जाएगा। यह परीक्षा भारत और विदेशों में निर्धारित केंद्रों पर आयोजित होगी। अभ्यर्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए परीक्षा 13 विभिन्न भाषाओं में आयोजित की जाएगी, जिससे अधिक से अधिक छात्र इसमें सम्मिलित हो सकें।

परीक्षा केंद्र की सूचना, प्रवेश पत्र जारी होने की तिथि तथा उत्तर कुंजी से संबंधित जानकारी बाद में राष्ट्रीय परीक्षा एजंसी की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित की जाएगी। परीक्षा संपन्न होने के पश्चात अभ्यर्थियों द्वारा दिए गए उत्तर, अंतिम उत्तर कुंजी और परिणाम भी वेबसाइट पर उपलब्ध कराए जाएंगे।

#### आवेदन की प्रक्रिया

सीयूईटी यूजी 2026 के लिए आवेदन करने के लिए अभ्यर्थियों को सबसे पहले आधिकारिक वेबसाइट ॅीइ. छ्इं. छ्रू.ॅह्र पर जाना होगा। होमपेज पर उपलब्ध सीयूईटी यूजी 2026 पंजीकरण/आनलाइन आवेदन लिंक पर क्लिक करें। इसके बाद नया पंजीकरण करें, जिससे पंजीकरण संख्या और पासवर्ड प्राप्त होगा। पंजीकरण के बाद अभ्यर्थी लागिन करें और आनलाइन आवेदन पत्र में अपनी व्यक्तिगत जानकारी सावधानीपूर्वक भरें। इसके बाद शैक्षणिक योग्यता, विषयों का चयन तथा अन्य आवश्यक विवरण दर्ज करें। निर्धारित प्रारूप के अनुसार अपनी नवीनतम पासपोर्ट आकार की फोटो और हस्ताक्षर अपलोड करें।

सभी जानकारी सही से भरने के बाद अपनी श्रेणी के अनुसार आवेदन शुल्क का भुगतान क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, नेट बैंकिंग या यूपीआइ के माध्यम से करें। शुल्क भुगतान के पश्चात आवेदन पत्र को अंतिम रूप से सबमिट करें। अंत में आवेदन पत्र की प्रति या पीडीएफ फाइल डाउनलोड कर भविष्य के लिए सुरक्षित रख लें।

## नीट यूजी 2026 का अंतिम पाठ्यक्रम जारी, मई में परीक्षा की संभावना

राष्ट्रीय परीक्षा एजंसी ने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट-यूजी) 2026 का अंतिम पाठ्यक्रम जारी कर दिया है। चिकित्सा प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे अभ्यर्थी अब आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर पूरा पाठ्यक्रम देख सकते हैं। यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग के अंतर्गत स्नातक चिकित्सा शिक्षा बोर्ड द्वारा अंतिम रूप से निर्धारित किया गया है। एजंसी ने सभी संबंधित पक्षों से 2026-27 के लिए परीक्षा तैयारी और अध्ययन सामग्री इसी अद्यतन पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार करने को कहा है।

पिछले वर्षों के परीक्षा कार्यक्रम को देखें तो नीट-यूजी परीक्षा प्रायः मई माह में आयोजित की जाती रही है। वर्ष 2023 में परीक्षा 7 मई, 2024 में 5 मई और 2025 में 4 मई को आयोजित हुई थी। हालांकि, नीट-यूजी 2026 की आधिकारिक परीक्षा तिथि अभी घोषित नहीं की गई है। अधिसूचित ढांचे के अनुसार नीट-यूजी 2026 का पाठ्यक्रम तीन मुख्य विषयों – भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीवविज्ञान – पर आधारित है। सभी विषयों के अध्याय एनसीईआरटी की कक्षा 11 और 12 की पुस्तकों से लिए गए हैं। पाठ्यक्रम में किसी भी प्रकार की नई इकाई जोड़ी या हटाई नहीं गई है। भौतिकी में कुल 20 यूनिट, रसायन विज्ञान में 20 यूनिट तथा जीवविज्ञान में 10 यूनिट शामिल हैं, जिनमें वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान दोनों सम्मिलित हैं।

## प्रेरणा

रचनात्मकता का सबसे बड़ा दुश्मन है स्वयं पर हमेशा बना रहने वाला संदेह। - सिल्विया प्लाथ

## संपादकीय

# देश के मजदूर दूसरे राज्यों में जाने को मजबूर क्यों?

आईएलओ की रिपोर्ट बताती है कि बिहार और असम में एक कामगार की दिहाड़ी महाराष्ट्र के मुकाबले लगभग आधी होती है, जबकि चीन में चार गुनी और बांग्लादेश में डेढ़ गुनी। 2023 में देश में औसत पगार 190 रु. थी, जबकि महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल और गुजरात में इससे ज्यादा थी। वहीं हरियाणा, एमपी, उत्तराखंड, यूपी, पंजाब, बिहार और असम में मजदूरी इसी क्रम में राष्ट्रीय औसत से कम मिलती है। यानी जो राज्य औद्योगिक रूप से बेहतर हैं, वहां दिहाड़ी ज्यादा है जबकि कम औद्योगिक या कृषि-आधारित राज्यों में मजदूरी कम है। इन तथ्यों से एक और बात स्पष्ट होती है कि आबादी-घनत्व इसका प्रमुख कारण नहीं है। उत्तर भारत के राज्यों में ज्यादा आबादी और कम मैन्युफैक्चरिंग होने के कारण श्रम की कीमत कम है, जिससे मजदूर बेहतर कमाई के लिए उन राज्यों का रुख करते हैं, जहां औद्योगिक या सेवा के क्षेत्रों जैसे होटल, टूरिज्म, गिग वर्क में काम के अच्छे पैसे मिलते हैं। कृषि कार्य सीजनल होने से साल के 40% दिन काम की कमी रहती है। पंजाब या हरियाणा में भी बिहार के श्रमिकों के जाने के पीछे वहां का बेहतर कृषि-उत्पादन (गेहूं-चावल प्रति हेक्टेयर उत्पादन 70% ज्यादा) के कारण खेती में भी मजदूरी अपेक्षाकृत ज्यादा है। इन आंकड़ों से यह तो साफ है कि उत्तर भारत के गरीब राज्यों में या तो अधिक मैन्युफैक्चरिंग इकाइयां लाई जाने की जरूरत है या फिर कृषि का ही वाणिज्यीकरण हो, यानी उत्पादों की प्रोसेसिंग भी किसान-उद्यमी ही करें।

## जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com


# डूबकर किए गए कार्य की सुगंध व्यवहार में उतरती है

जो भी करें डूबकर करें। यदि आप पूजा-पाठ कर रहे हों, कोई इबादत से गुजर रहे हों, थोड़े समय ही भले आप यह काम कर रहे हों- पर डूबकर करिए। उतने वक्त भूल जाइए कि पीछे क्या घटा था और आगे क्या होने वाला है। जो लोग 24 घंटे में अपने तयशुदा धार्मिक कृत्य पूरी तरह इनवॉल्व होकर करेंगे, बाकी समय उनका व्यवहार बहुत आकर्षक हो जाएगा। उस थोड़ी देर डूबकर किए गए कृत्य की सुगंध दिनभर किए जा रहे कामों में उतर जाएगी। फिर आप परिवार में हों, कारोबार में हो, आपका व्यवहार आकर्षक हो ही जाएगा। लोग आपके आसपास सादगी, साफगोई, सच्चाई और मिठास महसूस करेंगे। क्योंकि आपको फिर अपनी दिनचर्या में चार तरह के लोगों से मिलना है- एक होते हैं निकट के लोग, दूसरे सामान्य संबंध वाले लोग, तीसरे व्यर्थ के लोग और चौथे प्रभावशाली लोग। इन चारों में समान रूप से आकर्षक व्यवहार करिए। ये अपने आप में एक योग है, मेडिटेशन है- क्योंकि भक्त अपना भगवान सबमें देखता है।

•Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

## पाठकों के पत्र

### महिला क्रिकेट लोकप्रिय हो रहा है

वुमंस प्रीमियर लीग के आयोजन से अब महिला क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। इस वर्ष इस लीग में अब तक खेले गए मुकाबलों में रोमांचक और संघर्षपूर्ण क्रिकेट देखने को मिला है। हर टीम की प्रतिभाशाली और होनहार खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं। निःसंदेह यह भारतीय क्रिकेट के लिए एक सुखद संकेत है, जो महिला क्रिकेट को नई ऊंचाई प्रदान करने में सक्षम है।

-हार्दिक जैन, इंदौर, मध्य प्रदेश

### जलवायु परिवर्तन पर देश एकजुट हों

जलवायु परिवर्तन के खतरों को लेकर सभी देशों का एकजुट होना जरूरी है। ऐसा नहीं हुआ तो वो दिन दूर नहीं जब जलवायु परिवर्तन कोरोना और आतंकवाद से भी बड़ी समस्या बन जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस मुद्दे को उठाया, लेकिन अमेरिका ने पेरिस जलवायु समझौते से भागकर दिखा दिया कि वह गंभीर नहीं है। इस मुद्दे पर अब सभी देशों को एक मंच पर इकट्ठा होना चाहिए।

-राजेश कुमार चौहान, जालंधर, पंजाब

### हादसों से बचा सकता है स्पीड गवर्नर

सरकार तेज स्पीड कारों के विनिर्माण, इम्पोर्ट की इजाजत देती है। लेकिन हमारी कई सड़कें खराब क्वालिटी के डामर की वजह से तेज स्पीड के लिए बनी ही नहीं हैं। इधर हम देखते हैं कि ट्रैफिक पुलिस ने 30-40 किमी प्रति घंटे की स्पीड लिमिट भी लगा रखी है। समझ नहीं आता कि कौन किसे बेवकूफ बना रहा है। स्पीड गवर्नर ऐसे हादसों से बचाने का एक तरीका हो सकता है।

-सुश कोचर, जयपुर, राजस्थान

### सभी को साफ पानी मिलना जरूरी

देश में आज भी लाखों लोगों को पीने का स्वच्छ पानी तक नहीं मिल रहा है। दूषित पानी से बीमारियां हो रही हैं। पेयजल में गंदगी आने लगे तो उसके तो कहने ही क्या? इंदौर जैसे शहर में नलों में गंदा पानी आए और कई मौतें हो जाएं तो इससे बड़ा विषय दूसरा नहीं हो सकता। देश में हर इंसान को कम से कम साफ-स्वच्छ जल मिल पाए, इसके प्रयास करने होंगे।

-साजिद अली, इंदौर, मध्य प्रदेश

आप अपने पत्र editpage@dbcorp.in पर भेज सकते हैं

## क्या आप जानते हैं

# जीवों के अवशेषों से खुद को सजाता है 'बोन कलेक्टर'

हवाई के ओआहू द्वीप पर खोजे गए एक कैटरपिलर का अनूठा नाम है- बोन कलेक्टर। यानी हड्डियों का संग्रह करने वाला। इस कीट को अपनी एक अनोखी खासियत के कारण यह नाम मिला। यह मर हुए छोटे कीट-पतंगों के अवशेष खास तरीके से अपने शरीर पर सजाता है। वैज्ञानिकों ने 2025 में ही इस कैटरपिलर की खोज की है। रोचक यह भी है कि बोन कलेक्टर एक कीट होने के बावजूद अपना जीवन मकड़ी के जाले में बिताता है और मकड़ी से बचने के लिए अन्य मृत कीटों के अवशेषों में लिपटा रहता है।

**2 लाख से ज्यादा कीट व तितलियों की प्रजातियों में महज 0.1% ही मांसाहारी होते हैं। बोन कलेक्टर उनमें से एक है।**

---

## विशेष • 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' और 'विविधता में एकता' का पर्व है काशी-तमिल संगमम

# विश्वनाथ से रामेश्वरम् तक एक उत्सव

सद्भाव

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री


**कुछ** दिन पहले ही मुझे सोमनाथ की पवित्र भूमि पर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में हिस्सा लेने का सुअवसर मिला। इस क्षण का साक्षी बनने के लिए देश के कोने-कोने से लोग सोमनाथ पहुंचे। इस कार्यक्रम के दौरान मेरी मुलाकात कुछ ऐसे लोगों से भी हुई, जो इससे पहले सौराष्ट्र-तमिल संगमम के दौरान सोमनाथ आए थे और इससे पहले काशी-तमिल संगमम के समय काशी भी गए थे। ऐसे मंचों को लेकर उनकी सकारात्मक सोच ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इसलिए मैंने तय किया कि क्यों ना इस विषय पर अपने कुछ विचार साझा करूं।

'मन की बात' के एक एपिसोड के दौरान मैंने कहा था कि अपने जीवन में तमिल भाषा न सीख पाने का मुझे बहुत दुःख है। यह हमारा सौभाग्य है कि बीते कुछ वर्षों से हमारी सरकार तमिल संस्कृति को देश में और लोकप्रिय बनाने में निरंतर जुटी है। यह 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को और सशक्त बनाने वाला है। हमारी संस्कृति में संगम का बहुत महत्त्व है। इस पहलू से भी काशी-तमिल संगमम एक अनूठा प्रयास है। इसमें जहां भारत की विविध परंपराओं के बीच अद्भुत सामंजस्य दिखता है, वहीं यह भी पता चलता है कि कैसे हम एक-दूसरे की परंपराओं का सम्मान करते हैं।

काशी तमिल संगमम के आयोजन के लिए काशी सबसे उपयुक्त स्थान कहा जा सकता है। काशी का तमिल समाज और संस्कृति से अत्यंत गहरा नाता रहा है। काशी बाबा विश्वनाथ की नगरी है, तो तमिलनाडु में रामेश्वरम् तीर्थ है। तमिलनाडु की तेनकासी को दक्षिण की काशी या दक्षिण काशी कहा जाता है। तमिलनाडु के महान सपूत महाकवि सुब्रमण्यम भारती जी को भी काशी में बौद्धिक विकास और आध्यात्मिक जागरण का अद्भुत अवसर दिखा। यहीं उनका राष्ट्रवाद और प्रबल हुआ, साथ ही उनकी कविताओं को नई धार मिली। यहीं पर स्वतंत्र और अखंड भारत की उनकी संकल्पना को स्पष्ट दिशा मिली। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो काशी और तमिलनाडु के बीच गहरे आत्मीय संबंध को दर्शाते हैं।

वर्ष 2022 में वाराणसी की धरती पर काशी-तमिल संगमम की शुरुआत हुई थी। मुझे इसके उद्घाटन समारोह में शामिल होने का सौभाग्य मिला था। तब तमिलनाडु से आए लेखकों, विद्यार्थियों, कलाकारों, विद्वानों, किसानों और अतिथियों ने काशी के साथ-साथ प्रयागराज और अयोध्या के दर्शन भी किए थे। इसके बाद के आयोजनों में इस पहल को और विस्तार दिया गया।

इसका उद्देश्य यह था कि संगमम में समय-समय पर नए विषय जोड़े जाएं, नए और रचनात्मक तरीके अपनाए जाएं और इसमें लोगों की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो। प्रयास यह था कि ये आयोजन अपनी मूल भावना से जुड़े रहकर भी निरंतर आगे बढ़ता रहे। वर्ष 2023 के दूसरे आयोजन में टेक्नोलॉजी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया, ताकि यह सुनिश्चित हो कि भाषा इसमें बाधा ना बने। इसके तीसरे संस्करण में इंडियन नॉलेज सिस्टम पर विशेष फोकस रखा गया। इसके साथ ही शैक्षिक संवादों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, प्रदर्शनियों और संवाद-सत्रों में लोगों की बड़ी भागीदारी देखने को मिली।

काशी-तमिल संगमम का चौथा संस्करण 2 दिसंबर, 2025 को आरंभ हुआ। इस बार की थीम बहुत रोचक थी- तमिल करकलम् यानी तमिल सीखें....। इससे काशी और दूसरी जगहों के लोगों को तमिल सीखने का अनूठा अवसर मिला। तमिलनाडु से आए शिक्षकों ने काशी के विद्यार्थियों के लिए इसे अविस्मरणीय बना दिया! इस बार कई और विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। प्राचीन तमिल साहित्य ग्रंथ तोलकाप्पियम का चार भारतीय और छह विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया। इस अभियान में सांस्कृतिक एकता के संदेश का प्रसार करने वाले पांड्य वंश के महान राजा आदि वीर पराक्रम पांडियन जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

### इससे हमारी संस्कृतियों के बीच संबंध प्रगाढ़ हुए हैं...

**काशी-तमिल संगमम का गहरा प्रभाव देखने को मिला है। इसके जरिए जहां सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिली, वहीं शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को भी काफी बढ़ावा मिला। इससे हमारी संस्कृतियों के बीच संबंध प्रगाढ़ हुए हैं।**

पूरे आयोजन के दौरान नमो घाट पर प्रदर्शनियां लगाई गईं, बीएचयू में शैक्षणिक सत्र का आयोजन हुआ, साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। काशी-तमिल संगमम में इस बार जिस चीज ने मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता दी, वो हमारे युवा साथियों का उत्साह है। इससे अपनी जड़ों से और अधिक जुड़े रहने के उनके पैशन का पता चलता है। उनके लिए ये एक ऐसा अद्भुत मंच है, जहां वे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं। संगमम के अलावा काशी की यात्रा भी यादगार बने, इसके लिए विशेष प्रयास किए गए। भारतीय रेल ने लोगों को तमिलनाडु से उत्तर प्रदेश ले जाने के लिए विशेष ट्रेनें चलाईं। इस दौरान कई रेलवे स्टेशनों पर, विशेषकर तमिलनाडु में उनका उत्साह बढ़ाया गया। सुंदर गीतों और आपसी चर्चाओं से ये सफर और आनंददायक बन गया।

यहां मैं काशी और उत्तर प्रदेश के अपने भाइयों और बहनों की सराहना करना चाहूंगा, जिन्होंने काशी-तमिल संगमम को विशेष बनाने में अद्भुत योगदान दिया है। उन्होंने अपने अतिथियों के स्वागत और सत्कार में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। कई लोगों ने तमिलनाडु से आए अतिथियों के लिए अपने घरों के दरवाजे तक खोल दिए। स्थानीय प्रशासन भी चौबीसों घंटे जुटा रहा, ताकि मेहमानों को दिक्कत ना हो। वाराणसी का सांसद होने के नाते मेरे लिए ये गर्व और संतोष दोनों का विषय है।

इस बार काशी-तमिल संगमम का समापन समारोह रामेश्वरम में हुआ, जिसमें तमिलनाडु के सपूत उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन भी मौजूद रहे। उन्होंने कार्यक्रम को अपने विचारों से समृद्ध बनाया। भारत की आध्यात्मिक समृद्धि पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि कैसे इस तरह के मंच राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करते हैं।

काशी-तमिल संगमम का गहरा प्रभाव देखने को मिला है। इसके जरिए जहां सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिली है, वहीं शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को भी काफी बढ़ावा मिला है। इससे हमारी संस्कृतियों के बीच संबंध और प्रगाढ़ हुए हैं।

वर्ष का यह समय हर देशवासी के लिए बहुत ही पावन माना जाता है। लोग बड़े उत्साह के साथ संक्रांति, उत्तरायण, पोंगल, माघ बिहू जैसे अनेक त्योहार मना रहे हैं। ये सभी उत्सव मुख्य रूप से सूर्यदेव, प्रकृति और कृषि को समर्पित हैं। ये त्योहार लोगों को आपस में जोड़ते हैं, जिससे समाज में सद्भाव और एकजुटता की भावना और प्रगाढ़ होती है। इस अवसर पर मैं आप सभी को शुभकामनाएं देता हूं।

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

---

## सुर्खियों से आगे • हमारे सभी कर्म सत्कर्म हों!

# नए साल में नई शपथ, नए नियम

देशकाल

नवनीत गुर्जर
navneet@dbcorp.in


**2025** गया! 26 आ गया। अरदास यही है कि हमारे सभी कर्म सत्कर्म हों! ईश्वर कृपा करे कि इस बार पिछले साल जैसे हादसों का मुंह न देखना पड़े। हालांकि समय न किसी के लिए रुकता। न किसी के लिए चलता। उसकी अपनी चाल है। वर्षों से। युगों-युगों से। न वो कभी थका। न कभी बैठा। लेकिन, समय का 2025 नाम का जो अंग है, उसमें हादसों, दुर्घटनाओं के इतने गहरे और हरे घाव हैं कि लगता है अब ये समय भी बूढ़ा गया है। उसकी भी कनपटी के नीचे के बाल सफेद हो चले हैं।

महाकुम्भ का आयोजन और उसके लिए जगह-जगह हुई दुर्घटनाएं हों या अहमदाबाद का विमान हादसा, आज भी जब याद आती है तो हड्डियां तक कंपकंपा जाती हैं। पूरे शरीर की एक-एक नस में सिहरन दौड़ जाती है। महाकुम्भ की बात करें तो 29 जनवरी 2025 की उस रात प्रयागराज में भीड़ इतनी अपार थी कि गंगा का पानी भी छोटा लग रहा था। सबसे पहले डुबकी लगाने की होड़ में ऐसी भगदड़ मची कि क्या बच्चे, क्या महिलाएं, सब कुचले गए। जो पहचाने गए उनकी संख्या 37 रही, लेकिन कई ऐसे भी थे, जिन्हें माता-पिता, भाई-बहन और बेटा-बेटी महीनों तलाशते रहे, कोई नहीं मिला। जाने उनके साथ क्या हुआ। क्या वे रेत में दब गए? क्या वे गंगा मैया में समा गए? कोई नहीं जानता। न लोग, न प्रशासन, न स्थानीय संस्थाएं! ...और जहां तक सरकार का सवाल है, वह तो कुछ जानती ही नहीं। शायद जानना भी नहीं चाहती।

इसी से जुड़ी एक घटना दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भी हुई। तारीख थी- 15 फरवरी। भीड़ प्रबंधन में लापरवाही के कारण कुम्भ यात्रियों के बीच भगदड़ मच गई और कोई 18 लोग यहां भी मृत्यु का भोग बन गए।

दूसरी बड़ी घटना थी- अहमदाबाद विमान हादसा। अहमदाबाद से लंदन जा रही एअर इंडिया की ड्रीमलाइन उड़ान टेकऑफ के तुरंत बाद क्रैश हो गई। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय भाई रूपाणी सहित कोई 260 लोग काल-कवलित हो गए। हालांकि जांच जारी है, लेकिन असल कारण अब तक पता न चला।

भारत में क्रिकेट के बुखार से कौन परिचित नहीं है। जब से आईपीएल शुरू हुआ है, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की पहली बार जीत हुई थी। 4 जून 2025 को इस जीत के जश्न में भी भीड़ के नियंत्रण के कोई उपाय नहीं किए गए या अनदेखी की गई। इतने लोग उमड़ पड़े कि एक-दूसरे को कुचल दिया गया। यहां भी कोई 11 लोगों की मौत हो गई। इस घटना से सार्वजनिक आयोजनों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल उठाए गए। लेकिन सुनता कौन है? प्रशासन मौन है और सरकारों ने तो जाने कब से अपने कान बेच खाए।

उत्तराखंड में बादल फटने की घटनाओं का तो मानो पारावार नहीं रहा। मनुष्य ने पहाड़ों को खोदा। नदियों को संकरा किया। उनके रास्तों में घर बांधे और फिर इस सबका दुष्परिणाम भी झेला। कहीं बादलों से बरसी आफत पूरी बस्ती बहा ले गई तो कहीं घरों को, मनुष्यों को डुबो दिया। 5 अगस्त को चमोली-पिथौरागढ़ में बाढ़-भूस्खलन के कारण 25 लोग मारे गए। अनियोजित विकास के खतरे बाढ़ के पानी की तरह उभर आए लेकिन कोई सावधानी, सावचेती नहीं। सरकारें अपने बचाव में कुतर्क गढ़ती रहीं और नेता जो मुंह में आया बोलते रहे। बादल फटते रहे। भूस्खलन होते रहे और लोग मरते रहे। 1 अप्रैल 2025 को गुजरात के डीसा में एक पटाखा फैक्टरी में विस्फोट हुआ और 21 मजदूरों की मौत हो गई। हादसे के बाद औद्योगिक सुरक्षा श्रम कानूनों को कड़ा करने की मांग उठी, लेकिन आखिरकार लीपापोती कर दी गई।

**अनियोजित विकास के खतरे बाढ़ के पानी की तरह उभर आए लेकिन कोई सावधानी नहीं। सरकारें कुतर्क गढ़ती रहीं और नेता जो मुंह में आया बोलते रहे। उम्मीद की जा सकती है कि हमारी भूलों के कारण नए साल में कोई हादसा न हो।**

उम्मीद यही की जा सकती है कि हम शपथ लें हमारी भूलों के कारण नए साल में कोई हादसा न हो और सरकारें इस तरह के हादसों की पुनरावृत्ति को रोकने के ईमानदार प्रयास करें।

---

## दूरदृष्टि • लेकिन ईरान वेनेजुएला जैसा नहीं है...

# ईरान की इस्लामिक हुकूमत पर क्या खतरे के बादल हैं?

प्रोटेस्ट

लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन
कश्मीर कोर के पूर्व कमांडर


**ईरान** में हो रही उथल-पुथल ने फिर से इस्लामिक रिपब्लिक के वजूद पर सवाल खड़े कर दिए हैं। पिछले घटनाक्रमों की तरह विरोध-प्रदर्शनों की तस्वीरें सामने आ रही हैं। सोशल मीडिया से माहौल और गरमा रहा है। ईरान के बाहर अटकलें लगाई जा रही हैं कि वहां सत्ता बदलेगी। 1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद से ही ईरान ने आंतरिक अशांति के कई दौर देखे हैं, जो राजनीतिक सुधार आंदोलनों, आर्थिक चिंताओं, सामाजिक पाबंदियों या किसी तात्कालिक ट्रिगर से शुरू हुए हैं। लेकिन हर आंदोलन के बावजूद यही व्यवस्था कायम रही है। इसका कारण यह है कि इस्लामिक क्रांति ने सिर्फ शाह को हटाकर नई सरकार नहीं बनाई, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था खड़ी की- जिसमें विचारधारा, धर्मगुरु की सत्ता और सुरक्षा-तंत्र एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

इस व्यवस्था के केंद्र में है इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर यानी आईआरजीसी। यह महज सीमाओं की रक्षा करने वाली परंपरागत सेना मात्र नहीं, बल्कि स्वयं क्रांति की संरक्षक है। संस्था के तौर पर इसके अस्तित्व को इस्लामिक रिपब्लिक से अलग नहीं किया जा सकता। अरब स्प्रिंग के दौरान मिस्र और तुर्किए में सेनाओं ने राज्य की रक्षा की थी, सत्ता-कुलीनों की नहीं। लेकिन ईरान में सुरक्षा-तंत्र खुद राजनीतिक व्यवस्था का हिस्सा है। इसलिए अशांति के हालात के समय इसके तटस्थ या अलग-थलग रहने की गुंजाइश नहीं रहती।

लेकिन इसका यह मतलब भी नहीं कि ईरान की हुकूमत के सामने कोई दबाव नहीं है। वहां पीढ़ीगत बदलावों ने गहरी चुनौतियां रची हैं। आज वहां विरोध-प्रदर्शनों की अगुवाई कर रहे युवा और शहरी मध्यम वर्ग का 1979 की क्रांति से भावनात्मक लगाव नहीं है। क्रांति की यादों से ज्यादा उनकी सोच डिजिटल संपर्क, वैश्विक अनुभवों और बढ़ती अपेक्षाओं से प्रेरित है।

ईरान को खासकर लंबे समय से चले आ रहे प्रतिबंधों का नुकसान हुआ है। आर्थिक अलगाव ने विकास रोका, आधुनिकीकरण को सीमित किया और अवसरों को घटाया। इसका खामियाजा आमजन को उठाना पड़ा। इसी से विरोध पनपा। खासकर, उन युवाओं में, जो मुल्क में उजला भविष्य नहीं देखते हैं। अमेरिका और इजराइल के साथ दुश्मनी को भी वहां पर आज सामाजिक बोझ की तरह देखा जाने लगा है।

ईरान पहले भी कई बड़े विरोध देख चुका है। इनमें 2009, 2017-18, 2019 और 2022 में फैली अशांतियां प्रमुख हैं। हर बार बाहरी लोगों ने शासन के पतन की अटकलें लगाईं और हर बार वही व्यवस्था कायम रही। इसकी वजह उन फैक्टर्स की गैरमौजूदगी है, जो सत्ता में बदलाव का दम रखते हैं। वहां ऐसा कोई एकीकृत राष्ट्रीय नेतृत्व नहीं है, जो विरोधों को दिशा दे सके। विपक्ष के नेता अकसर बाहर ही रहे हैं। ईरानी समाज में उनकी विश्वसनीयता नहीं है। ऐसे में विरोध-प्रदर्शन अचानक भड़कते तो हैं, लेकिन मजबूत नहीं हो पाते। ईरान की सुरक्षा में कोई दरार भी नहीं है।

**ईरान में विरोध-प्रदर्शनों की अगुवाई कर रहे युवाओं का 1979 की क्रांति से भावनात्मक लगाव नहीं है। इसके बावजूद यह एक ऐसी व्यवस्था है- जिसमें विचारधारा, धर्मगुरु की सत्ता और सुरक्षा-तंत्र एक-दूसरे से जुड़े हैं।**

आईआरजीसी, पुलिस और खुफिया एजेंसियां एकजुट, वफादार और प्रभावी बनी रहती हैं।

पिछले हफ्तों में पश्चिम की आवाजें तेज हुई हैं। उन्हें अमेरिका की वेनेजुएला जैसी कार्रवाइयों से ताकत मिली है। लेकिन ईरान वेनेजुएला नहीं है। यह अधिक बड़ा, सुरक्षित और बेहद जटिल क्षेत्रीय संतुलनों से जुड़ा हुआ मुल्क है। वहां पर कोई भी बाहरी सैन्य कार्रवाई समूचे पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ा सकती है।

अकसर माना जाता है कि बाहरी ताकतें सत्ता में बदलाव करा सकती हैं। लेकिन इरादों और क्षमताओं के बीच बड़ा फर्क होता है। दूसरे देश से प्रायोजित अशांतियों ने अतीत में ईरान में 'विदेशी साजिश' के कथानक को ही मजबूत किया है और राष्ट्रवाद को और बढ़ाया है। फिर चीन और रूस भी एक अस्थिर ईरान नहीं चाहते और यह मायने रखता है।

**(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

---

## सरोकार • आधार कार्ड में डेमोग्राफिक डेटाबेस के भरोसेमंद नहीं होने के कारण हो रही हैं विसंगतियां

# अपना नाम सुधरवाने के लिए कब तक भटकेंगे आम नागरिक?

आधार

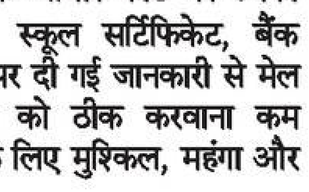


ज्यां द्रेज़
प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री


**कंदनी** कुमारी झारखंड के लातेहार जिले में रहने वाली 16 साल की लड़की है। उसका नाम स्कूल रजिस्टर और सर्टिफिकेट में सही लिखा है, पर आधार कार्ड में कुमारी कांतनी किरण लिखा है। उसने चार बार आधार सुधारने की कोशिश की, लेकिन हर बार आवेदन रिजेक्ट हो गया।

आप भी ऐसे बच्चों या बड़ों को जानते होंगे, जिन्हें ऐसी ही समस्याएं हैं। उनके आधार कार्ड पर उनका नाम या दूसरी जानकारी, स्कूल सर्टिफिकेट, बैंक अकाउंट या वोटर आईडी पर दी गई जानकारी से मेल नहीं खाती। इन गलतियों को ठीक करवाना कम पढ़े-लिखे व गरीब लोगों के लिए मुश्किल, महंगा और समय लेने वाला होता है।

इन असंगतियों का कारण यह है कि आधार डेटाबेस में डेमोग्राफिक डिटेल्स भरोसेमंद नहीं हैं। नाम अकसर जल्दबाजी में, सही वर्तनी पर ध्यान दिए बिना डाले गए। जन्मतिथियां मौके पर ही बना दी गईं। साथ ही, कई लोगों के कई नाम होते हैं, या एक ही नाम की कई वर्तनी होती हैं। सरिता उरांव नाम की आदिवासी महिला को सरिता देवी या सरिता ओराइन के नाम से भी जाना जा सकता है।

शुरुआती वर्षों में, जब बड़े पैमाने पर आधार नंबर जारी किए जा रहे थे, तब यूआईडीएआई डेमोग्राफिक डिटेल्स को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं थी। उस समय ये डिटेल्स शेयर नहीं किए जाने थे। आधार का मुख्य मकसद बायोमैट्रिक सत्यापन था। इसका मतलब है किसी व्यक्ति का आधार नंबर बायोमैट्रिक रीडर में डालना, उसकी उंगली या आंखों को स्कैन करना और सत्यापित करना कि वह नंबर उसी व्यक्ति का है। इसके लिए नाम, जन्मतिथि या पते जैसे डिटेल्स की जरूरत नहीं होती।

लेकिन बाद में आधार का इस्तेमाल सिर्फ बायोमैट्रिक सत्यापन के लिए ही नहीं, ई-केवाईसी के लिए भी होने लगा। अगर आपका बैंक अकाउंट है, तो आप ई-केवाईसी से परिचित होंगे। जब बैंक में आपका बायोमैट्रिक सत्यापन होता है, तो बैंक आधार डेटाबेस से आपका नाम और दूसरे डिटेल्स निकालता है। फिर वह इनकी तुलना अपने रिकॉर्ड में मौजूद डिटेल्स से करता है। अगर डिटेल्स मेल खाते हैं, तो आपका ई-केवाईसी सफल होता है। अगर नहीं, तो बैंक आपके अकाउंट को तब तक फ्रीज कर सकता है, जब तक कि असंगतियां ठीक नहीं हो जातीं।

कई लोगों के लिए इन असंगतियों को ठीक करना मुश्किल होता है। अगर आपके आधार और बैंक अकाउंट में नाम की वर्तनी अलग-अलग है, तो इसे कैसे ठीक किया जाएगा? एक तरीका यह है कि बैंक अकाउंट में वर्तनी ठीक कर ली जाए। लेकिन यह जटिल हो सकता है और बैंक मैनेजर ऐसा करने से हिचकिचाते हैं। इसके बजाय वे ग्राहक से आधार ठीक करवाने के लिए कहते हैं। लेकिन यह भी मुश्किल हो सकता है।

पिछले कुछ वर्षों में बैंकिंग सिस्टम में ई-केवाईसी की वजह से बहुत दिक्कतें आई हैं। लाखों लोग आधार और बैंक रिकॉर्ड में असंगतियों की वजह से अपने खाते से बाहर हो गए। ऐसी समस्याएं दूसरे मामलों में भी सामने आ रही हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों की 'अपार' आईडी तब तक नहीं बन सकती, जब तक स्कूल रिकॉर्ड में नाम की वर्तनी आधार से मेल न खाए। और अकसर दोनों में फर्क होता है, जैसा कि कंदनी के साथ हुआ। उसका अकाउंट खोलते समय बैंक ने आधार का इस्तेमाल किया था। अगर वह आधार को स्कूल सर्टिफिकेट से मिलाने के लिए ठीक करवाती है, तो नई असंगति सामने आ जाएगी।

यह सब आधार में डेमोग्राफिक डेटाबेस के भरोसेमंद नहीं होने के कारण हो रहा है। चूंकि यूआईडीएआई इस डेटाबेस का निर्माता और संरक्षक है, इसलिए उसे इसके लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। दुर्भाग्य से, यूआईडीएआई पर संसदीय निगरानी का प्रावधान आधार एक्ट से हटा दिया गया था। **(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

## बिजनेस ब्रीफ

### एसबीआई आईएमपीएस पर नए शुल्क लागू

**नई दिल्ली** | एसबीआई ने आईएमपीएस ट्रांसफर पर नए शुल्क लागू किए हैं। ऑनलाइन आईएमपीएस में 25 हजार रुपए तक ट्रांसफर मुफ्त रहेगा। 25,001 से 1 लाख तक 2 रुपए, 1,00,001 से 2 लाख तक 6 रुपए और 2,00,001 से 5 लाख तक 10 रुपए शुल्क लगेगा। इस पर जीएसटी भी देना होगा। बैंक शाखा से आईएमपीएस ट्रांसफर पर पहले की तरह शुल्क लागू रहेंगे।

### थोक महंगाई 0.83% हुई, नवंबर में -0.32% थी

**नई दिल्ली** | देश में थोक महंगाई दर दिसंबर 2025 में बढ़कर 0.83% हो गई, जबकि नवंबर में ये -0.32% थी। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, मैन्युफैक्चरिंग, खनिज, मशीनरी, खाद्य उत्पाद और कपड़ा निर्माण आदि की कीमतों में बढ़ोतरी हुई। दिसंबर में गैर-खाद्य वस्तुओं की महंगाई 2.95% और खाद्य वस्तुओं की 0.43% रही। बिजली (4.46%) और खनिज तेल (0.07%) के दाम बढ़े।

### भारतीय तेल कंपनियों ने अबु धाबी में खोजा तेल

**नई दिल्ली** | इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन और भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन ने अबु धाबी में दो तेल खोज की घोषणा की है। पहली खोज एक्सएन-76 कुएं में 2024 की शुरुआत में हुई, जबकि दूसरी एक्सएन-79 02एस कुएं में दर्ज की गई। दोनों के संयुक्त उपक्रम ऊर्जा भारत प्रा.लि. ने 6,162 वर्ग किमी वाले ऑनशोर ब्लॉक-1 में ये खोज की है। इस प्रोजेक्ट में अब तक 1,494 करोड़ रु. का निवेश हुआ है।

### विकास दर 7.5-7.8% रहने का अनुमानः डेलॉय

**नईदिल्ली** | अंतरराष्ट्रीय कंसल्टेंसी फर्म डेलॉय ने त्योहारी मांग और मजबूत सर्विस सेक्टर के कारण वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की जीडीपी विकास दर 7.5-7.8% के बीच रहने का अनुमान लगाया है। हालांकि, 2026-27 में हायर बेस और वैश्विक अनिश्चितताओं के कारण विकास दर में कमी आ सकती है। यह 6.6%-6.9% तक धीमी हो सकती है। डेलॉय के अनुसार, इस साल सरकार का ध्यान उत्पादन सुधारने पर होगा।

### सिटीग्रुप में इस सप्ताह 1,000 लोगों की छंटनी

**न्यूयॉर्क** | अमेरिकी बैंक सिटिग्रुप इस हफ्ते करीब 1,000 कर्मचारियों की छंटनी करने जा रहा है। यह कदम सीईओ जेन फ्रेजर की ग्लोबल रीस्टक्चरिंग योजना का हिस्सा है। कंपनी ने इस साल के अंक तक करीब 20,000 भूमिकाएं खत्म करने का लक्ष्य रखा है। इसका मकसद लागत घटाना, कामकाज को सरल बनाना और बैंक की कमाई बढ़ाना है। फिलहाल सिटिग्रुप में करीब 2.29 लाख कर्मचारी हैं।

### इस साल 12 करोड़ टन गेहूं उत्पादन की उम्मीद

**नई दिल्ली** | देश में इस साल गेहूं का रिकॉर्ड उत्पादन होने की संभावना है। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भरोसा जताया है कि उत्पादन पिछले साल के रिकॉर्ड 11.79 करोड़ टन के आंकड़े को पार कर 12 करोड़ टन तक पहुंच सकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के एक कार्यक्रम में चौहान ने कहा, 'वर्तमान में फसल की स्थिति बहुत अच्छी है और कहीं से भी नुकसान की कोई खबर नहीं है।'

---

**नतीजे** • नए लेबर कोड के चलते 1,289 करोड़ खर्च बढ़ने का असर

# इन्फोसिस की आय 9% बढ़ी, पर मुनाफा 2% घटा

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

देश की दूसरी सबसे बड़ी आईटी सर्विस कंपनी इन्फोसिस ने अक्टूबर-दिसंबर में अच्छे नतीजे दिए। कंपनी की आय करीब 9% बढ़ी और ऑर्डर बुक लगभग दोगुनी हो गई। इसके बावजूद मुनाफा 2.2% घटकर 6,654 करोड़ रुपए रह गया। एलारा कैपिटल के आईटी एनालिस्ट समीर पराडिकर के मुताबिक, नया लेबर कोड इसकी सबसे बड़ी वजह रही। इसके चलते कंपनी को 1,289 करोड़ रुपए का एकमुश्त अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ा। नतीजतन ऑपरेटिंग मार्जिन 3% घटकर 18.4% रह गया। यदि बैलेंस शीट से यह खर्च हटा दें तो कंपनी का एडजस्टेड मार्जिन 21.2% दिखेगा, जो पिछली तिमाही से थोड़ा ज्यादा है। बुधवार को जारी नतीजों के मुताबिक, बीती तिमाही इन्फोसिस की आय 8.9% बढ़कर 45,479 करोड़ रुपए हो गई। जुलाई-सितंबर तिमाही के मुकाबले भी इसमें 2.2% बढ़ोतरी हुई। इसीलिए कंपनी ने वित्त वर्ष 2025-26 की पूरी अवधि के लिए आय का अनुमान पहले के मुकाबले बढ़ाया है। बाजार ने भी कंपनी के नतीजों पर अच्छी प्रतिक्रिया दी। बीएसई पर इन्फोसिस के शेयर मामूली बढ़त के साथ 1,599 रुपए पर बंद हुए, जबकि सेंसेक्स में 245 अंकों की गिरावट आई।

**इंडस्ट्रीः इन्फोसिस, एचसीएल की ऑर्डर बुक में उछाल**

| कंपनी | टीसीएस | इन्फोसिस | एचसीएल टेक |
|---|---|---|---|
| आय | 67,087 (+5%) | 45,479 (+8.9%) | 33,872 (+13.3%) |
| मुनाफा | 10,657 (-14%) | 6,654 (-2.2%) | 4,076 (-11%) |
| मार्जिन | 25.2% (+0.7%) | 18.4% (-2.9%) | 18.6% (-1.1%) |
| ऑर्डर बुक | 84,000 (-8.8%) | 43,356(+92%) | 27,000 (+43.5%) |
| कर्मचारी | 5,82,163 (-11,151) | 337,034 (+5,043) | 2,26,379 (-261) |

(आय, मुनाफा और ऑर्डर बुक के आंकड़े करोड़ रुपए में, स्रोतः कंपनियों की फाइलिंग)

### ब्रिटेन से ₹13,500 करोड़ का ऑर्डर मिलने का लाभ

इन्फोसिस के नतीजे का सबसे मजबूत पक्ष ऑर्डर बुक रहा। बीती तिमाही यह 92% बढ़कर 43,356 करोड़ रुपए की हो गई। इसमें 57% नेट न्यू डील्स थीं। सबसे बड़ी डील ब्रिटेन के नेशनल हेल्थ सर्विस के साथ 13,500 करोड़ रुपए की रही। इससे बैंकिंग, हेल्थकेयर और यूरोप का कारोबार मजबूत हुआ।

### आगे क्याः अब मांग बेहतर आय बढ़ने का अनुमान

इन्फोसिस ने 2025-26 के लिए आय का अनुमान बढ़ाया है। पहले कंपनी का अनुमान था कि पूरे साल आय 2-3% बढ़ेगी। अब यह इसे बढ़ाकर 3-3.5% कर दिया है। हालांकि मार्जिन का अनुमान पहले जैसा ही 20-22% रखा। इसका मतलब है कि कंपनी को बाजार में मांग बेहतर दिख रही है।

### ग्रो की आय 26% बढ़ी, लाभ 28% घटकर 547 करोड़

**मुंबई** | ऑनलाइन निवेश प्लेटफॉर्म ग्रो की पैरेंट कंपनी बिलियनब्रेन्स गैरेज वेंचर्स को दिसंबर तिमाही में 547 करोड़ रुपए का मुनाफा हुआ। यह अक्टूबर-दिसंबर 2024 में हुए 757 करोड़ के मुनाफे से 28% कम है। यह कंपनी पर 315 करोड़ रुपए की एकमुश्त टैक्स देनदारी बढ़ने का नतीजा है। बीती तिमाही ग्रो की कुल आय 26% बढ़कर 1,261 करोड़ हो गई, जो पिछले साल 1,004 करोड़ थी। इस बीच कैश इक्विटी में कंपनी की बाजार हिस्सेदारी 21.6% से बढ़कर 28.8% और इक्विटी डेरिवेटिव्स में 12.2% से बढ़कर 18.1% हो गई।

---

**क्या बदला** • कंपनियों ने सिर्फ 10 मिनट डिलीवरी की ब्रांडिंग हटाई, बाकी सब पहले जैसा

# क्विक कॉमर्स का बिजनेस मॉडल नहीं बदला

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

करीब एक लाख करोड़ का क्विक कॉमर्स सेक्टर थोड़ा बदला है। केंद्र के कड़े रुख के चलते ब्लिंकिट, जेप्टो, स्विगी इंस्टामार्ट और फ्लिपकार्ट मिनट्स जैसे प्लेटफॉर्म्स ने ब्रांडिंग से '10-मिनट डिलीवरी' का दावा हटा दिया है। हालांकि इनके बिजनेस के तरीके नहीं बदले हैं। अब कंपनियां एप पर टाइमर के बजाय दूरी (जैसेः स्टोर 500 मीटर दूर है) दिखाने पर जोर दे रही हैं। बीएसई को दी गई जानकारी में ब्लिंकिट की पैरेंट कंपनी इटर्नल ने कहा है कि ब्रांडिंग बदलने से मुनाफा प्रभावित नहीं होगा। विश्लेषकों का भी मानना है कि टैगलाइन से '10 मिनट' हटाना बिजनेस मॉडल बदलने वाला फैसला नहीं है। कंपनियां 'फास्ट डिलीवरी' की ताकत नहीं छोड़ेंगी, क्योंकि यही उनकी यूएसपी है।

**टाइमर की जगह अब डार्क स्टोर की दूरी पर फोकस**

श्रम मंत्रालय के साथ हुई बैठक और राइडर सुरक्षा की चिंताओं के बाद, ब्लिंकिट ने अपनी ब्रांडिंग से '10-मिनट' के दावे को हटा दिया है। अब एप पर केवल 'मिनटों में डिलीवरी' जैसे शब्दों का उपयोग कर रहे हैं।

**डार्क स्टोरी की दूरी दिखा रहींः** कंपनी ने अब एप पर उपभोक्ता के स्थान से सबसे नजदीकी 'डार्क स्टोर' की दूरी दिखाना शुरू किया है, ताकि दिखाया जा सके कि कम दूरी के कारण ही डिलीवरी जल्दी होती है।

**कंपनियों की सफाईः** यह दोहराया गया है कि डिलीवरी पार्टनर्स को किसी निश्चित समय सीमा में सामान पहुंचने के लिए मजबूर नहीं किया जा रहा। उनकी सुरक्षा व नियमों का पालन प्राथमिकता है।

### लोकलसर्किल्सः 74% लोग फैसले के समर्थन में

लोकलसर्किल्स के एक सर्वेक्षण के अनुसार, अधिकांश उपभोक्ताओं ने 10-मिनट की डिलीवरी के विज्ञापनों को रोकने के सरकार के कदम का समर्थन किया है। लगभग 74% उपयोगकर्ताओं ने कहा कि अति-तेज डिलीवरी से डिलीवरी पार्टनर्स पर दबाव पड़ता है और सड़क सुरक्षा की चिंताएं बढ़ती हैं। यह सर्वे 180 जिलों के 90,000 से अधिक उपयोगकर्ताओं पर किया गया। इनमें से केवल 17 फीसदी लोगों ने सरकार के इस फैसले का विरोध किया।

---

### अब हर बैंक, एनबीएफसी में होंगे आंतरिक लोकपाल

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

अब हर बैंक और एनबीएफसी के लिए कम से कम एक आंतरिक लोकपाल यानी ओम्बड्समैन नियुक्त करना जरूरी होगा। यह लोकपाल बैंक या कंपनी के जनरल मैनेजर रैंक का सेवारत या रिटायर्ड अधिकारी होगा। लोकपाल के पास बैंकिंग, फाइनेंस, उपभोक्ता संरक्षण या संबंधित क्षेत्र में कम से कम 7 साल का अनुभव भी होना चाहिए। आंतरिक लोकपाल केवल ऐसी शिकायतें सुनेगा जो बैंक/एनबीएफसी ने पहले जांचे हैं, लेकिन जिनका समाधान पूरी तरह नहीं हुआ या जिन्हें खारिज कर दिया गया है। इससे ग्राहकों को बैंक के अंदर ही ऊंचे स्तर पर न्याय मिलेगा।

---

**मार्केट** • गिरावट जारी, अब बजट, तिमाही नतीजे तय करेंगे दिशा

# जनवरी में अब तक निफ्टी 500 के 70% शेयरों का रिटर्न निगेटिव, मेटल इंडेक्स ऑल टाइम हाई

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

घरेलू शेयर बाजार में बुधवार को लगातार दूसरे दिन गिरावट दिखी। वैश्विक अनिश्चितताओं और विदेशी निवेशकों की बिकवाली के बीच सेंसेक्स 245 अंक गिरकर 83,382.71 पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 67 अंक फिसलकर 25,665.60 के स्तर पर स्थिर हुआ। बड़े शेयरों में दबाव दिखा, वहीं मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स ने तुलनात्मक रूप से बेहतर प्रदर्शन किया। जनवरी 2026 की शुरुआत भारतीय बाजारों के लिए कठिन रही है। निफ्टी 500 के 70% शेयरों ने इस महीने अब तक नकारात्मक रिटर्न दिया है। 300 से अधिक (60%) शेयर अपने 200 दिवसीय मूविंग औसत से नीचे ट्रेड कर रहे हैं, जो लंबी अवधि के मंदी के रुझान का संकेत है।

**पीएसयू बैंक में तेजी, ऑटो- एफएमसीजी में गिरावट**

निफ्टी मेटल इंडेक्स ने 2.70% की तेजी के साथ नया लाइफटाइम हाई छुआ। पीएसयू बैंक भी 2.13% चढ़ा। निफ्टी आईटी 1.08% गिरा। रियल्टी, ऑटो और एफएमसीजी इंडेक्स आधे फीसदी से ज्यादा टूटे।

**गिरावट की तीन वजहः** 1.भारत-अमेरिका ट्रेड डील में देरी और राष्ट्रपति ट्रंप के संभावित टैरिफ को लेकर अनिश्चितता। 2. विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा लगातार पूंजी निकालना। 3. तीसरी तिमाही के मिले-जुले शुरुआती नतीजों से बाजार को कोई स्पष्ट दिशा नहीं मिल रही।

---

**नीति आयोग की रिपोर्ट** • मध्यप्रदेश नौवें स्थान पर

# निर्यात तैयारीः महाराष्ट्र पहले और तमिलनाडु दूसरे नंबर पर

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

नीति आयोग ने बुधवार को निर्यात तैयारी सूचकांक (ईपीआई) 2024 जारी किया। इसमें महाराष्ट्र ने देशभर में पहला स्थान हासिल किया है। तमिलनाडु दूसरे और गुजरात तीसरे पायदान पर रहे। यह सूचकांक राज्यों की निर्यात क्षमता, नीतिगत ढांचे और जमीनी प्रदर्शन को परखता है। बड़े राज्यों में उत्तर प्रदेश चौथे और आंध्र प्रदेश पांचवें स्थान पर रहा। इसके बाद कर्नाटक, पंजाब, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और हरियाणा का नंबर रहा। छत्तीसगढ़ 14वें, राजस्थान 15वें, बिहार 16वें और झारखंड 17वें स्थान पर रहे। छोटे और दुर्गम राज्यों की श्रेणी में उत्तराखंड ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पहला स्थान पाया है। जम्मू और कश्मीर दूसरे और नागालैंड तीसरे स्थान पर रहा। दादरा और नगर हवेली, दमन और दीव, गोवा और त्रिपुरा भी अपनी स्थिति सुधारने में सफल रहे। इन राज्यों ने सीमित संसाधनों के बावजूद निर्यात के अनुकूल माहौल तैयार किया है।

### इंडेक्स में पंजाब 7वें और मध्यप्रदेश 9वें स्थान पर

| रैंक राज्य | रैंक राज्य |
|---|---|
| 1. महाराष्ट्र | 8. तेलंगाना |
| 2. तमिलनाडु | 9. मध्य प्रदेश |
| 3. गुजरात | 10. हरियाणा |
| 4. उत्तर प्रदेश | 14. छत्तीसगढ़ |
| 5. आंध्र प्रदेश | 15. राजस्थान |
| 6. कर्नाटक | 16. बिहार |
| 7. पंजाब | 17. झारखंड |

### वैश्विक समझौतों के दौर में राज्यों की मजबूती जरूरी

आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रमण्यम ने कहा कि भारत तेजी से मुक्त व्यापार समझौतों का दायरा बढ़ा रहा है। ऐसे दौर में राज्यों का मजबूत होना जरूरी है। राज्यों को अब वैश्विक मानकों के अनुरूप उत्पादन क्षमता में सुधार करना होगा। कई राज्यों ने समर्पित नीतियों और संस्थागत ढांचे से निर्यात विजन को मजबूत करना शुरू कर दिया है। जिला स्तर पर प्रतिस्पर्धा बढ़ाने से देश का आर्थिक लचीलापन और बढ़ेगा।

### चीन का ट्रेड सरप्लस 1 ट्रिलियन डॉलर के पार, ट्रम्प के टैरिफ भी बेअसर साबित हुए

**बीजिंग** | चीन ने वर्ष 2025 में 1.19 ट्रिलियन डॉलर (करीब 107.4 लाख करोड़ रुपए) का ट्रेड सरप्लस दर्ज कर नया रिकॉर्ड बनाया है। यह पहली बार है जब चीन का ट्रेड सरप्लस एक ट्रिलियन डॉलर के पार निकला है। जब कोई देश आयात के मुकाबले निर्यात ज्यादा करता है तो उसे ट्रेड सरप्लस कहते हैं। चीन ने यह उपलब्धि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की कड़ी टैरिफ नीतियों के बावजूद हासिल की है। इनके चलते अमेरिका से होने वाले चीन के व्यापार में गिरावट जरूर आई, लेकिन दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका और यूरोप में निर्यात बढ़ने से इसकी भरपाई हो गई। चीन के रिकॉर्ड ट्रेड सरप्लस की एक बड़ी वजह वहां के घरेलू बाजार में छाई सुस्ती भी है। चीन में मंदी के कारण आयात में महज 0.5% की मामूली बढ़त हुई। जब देश के भीतर मांग कम हुई, तो कंपनियों ने अपना सामान वैश्विक बाजारों में खपाना शुरू कर दिया।

---

**गॉड ऑफ टाइम...** ये है दुनिया की सबसे सटीक घड़ी, कंपनी ने सिर्फ 60 टाइमपीस बनाए, दाम 3.24 करोड़

**न्यूयॉर्क** | जेकब एंड कंपनी ने 3.24 करोड़ रुपए कीमत की 'गॉड ऑफ टाइम' नामक घड़ी पेश की है, इसमें दुनिया का सबसे तेज टूरबियॉन लगा हुआ है। टाइटेनियम से बनी घड़ी के केवल 60 पीस ही बने हैं। डायल पर प्राचीन यूनानी समय के देवता क्रोनोस की एक गुलाबी सोने की मूर्ति को हाथ से उकेरा गया है।

**भास्कर नॉलेज**

### गुरुत्वाकर्षण कम करके सबसे सटीक समय बताएगी

'गॉड ऑफ टाइम' नाम की इस घड़ी का टूरबियॉन 60 सेकंड की बजाय सिर्फ 4 सेकंड में घूमता है, पोजिशन तेजी से बदलती है और ग्रेविटी से होने वाली छोटी गलतियां जल्दी-जल्दी सुधर जाती हैं। ये घड़ी को और भी सटीक बनाता है।

**क्या होता है टूरबियॉन?** टूरबियॉन घड़ी में लगा एक पुर्जा होता है। ये गुरुत्वाकर्षण का असर कम करके समय की सटीकता बढ़ाने में मदद करता है।

---

रिजर्व बैंक से सैद्धांतिक मंजूरी

### एसएमबीसी अलग बैंक के रूप में काम करेगा

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

जापान का सुमितोमो मित्सुई बैंकिंग कॉरपोरेशन (एसएमबीसी) अब भारत में पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी (डब्ल्यूओएस) के रूप में काम करेगा। यानी मूल कंपनी से एक अलग बैंक होगा। रिजर्व बैंक ने इसके लिए सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है। आरबीआई ने यह अनुमति विदेशी बैंकों के लिए जारी 2025 की नई गाइडलाइंस के तहत दी है। एसएमबीसी फिलहाल भारत में ब्रांच मॉडल पर काम कर रहा है। इसकी दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और बेंगलुरु में चार शाखाएं हैं। अब इन सभी को मिलाकर एक पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी बनाई जाएगी। यह कदम भारत में विदेशी बैंकों की मौजूदगी को मजबूत करने की दिशा में माना जा रहा है। इस बदलाव से बैंक को अपनी सेवाओं के विस्तार और स्थानीय स्तर पर कामकाज में आसानी होगी। डब्ल्यूओएस मॉडल के तहत बैंक को भारतीय नियमों का सख्ती से पालन करना होगा।

---

**फंड निवेश** • रेग्युलर प्लान से 4 गुना ग्रोथ

# म्यूचुअल फंड के डायरेक्ट प्लान में निवेश 43% बढ़ा

अभिषेक कुमार | मुंबई

देश की म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में बीते 5-6 वर्षों से रेगुलर प्लान के बजाय डायरेक्ट प्लान में निवेश तेजी से बढ़ रहा है। इंडस्ट्री डेटा के मुताबिक 2025 नवंबर तक व्यक्तिगत निवेशकों की डायरेक्ट प्लान में निवेश राशि 43% बढ़ी, जबकि रेगुलर प्लान में निवेश की वृद्धि 11% ही रही। यानी डायरेक्ट प्लान में निवेश करीब 4 गुना ज्यादा तेजी से बढ़ा। रेगुलर स्कीम ज्यादातर डिस्ट्रीब्यूटर, एजेंटों और बैंकों द्वारा बेची जाती हैं। इनमें फंड मैनेजर की फीस और फंड हाउस का कमीशन शामिल होता है, इसलिए ये महंगी होती हैं। वहीं डायरेक्ट योजनाएं मुख्य रूप से ऑनलाइन निवेश प्लेटफॉर्म द्वारा बेची जाती हैं। इनमें निवेशकों को कमीशन नहीं देना पड़ता, इसलिए ये सस्ती पड़ती हैं।

### निवेशक डायरेक्ट प्लान क्यों चुन रहे हैं

**1. कम खर्च अधिक रिटर्नः** डायरेक्ट प्लान में एक्सपेंस रेश्यो कम रहता है। लंबे समय में रिटर्न बढ़ता है।

**2. अधिक नियंत्रणः** निवेशक सीधे योजनाएं चुनते और ट्रैक करते हैं। इससे निवेश पर उनका अधिक नियंत्रण बना रहता है।

**3. डिजिटल प्लेटफॉर्म में बढ़ोतरीः** देश में डिजिटल प्लेटफार्मों की बढ़ती लोकप्रियता से निवेश आसान हो गया है और निवेशकों की स्कीमों तक पहुंच बढ़ी है।

*डायरेक्ट प्लान में निवेश केवल इक्विटी योजनाओं तक सीमित नहीं है। निवेशक तेजी से हाइब्रिड योजनाओं, कमोडिटी फंडों और यहां तक कि डेट फंड्स में भी इसके जरिये निवेश कर रहे हैं।'* - **डीपी सिंह,** *जॉइंट सीईओ, एसबीआई, म्यूचुअल फंड*

---

**आसान लोन** • बढ़ रहा 'कर्ज का जाल'

# 85% कर्जदार अपनी कमाई का 40% ईएमआई में दे रहे

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

देश में 'अभी खरीदें, बाद में चुकाएं' (बीएनपीएल) और इंस्टेंट लोन एप्स जैसे आसान विकल्प लोगों के लिए जी का जंजाल बन गए हैं। ईरिजोल्यूशन कंसल्टेंसी के विशेषज्ञों के एक सर्वे में खुलासा हुआ है कि 85% परेशान कर्जदार अपनी मासिक आय का 40% से ज्यादा हिस्सा सिर्फ ईएमआई भरने में लुटा रहे हैं। इससे उनकी रोटी, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतें प्रभावित हो रही हैं। सर्वे के अनुसार, 35 से 65 हजार रुपए कमाने वाले लोग ईएमआई पर 28 से 52 हजार रुपए तक खर्च कर रहे हैं। किस्त चुकाने में देरी होने पर 72% लोगों ने रिकवरी एजेंट्स द्वारा मानसिक उत्पीड़न की शिकायत की है।

### किस्त भरने के लिए ले रहे दूसरे कार्ड का सहारा

40% लोग एक क्रेडिट कार्ड का बिल भरने के लिए दूसरे कार्ड से पैसा निकाल रहे हैं। वहीं, 22% लोग दोस्तों और परिवार से कर्ज लेकर ईएमआई भर रहे हैं। हालात इतने खराब हैं कि 65% कर्जदारों ने किस्त चुकाने के लिए बच्चों की शिक्षा, बीमा और भोजन जैसे जरूरी खर्चों में कटौती कर दी है। कई लोग अपनी जमीन और सोना तक बेचने को मजबूर हैं।

---

**रुझान** • लंबा रिटर्न देने वाली एसेट में दिलचस्पी

# रियल एस्टेट में निवेश 25% बढ़कर 1.3 लाख करोड़ रुपए

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

बीते साल देश के रियल्टी सेक्टर में पूंजी निवेश सालाना आधार पर 25% बढ़कर रिकॉर्ड 14.3 बिलियन डॉलर (करीब 1.3 लाख करोड़ रुपए) तक पहुंच गया। प्रॉपर्टी कंसल्टेंट सीबीआरई साउथ एशिया की रिपोर्ट के अनुसार अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में ही 2024 से 30% ज्यादा, करीब 30 हजार करोड़ रु. का निवेश हुआ। निवेश में 80% हिस्सा घरेलू निवेशकों का रहा। 20% विदेशी निवेश में 52% कनाडा और 26% अमेरिका से आया। विशेषज्ञों के मुताबिक घरेलू पूंजी और स्थिर विदेशी निवेश को देखते हुए 2026 में भी में यही रफ्तार कायम रहेगी।

### 5 वर्षों में 19.37% सालाना दर से बढ़ा सेक्टर में निवेश

| वर्ष | निवेश |
|---|---|
| 2021 | 53.3 |
| 2022 | 70.4 |
| 2023 | 77.7 |
| 2024 | 102.9 |
| 2025 | 129.2 |

(आंकड़े हजार करोड़ रु. में, स्रोत- सीबीआरई)

### स्थिर आय पर बढ़ा फोकस

*निवेश के तरीकों से पता चलता है कि निवेशक अब केवल शॉर्ट-टर्म रिटर्न नहीं, बल्कि दीर्घकालिक विकास और स्थिर आय वाले एसेट्स पर फोकस कर रहे हैं।'*
**अंशुमन मैगजीन,** सीईओ, सीबीआरई

---

**बिजनेस एंकर** बढ़ते कर्ज से दिवालिया हो रहीं रिटेल कंपनियां, 4 साल में बंद हुए 22 हजार स्टोर

# अमेरिका में पारंपरिक स्टोर्स की अहमियत घट रही; लागत बढ़ने और बिक्री में कमी आने से लग्जरी स्टोर सैक्स ग्लोबल दिवालिया

© The New York Times
दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

किम भासिन, और लॉरेन हिर्श | न्यूयॉर्क

अमेरिका में एक के बाद एक रिटेल कंपनियां दिवालिया हो रही हैं और हजारों स्टोर बंद हो रहे हैं। सैक्स फिफ्थ एवेन्यू, नीमन मार्कस और बर्गडॉर्फ गुडमैन जैसे मशहूर ब्रांडों की मालिक कंपनी सैक्स ग्लोबल ने मंगलवार देर रात दिवालियापन संरक्षण के लिए आवेदन किया। कंपनी अरबों डॉलर के कर्ज, वेंडरों के साथ बिगड़ते संबंधों, बढ़ती लागत और घटती बिक्री के बोझ तले दबी हुई है। यह फाइलिंग इस बात का ताजा संकेत है कि अमेरिका के लग्जरी डिपार्टमेंट स्टोर्स, जो कभी अमीरों और आकांक्षी लोगों के लिए एक सपनों की दुनिया हुआ करते थे, अब खत्म हो रहे हैं। खास बात है कि सैक्स ग्लोबल ने दो साल पहले 2024 में अपनी प्रतिद्वंद्वी नीमन मार्कस को 2.7 बिलियन डॉलर (करीब 24 हजार करोड़ रुपए) में खरीदा था। मूडीज रेटिंग्स के मिकी चड्ढा का कहना है, यह डील शुरू से ही तबाही की ओर बढ़ रही थी। इस सौदे के लिए जो 2 बिलियन डॉलर का कर्ज लिया गया था, वह कंपनी के लिए बहुत बड़ा बोझ बन गया। खर्च बचाने के लिए सैक्स को न्यूयॉर्क का अपना 'हॉलीडे लाइट शो' भी रद्द करना पड़ा, जो 20 वर्षों से हो रहा था।

पिछले दशक में अमेरिकी रिटेल की दुनिया पूरी तरह बदल गई है। ई-कॉमर्स के उदय, सोशल मीडिया स्टोरफ्रंट और सेकेंड हैंड शॉपिंग की लोकप्रियता ने पारंपरिक स्टोर्स की अहमियत कम कर दी है। चैनल जैसे बड़े लग्जरी ब्रांड अब खुद के स्टोर खोलकर प्रतिस्पर्धा बढ़ा रहे हैं। कोरसाइट रिपोर्ट के मुताबिक 2022 से 2025 के बीच अमेरिका में कुल 22,664 रिटेल स्टोर बंद हो चुके हैं। 2024 में 7325 स्टोर बंद हुए थे, 2025 में ये आंकड़ा 8,100 तक पहुंच गया है।

**अमेरिकी रिटेल कंपनियों में लगातार बढ़ रहे दिवालियापन के मामले**

| दिवालिया साल | रिटेल कंपनी |
|---|---|
| 2025 (अगस्त) | क्लेयर'स |
| 2025 (मई) | राइट एड |
| 2024 (दिसंबर) | पार्टी सिटी होल्डको |
| 2020 (अगस्त) | लॉर्ड एंड टेलर |
| 2019 (अगस्त) | बार्नीज न्यूयॉर्क |
| 2018 (अक्टूबर) | सीयर्स |

**हर साल बढ़ रहे बंद होते स्टोर्स के आंकड़े**

| साल | 2025 | 2024 | 2023 | 2022 |
|---|---|---|---|---|
| स्टोर बंद | 8100 | 7325 | 4636 | 2603 |

स्रोत- कोरसाइट

---

**उपलब्धि** • वैज्ञानिकों ने थारपारकर और विदेशी नस्ल से तैयार की

# देश को मिली रोज 46.5 किलो दूध देने वाली नई गाय, किसानों की आय बढ़ाने में मददगार

संजीव मुखर्जी | नई दिल्ली

देश में डेयरी सेक्टर की तस्वीर बदलने के लिए वैज्ञानिकों ने गाय की एक नई नस्ल 'करण फ्राइज' विकसित की है। मंगलवार को केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस नस्ल को आधिकारिक रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट सौंपा। हरियाणा के करनाल स्थित नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट (एनडीआरआई) ने इसे तैयार किया है। यह गाय विदेशी 'होल्सटीन फ्राइजियन' और भारतीय 'थारपारकर' का मेल है। इसकी सबसे बड़ी खूबी दूध उत्पादन की क्षमता है। यह गाय एक दुग्धकाल (10 महीने) में औसतन 3,550 किलो दूध देती है, जो सामान्य देसी नस्लों से लगभग दोगुना है। बेहतर देखरेख में इसने 305 दिनों में 5,851 किलो दूध का रिकॉर्ड बनाया है। यह नस्ल भारतीय जलवायु के पूरी तरह अनुकूल है। इसने एक दिन में अधिकतम 46.5 किलो दूध दिया है। आमतौर पर स्वदेशी नस्लें रोज 3-4 किलो और विदेशी नस्लें 8-12 किलो दूध देती हैं। करण फ्राइज भारतीय डेयरी किसानों की आय बढ़ाने में गेमचेंजर साबित होगी।

**खूबीः 'करण फ्राइज' गाय तपती गर्मी झेलने में सक्षम**

एनडीआरआई के निदेशक धीर सिंह ने बताया कि 'करण फ्राइज' नस्ल काले-सफेद रंग की होती है और इसमें कूबड़ नहीं होता। वैज्ञानिकों की चार दशक की लंबी रिसर्च के बाद यह नस्ल अब पूरी तरह स्थिर हुई है। यह गर्म और नमी वाले मौसम में भी बीमार नहीं पड़ती।

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। **–वाल्तेयर**

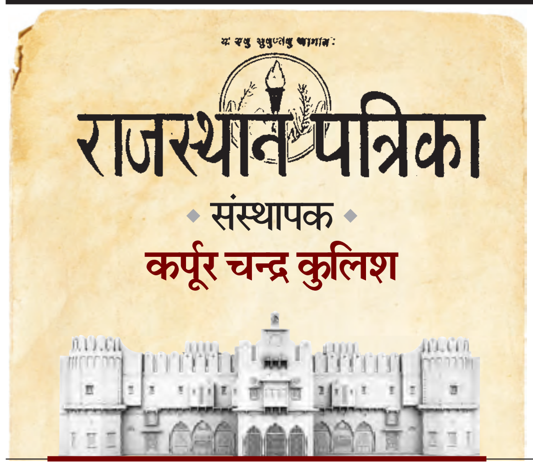


# वंचित वर्ग के बालक भी बेहतर शिक्षा के हकदार

गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा सुनिश्चित करना सरकार और अधिकारियों की जिम्मेदारी है। सुप्रीम कोर्ट ने इस टिप्पणी के साथ राज्य सरकारों और स्थानीय अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने को कहा है कि वे वंचित वर्ग के बच्चों को आसपास के स्कूलों में प्रवेश दिलाएं। साथ ही कोर्ट ने यह भी कहा कि स्कूलों की भी यह जिम्मेदारी है कि वे शिक्षा के अधिकार (आरटीइ) और संविधान के अनुच्छेद 21 (ए) के तहत अपने यहां दाखिला लेने वाले बच्चों में से 25 फीसदी ऐसे बच्चों को अनिवार्य रूप से प्रवेश दें।

कोर्ट का यह स्पष्ट और सख्त संदेश केवल एक कानूनी टिप्पणी नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का आह्वान है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीइ) के तहत निजी स्कूलों में 25 प्रतिशत सीटें समाज के कमजोर वर्गों के लिए आरक्षित करने का प्रावधान वर्षों से मौजूद है। इस प्रावधान का प्रभावी क्रियान्वयन अब भी एक बड़ी चुनौती है। अदालत ने इसी चुनौती की ओर ध्यान दिलाते हुए इसे राष्ट्रीय मिशन का रूप देने की जरूरत पर बल दिया है। संविधान का अनुच्छेद 21(ए) शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाता है और राज्य को यह दायित्व सौंपता है कि वह 6 से 14 वर्ष के प्रत्येक बच्चे को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराए। आरटीइ के तहत निजी, गैर-अनुदानित स्कूलों को भी अपनी कक्षा की कुल संख्या का 25 प्रतिशत हिस्सा कमजोर और वंचित वर्गों के बच्चों के लिए आरक्षित करना अनिवार्य है। अदालत का यह कहना कि इस प्रावधान में समाज की सामाजिक संरचना को बदलने की असाधारण क्षमता है, अत्यंत महत्वपूर्ण है। खास बात है कि जब अलग-अलग सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक ही कक्षा में पढ़ते हैं, तो न केवल शिक्षा का स्तर सुधरता है, बल्कि आपसी समझ, सहिष्णुता और समानता की भावना भी मजबूत होती है। यह व्यवस्था गरीबी और अवसरों के अभाव के उस दुष्चक्र को तोड़ सकती है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी बने रहते हैं। हालांकि जमीनी हकीकत यह है कि आरटीइ के 25 प्रतिशत कोटे का क्रियान्वयन कई राज्यों में अधूरा और असमान है। कहीं स्कूल बहाने बनाकर प्रवेश से इनकार करते हैं, तो कहीं सरकारी स्तर पर निजी स्कूलों के पुनर्भरण राशि चुकाने में देरी को इसकी वजह बताया जाता है। कई अभिभावकों को तो इस अधिकार की जानकारी ही नहीं होती। रही-सही कसर स्थानीय प्रशासन की उदासीनता से पूरी हो जाती है।

शिक्षा अधिकार कानून लागू करने के लिए पारदर्शी प्रवेश प्रक्रिया के साथ समय पर स्कूलों को प्रतिपूर्ति करना जरूरी है। सख्त निगरानी तंत्र तो हो ही, नियमों का उल्लंघन करने पर दंडात्मक कार्रवाई भी हो। इससे वंचित वर्ग के बच्चे न सिर्फ बेहतर शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश पा सकेंगे, बल्कि समानता का वातावरण भी उपलब्ध होगा। इच्छा शक्ति हो तो यह राह कोई मुश्किल नहीं है।

**कर्पूर चन्द्र कुलिश**
**जन्म शताब्दी वर्ष**
भाग -43

पं. जवाहरलाल नेहरू के जमाने से ही यह धारणा बनी हुई है कि बड़ी-बड़ी सभाओं में भाषण करने से जनसम्पर्क और समर्थन बढ़ता है, हकीकत में...

# भीड़ जुटाकर उपदेश बरसाना लोकतंत्र नहीं

## शासन का श्रेष्ठ उपाय है लोकहितकारी काम करना

*सरकारी इमारतों और नई-नई योजनाओं के उद्घाटन व शिलान्यास कार्यक्रमों में सरकारी धन व लवाजमे का खूब इस्तेमाल होता है। नेताओं को भी यह भरोसा रहता है कि सभाओं में जितनी ज्यादा भीड़ जुटेगी उतना ही उन्हें जनसमर्थन हासिल होगा। श्रद्धेय कुलिश जी ने तीन दशक पहले एक आलेख में इस सोच को गलत बताते हुए लिखा कि भीड़ तंत्र को लोकतंत्र कदापि नहीं कहा जा सकता। जनप्रतिनिधि की पहली जिम्मेदारी मतदाताओं का विश्वास बनाए रखना है। आलेख के प्रमुख अंश:*

मंत्रियों का बहुत ज्यादा समय दौरों और आम सभाओं में खर्च होता है। ये दौरे जनसम्पर्क के नाम पर किए जाते हैं। सरकारी लवाजमे और धनराशि के बल पर कार्यक्रम चलाए जाते हैं। नए-नए भवनों और योजनाओं का उद्घाटन, शिलान्यास इन कार्यक्रमों का रूप होता है। इन पर सरकारी धन खर्च करने का बहाना मिल जाता है। खर्च के अलावा प्रत्येक मंत्री के दौरे पर जितना लवाजमा और सरकारी मजमा जुड़ता है, वह धन के अपव्यय और कामकाज के लिए क्षतिकारक होता है। पं. जवाहरलाल नेहरू के जमाने से ही यह धारणा बनी हुई है कि बड़ी-बड़ी सभाओं में भाषण करने से जनसम्पर्क और समर्थन बढ़ता है। यह मानना सरासर गलत है। भीड़ तंत्र को लोकतंत्र कदापि नहीं कहा जा सकता। राजपुरुषों के नाम पर भीड़ जुटा-जुटाकर उपदेश बरसाना राजतंत्र भले ही हो, लोकतंत्र नहीं है। शासन करने का श्रेष्ठ उपाय है, लोकहितकारी काम करना। लोकहितकारी शासक लोक को नहीं भूल सकता। काम के मुकाबले शब्दजाल से लोगों को रिझाने की उम्र छोटी होती है। शासक काम करे और शासकीय दल उसके किए गए कामों की जानकारी जन-जन तक पहुंचाए, यही श्रेष्ठ कार्य है। जनसम्पर्क जैसे राजनीतिक एवं लोकप्रिय कर्म राजनीतिक दल करें।

ढर्रा भी बदलना पड़ेगा
क.च. कुलिश

शासक जब अपना समय जनसम्पर्क एवं राजनीतिक कार्यों में खर्च करते हैं, उनके शासन की उम्र कम हो जाती हैं। मेरे कहने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि मंत्री अपने मतदाताओं से सम्पर्क न रखे। इसके विपरीत मैं तो यह भी कहना चाहता हूं कि निर्वाचकों से सम्पर्क रखना जरूरी है। जनप्रतिनिधि की पहली जिम्मेदारी मतदाताओं का विश्वास बनाए रखने की है। उसका तरीका दूसरा होता है। अपने इलाके के मसलों पर समय-समय पर सामूहिक रूप से विचार-विमर्श करना, दल के कार्यकर्ताओं के जरिए उनके सुख-दुःख की जानकारी रखना, शादी-गमी के मौकों पर आना-जाना, पत्र-व्यवहार करना और दौरे का नियत कार्यक्रम बनाए रखना। किन्तु भीड़ भरी सभाओं में ज्यादातर सरकारी अफसर, मंत्री की आंखों में आकर अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।

## भागदौड़ करते फिरना शासक का काम नहीं

शासक के काम का तरीका है, शासन करना। शासक का श्रेष्ठ रूप है केन्द्रस्थ होना। शासक केन्द्र होता है। केन्द्रस्थ होकर ही श्रेष्ठ शासन किया जा सकता है। भागदौड़ करते फिरना शासक का काम नहीं हैं। शासक यदि केन्द्रस्थ होकर अच्छे काम करता है तो उससे जनता बेहद खुश होती है। ध्यान रखने की बात यह है कि अच्छे कामों के पीछे खोट न हो। यदि मंत्री उद्घाटन शिलान्यास जैसे काम अपनी विषय सूची में न रखकर निर्माण कार्य समय पर पूरा करने का भी संकल्प कर लें तो वह जनसम्पर्क से भी ज्यादा कारगर होगा। जनसम्पर्क का पूरा जिम्मा अपने दल पर छोड़कर मंत्री यदि सरकारी काम भी पूरी निष्ठा, मर्यादा और कल्याण भावना से करे तो वह अवश्य आम जनता का आशीर्वाद प्राप्त करेगा। करने को इतना है कि उस पर ध्यान दे और काम को सुचारु रीति से करे तो वह अवश्य ही यश का भागी होगा।

*(20 मार्च 1998 को प्रकाशित- **'ढर्रा भी बदलना पड़ेगा'** आलेख के अंश)*

### वक्त गुजार

***राजा भी भाग्या फिरै,***
***परजा राजा लार।***
***हार्‌या-थाक्या कर रह्या,***
***दोन्यूं वक्त गुजार।।***

*('सात सैंकड़ा' से)*

### कुर्सी बचाने के लिए छल-प्रपंच दुराचार

राजनीति का अर्थ देखें तो यह बहुत श्रेष्ठ किस्म की नीति है। राज्य व्यवस्था को बनाए रखना, समाज को बुराइयों से बचाना, अच्छाइयों का विकास करना ही राजनीति है। लेकिन वर्तमान परिवेश में राजनीति को देखें तो हर प्रकार का छल-प्रपंच ही राजनीति रह गई है। ऐसा नहीं है कि राजनीति में छल-प्रपंच का कोई स्थान ही नहीं है। व्यवस्था निर्माण के लिए व देशहित के लिए कभी-कभी छल का प्रयोग करना पड़ जाता है। हमारे यहां साम..दाम..दण्ड ..भेद का विधान रखा गया था लेकिन कुर्सी बचाने के लिए किया गया छल-प्रपंच लोकतंत्र में दुराचार है।

*(कुलिश जी के आत्मकथ्य पर आधारित पुस्तक **'धाराप्रवाह'** से )*

***(जारी... कुलिश जी का सृजन संसार पढ़ें आगामी गुरुवार को भी)***

**सेना दिवस विशेष**: सैनिकों के अदम्य साहस, निष्ठा और बलिदान को याद करने का अवसर

# भारतीय सेना: सेवा, संकल्प और संप्रभुता की सशक्त ढाल

**ले. जनरल (रिटा.) अरुण साहनी**
@patrika.com

*स्वतंत्रता के बाद से ही भारतीय सेना अपने ध्येय वाक्य 'स्वयं से पहले सेवा' पर खरी उतरी है। उसने लैटिन उक्ति 'नॉन सिबी सेड पात्रिए' अर्थात 'अपने लिए नहीं, बल्कि देश के लिए' की भावना को व्यवहार में उतारा है।*

हर वर्ष 15 जनवरी को पूरा देश अपने सैनिकों के साहस, समर्पण व राष्ट्रसेवा को नमन करता है। यह राष्ट्रीय गौरव का वह अवसर है, जब भारतीय सेना के जवानों के अदम्य साहस, निष्ठा और बलिदान को याद किया जाता है, लेकिन इस दिन का ऐतिहासिक महत्व केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि ठोस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से भी जुड़ा है। वर्ष 1949 में इसी दिन भारत के पहले सेनाध्यक्ष जनरल के.एम. करियप्पा ने अंतिम ब्रिटिश सेनापति जनरल सर फ्रांसिस रॉय बुचर से भारतीय सेना की पूरी कमान अपने हाथों में ली थी। इसी क्षण से भारतीय सेना पूर्ण रूप से भारत की संप्रभु सत्ता और राष्ट्रीय हितों की संरक्षक बनी।

सेना दिवस पर परंपरागत रूप से वीरता और शौर्य के लिए सैनिकों को सम्मानित किया जाता है। आम जनता से संवाद और संपर्क बढ़ाने के लिए सेना देशभर में अनेक कार्यक्रम भी आयोजित करती है। इसी क्रम में कुछ वर्ष पहले यह निर्णय लिया गया कि सेना दिवस परेड हर वर्ष देश के किसी नए हिस्से में आयोजित की जाएगी, ताकि यह आयोजन केवल दिल्ली तक सीमित न रहे। इस वर्ष भारतीय सेना अपना 78वां सेना दिवस मना रही है और यह परेड जयपुर में आयोजित हो रही है। यह उस वीर भूमि और राजपूत परंपरा को उपयुक्त सम्मान है, जिसने सदियों से साहस और शौर्य की मिसालें कायम की हैं। स्वतंत्रता के बाद से ही भारतीय सेना अपने ध्येय वाक्य 'स्वयं से पहले सेवा' पर खरी उतरी है। उसने लैटिन उक्ति 'नॉन सिबी सेड पात्रिए' अर्थात 'अपने लिए नहीं, बल्कि देश के लिए'- की भावना को व्यवहार में उतारा है। स्वातंत्र्योपरांत, समय के साथ बदलते आंतरिक और बाहरी खतरों तथा युद्ध के बदलते स्वरूप के अनुसार सेना ने स्वयं को लगातार ढाला है। 1965 का भारत-पाक युद्ध, बांग्लादेश का उद्भव कराने वाला 1971 का युद्ध, 1999 के कारगिल संघर्ष में भारतीय सेना का मुंहतोड़ जवाब और हालिया 'ऑपरेशन सिंदूर'- जैसे अलग-अलग समय पर उपस्थित हुए उदाहरण भारतीय सैनिक की इस दृढ़ता और संकल्प को दर्शाते हैं। इन संघर्षों ने यह भी स्पष्ट किया है कि भारतीय सेना केवल युद्धभूमि में ही नहीं, बल्कि रणनीतिक धैर्य, तकनीकी दक्षता व राजनीतिक संयम के साथ राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने में भी सक्षम है।

आधुनिक समय के ये संघर्ष अब केवल सीमाओं तक सीमित नहीं रहे, बल्कि तकनीक आधारित, बिना प्रत्यक्ष संपर्क वाले टकरावों में बदल गए हैं, जिनमें साइबर और अंतरिक्ष जैसे नए क्षेत्रों का सैन्यीकरण भी सामने आया है। प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत-2047' के आह्वान के साथ देश जब आत्मनिर्भरता और आर्थिक प्रगति के पथ पर अग्रसर है, तब सेना भी अतिरिक्त सुरक्षा चुनौतियों और राष्ट्रीय दायित्वों के लिए स्वयं को तैयार कर रही है। देश को एक ओर आंतरिक सामाजिक, जातीय और धार्मिक तनावों से निपटना है, तो दूसरी ओर उत्तर और पश्चिमी सीमाओं पर चीन व पाकिस्तान से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना है। शत्रु देश हमारी आंतरिक कमजोरियों का प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों तरीकों से फायदा उठाने की फिराक में हैं। जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित छद्म युद्ध इसका स्पष्ट उदाहरण है, जबकि चीन पूर्वोत्तर भारत में उग्रवादी समूहों को गुप्त समर्थन देता रहा है। इसके साथ ही कट्टरवाद, उग्रवाद और अतिवाद जैसी चुनौतियां भी हैं, जिन्हें बाहरी और आंतरिक दोनों तत्व बढ़ावा देते हैं। ऐसे परिदृश्य में सेना को पारंपरिक युद्ध के साथ-साथ 'हाइब्रिड' खतरों से निपटने की क्षमता भी विकसित करनी होती है। वैश्विक व्यवस्था इस समय अनिश्चितता और बदलाव के दौर से गुजर रही है। भू-राजनीतिक समीकरण तेजी से बदल रहे हैं, जिससे दक्षिण एशिया और भारत के विस्तृत पड़ोस में नई चुनौतियां उभर रही हैं। तकनीकी क्रांतियां, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि और मानव प्रवासन जैसे मुद्दे भविष्य में सेना के लिए नई जिम्मेदारियां लेकर आएंगे। ऐसे में संगठन ही नहीं, बल्कि भविष्य के सैनिक को भी निरंतर सीखने और स्वयं को उन्नत करने की क्षमता विकसित करनी होगी। अंत में, मैं भारतीय सैन्य अकादमी के प्रसिद्ध 'चैटवुड संकल्प' को याद करना चाहूंगा-

'सबसे पहले और हर समय देश की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण। उसके बाद आपके अधीन सैनिकों का सम्मान, कल्याण और सुविधा और अंत में, हमेशा और हर समय, आपकी अपनी सुविधा और सुरक्षा।' मेरे विचार में यही उस भारतीय सेना की आत्मा है, जो जैतूनी वर्दी पहनकर राष्ट्र की सेवा में सदैव तत्पर रहती है। **जय हिंद।**

## बर्फ से ढकी भूलभुलैया में सर्दियों की खामोश सैर

**जर्मनी** के गेलसेनकिर्शेन शहर में बर्फ से ढके ऐतिहासिक किले के बगीचे का यह दृश्य सर्दियों की कठोरता और शांति दोनों को दर्शाता है। इस तस्वीर में एक व्यक्ति अपने श्वान को टहलाते हुए दिखाई देता है, जबकि उसके बगल में बर्फ से ढकी भूलभुलैया ठिठुरती हुई खामोशी में खड़ी है। चारों ओर फैली सफेद चादर ने पूरे परिसर को परीकथा जैसे दृश्य में बदल दिया है

## बुक इनसाइट द स्कोर: शांत व गहरी सोच वाली रचना

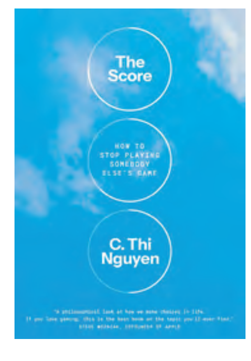


दार्शनिक और विचारक सी.थी गुयेन की किताब 'द स्कोर: हाउ टू स्टॉप प्लेइंग समबडी एल्स'स गेम' दिखने में सेल्फ हेल्प की किताब लग सकती है, लेकिन असल में यह एक शांत और गहरी सोच वाली रचना है। लेखक किसी तरह का उपदेश नहीं देते, बल्कि साधारण उदाहरणों के जरिए हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि हम अपनी जिंदगी किस तरह जी रहे हैं।

'द स्कोर' की सोच बहुत समकालीन है। किताब यह समझाने की कोशिश करती है कि आज की दुनिया में हम अक्सर दूसरों के बनाए नियमों के हिसाब से क्यों जीने लगते हैं। लेखक इसे आधुनिक जीवन की बड़ी समस्या मानते हैं सफलता, पद, पैसा और तुलना हमारे जीवन का मापदंड बन गए हैं। लेखक सवाल उठाते हैं कि क्या यही जिंदगी का असली मतलब है। इस किताब की भाषा सीधी और समझने में आसान है। गुयेन जटिल दार्शनिक विचारों को सरल रूप में समझाने के लिए खेलों का उदाहरण बताते हैं। खेलों में बनाए गए नियम और स्कोर हमें इसलिए अच्छे लगते हैं क्योंकि वे साफ होते हैं और हमें लक्ष्य का अहसास कराते हैं।

## प्रसंगवश

# पैरा खिलाड़ियों को उनके हक से वंचित करना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण

### पदक जीतने वाले खिलाड़ी बुनियादी सुविधाओं के लिए जूझते रहते हैं

राष्ट्रीय स्तर की खेल स्पर्धाओं में पदक हासिल करना कम गौरव की बात नहीं होती। यह गौरव उस समय और बढ़ जाता है जब पदक जीतने वाले खिलाड़ी ने अपनी शारीरिक विषमताओं को चुनौती देते हुए यह उपलब्धि हासिल की हो। ऐसे खिलाड़ियों को जब हर बार सरकारी मदद की तरफ मुंह ताकना पड़े, वे अपने हक से वंचित कर दिए जाएं तो चिंता होना स्वाभाविक है। राजस्थान के सत्तर से अधिक पैरा स्विमर के जो हालात सामने आए हैं वे हमारी खेल नीतियों को भी आईना दिखाते हैं। यह सचमुच चिंता की बात है कि राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीतने वाले ये तैराक दिहाड़ी पर मजदूरी करने को मजबूर है।

होना तो यह चाहिए था कि सरकार की नीति के मुताबिक राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने के छह माह के भीतर ऐसे खिलाड़ी पुरस्कार राशि व सरकारी नौकरी मिलती, लेकिन नौकरी मिलना तो दूर इन पैरा खिलाड़ियों को सरकार की तरफ से एक रुपया तक नहीं मिला। ऐसे कई मौके आए हैं, जब पैरा खिलाड़ियों ने विदेशी धरती पर तिरंगे का मान बढ़ाया। इसके बावजूद, अक्सर देखा गया है कि पदक जीतने के बाद खिलाड़ी बुनियादी सुविधाओं तक के लिए जूझते रहते हैं। नियमित प्रशिक्षण, आधुनिक उपकरण, रोजगार और सम्मानजनक जीवन तो इनके लिए मानो कभी पूरा न होने वाला सपना बनकर रह जाता है। प्रदेशभर में तैराकी जैसे खेल में कठिन अभ्यास और परिश्रम से प्रदेश का नाम रोशन करने वाले पैरा खिलाड़ियों को यदि जीवन के झंझावतों से जूझना पड़े तो शर्मनाक ही कहा जाएगा। आज जरूरत इस बात की है कि हम पैरा खिलाड़ियों को सहानुभूति के चश्मे से नहीं, बल्कि अधिकार और सम्मान के नजरिए से देखें। सम्मान राशि, सरकारी नौकरी, खेल कोटे की नियुक्ति और दीर्घकालीन प्रशिक्षण योजनाएं ये सब किसी उपकार के तौर पर नहीं, बल्कि उनके हक के रूप में मिलनी चाहिए।

**- राजेन्द्र सिंह देणोक**
rajendra.denok@in.patrika.com

## पुस्तक और विपणन अपने पाठकों से बना गहरा रिश्ता सबसे संतोषजनक उपलब्धि रही है

# किसी किताब की सफलता दौड़ नहीं, एक लंबी मैराथन है

**अपर्णा पीरामल राजे**
'केमिकल खिचड़ी: हाउ आइ हैक्ड माय मेंटल हेल्थ' पुस्तक की लेखिका
@patrika.com

*यह यात्रा निश्चित ही थकाने वाली थी, पर मेरे लिए यह केवल पुस्तक प्रचार नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के पक्ष में एक सतत संवाद था। पहली बार लेखक बनने की प्रक्रिया में लेखन जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है उसका प्रचार, क्योंकि आज की भीड़भाड़ भरी दुनिया में सही विपणन ही आपकी आवाज को पाठकों तक पहुंचा सकता है।*

भारत में इन दिनों साहित्यिक उत्सवों और पुस्तक विमोचनों का मौसम है। मेरे लिए यह अत्यधिक आनंद की बात है कि पहली बार पुस्तक लिखने वाले कई मित्र उत्साह से पूछते हैं कि अपनी किताब को पाठकों तक कैसे पहुंचाएं। इसी अनुभव ने मुझे बुक मार्केटिंग पर एक व्यावहारिक 'प्लेबुक' तैयार करने के लिए प्रेरित किया, ताकि इसे सरल और समझने योग्य बनाया जा सके। मैं अब तक दो पुस्तकें लिख चुकी हूं। 'केमिकल खिचड़ी: हाउ आइ हैक्ड माय मेंटल हेल्थ' (2022) और 'वर्किंग आउट ऑफ द बॉक्स : 40 स्टोरीज ऑफ लीडिंग सीईओज'(2015)। एक पुस्तक राष्ट्रीय स्तर पर बेस्टसेलर बनी। जबकि दूसरी आलोचकों द्वारा सराही गई, पर व्यापक लोकप्रियता नहीं पा सकी। हालांकि दोनों की विषयवस्तु अलग थी, लेकिन यह भी सच है कि दूसरी पुस्तक तक आते-आते मुझे पुस्तक विपणन की बेहतर समझ हो चुकी थी।

पिछले तीन वर्षों में मैंने पुस्तक प्रचार का एक ऐसा संतुलित मॉडल विकसित किया है, जिसमें डिजिटल पहुंच, पाठकों की प्रतिक्रियाएं, प्रत्यक्ष संवाद, पुस्तक-विक्रय स्थलों पर उपस्थिति और समुदाय का सहयोग- सभी शामिल हैं। सुविधा के लिए इन प्रयासों को दो स्तरों में बांटा जा सकता है। पहला, वे सरल और त्वरित उपाय, जिन्हें कोई भी लेखक बिना अधिक संसाधन के अपना सकता है। दूसरा, वे बड़े और महत्वाकांक्षी कदम, जिनके लिए अतिरिक्त निवेश, संपर्क या प्रकाशक का सहयोग आवश्यक होता है, पर उनका प्रभाव भी कहीं अधिक होता है। शुरुआत में इनमें से दो-तीन कदम पर्याप्त होते हैं। ये कम खर्चीले होते हैं और पुस्तक के प्रति शुरुआती रुचि पैदा करने में मदद करते हैं।

इनमें पहला कदम है, पहले महीने में ही अमेजन पर मित्रों, परिवार और शुरुआती पाठकों से पुस्तक पर ईमानदार समीक्षाएं लिखवाइए। दूसरा, एक ऐसे सोशल मीडिया मंच पर ध्यान केंद्रित करें, जहां आपकी उपस्थिति सबसे मजबूत हो। मेरे लिए तो लिंक्डइन कारगर रहा, आपके लिए कुछ और हो सकता है। पुस्तक से उद्धरण और पाठकों की प्रतिक्रियाएं साझा करें। अपने नेटवर्क का संतुलित उपयोग करें। महत्वपूर्ण सूचनाओं के लिए वॉट्सऐप ब्रॉडकास्ट सूची बनाएं, पर अति से बचें। बड़े राष्ट्रीय मंचों की बजाय स्थानीय अखबारों और शहर की पत्रिकाओं से शुरुआत करें। अपने विषय से जुड़े मीडिया में जगह मिलना अपेक्षाकृत आसान होता है। पुस्तक क्लब, स्कूल या सामाजिक संस्थाओं में बातचीत भी महत्वपूर्ण है। यहां उद्देश्य केवल पुस्तक बेचना नहीं, पाठकों से संवाद स्थापित करना होना चाहिए। अब अधिक महत्वाकांक्षी विपणन योजनाओं पर आते हैं। ये वे कदम हैं जो पुस्तक की पहुंच को कई गुना बढ़ा सकते हैं। आमतौर पर इनके लिए अधिक संसाधन या प्रकाशक का सहयोग आवश्यक होता है। इन योजनाओं में राष्ट्रीय अखबारों और उनके साप्ताहिक विशेषांकों तक पहुंच बनाएं। मेरे लिए ये अनुभव अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुए। टेडएक्स टॉक अवश्य दें। इससे आपकी बात संक्षिप्त, प्रभावशाली और साझा करने योग्य रूप में सामने आती है और आपकी पुस्तक एक सशक्त ब्रांड से जुड़ती है। एक अच्छी उपस्थिति वाला पुस्तक विमोचन समारोह आयोजित करें। उसके महत्वपूर्ण अंशों को रिकॉर्ड करवाएं। अपनी यात्रा के दौरान प्रकाशक से पुस्तक हस्ताक्षर कार्यक्रम तय करने को कहें।

हवाई अड्डों के बुकस्टोर विशेष रूप से उपयोगी होते हैं। प्रकाशक के माध्यम से ऐसे मंचों तक पहुंचें, जहां पुस्तक-प्रेमी पाठक हों। आमंत्रण मिलने पर भाग लेना अधिक सहज होता है। अपने क्षेत्र के प्रभावशाली लोगों का सहयोग उपयोगी होता है। मैंने प्रचार के लिए भुगतान नहीं किया, पर मेरे कई मित्रों और सहकर्मियों ने उत्साहपूर्वक मेरी पुस्तक का समर्थन किया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप तीन वर्षों में मेरी पुस्तक एक साहित्यिक पुरस्कार की सूची में पहुंची, 15 हजार से अधिक प्रतियां बिकीं। विभिन्न प्रिंट, डिजिटल और पॉडकास्ट मंचों पर सौ से अधिक उल्लेख हुए और सौ से अधिक संवाद व व्याख्यान आयोजित हुए।

सबसे संतोषजनक उपलब्धि रही पाठकों से बना गहरा रिश्ता। कई लोगों ने एक साथ 10 से लेकर 100 प्रतियां तक खरीदीं, क्योंकि विषय ने उन्हें भीतर तक छुआ। यह यात्रा निश्चित ही थकाने वाली थी, पर मेरे लिए यह केवल पुस्तक प्रचार नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के पक्ष में एक सतत संवाद था। सब कुछ एक साथ करना आवश्यक नहीं। इन गतिविधियों को हफ्तों और महीनों में किया जा सकता है। किसी पुस्तक की सफलता दौड़ नहीं, एक लंबी मैराथन होती है। अंततः यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपनी किताब के संदेश को दुनिया तक किस तरह पहुंचाते हैं। पहली बार लेखक बनने की प्रक्रिया में लेखन जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है उसका प्रचार, क्योंकि आज की भीड़भाड़ भरी दुनिया में सही विपणन ही आपकी आवाज को पाठकों तक पहुंचा सकता है।

***(मुंबई मिरर में प्रकाशित लेख, विशेष अनुमति से पत्रिका पाठकों के लिए)***

## आपकी बात

### डिलीवरी वर्कर्स के लिए राहत

**क्विक** कॉमर्स की 10 मिनट की डिलीवरी पर रोक लगने के बहुत फायदे नजर आ रहे हैं। सबसे ज्यादा डिलीवरी वर्कर्स के लिए यह काम बढ़िया हुआ है। ऐसे काम में हमेशा तेज रफ्तार से निकलना और जान को जोखिम डालना होता था। अब ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स भी जल्दी सामान पहुंचाने की बजाय सुरक्षित और गुणवत्ता पर ध्यान देंगे।

\- **निर्मला वशिष्ठ,** अलवर

**patrika.com** पर पढ़ें

### पाठकों की अन्य प्रतिक्रियाएं

इसे स्कैन करें

**पत्रिकायन** का सवाल था, 'क्विक कॉमर्स की दस मिनट में डिलीवरी पर रोक को आप कैसे देखते हैं?' ऑनलाइन भी देखें।
https://shorturl.at/h4tug

### आज का सवाल

**नशे के बढ़ते कारोबार पर लगाम कसने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं?**

ईमेल करें: edit@epatrika.com

*नतीजे अलग चाहिए, तो तरीका भी अलग अपनाना होगा। पुराने और सुरक्षित रास्तों पर चलकर बेहतर परिणाम नहीं मिलते। चाहे निवेश हो या जीवन, सोच में बदलाव, नई रणनीति और जोखिम लेने की हिम्मत ही सफल बनाती है।* **मैलोडी हॉब्सन,** सीईओ, एरियल इन्वेस्टमेंट्स

# पत्रिका फाइनेंस
@बिजनेस & वेल्थ

**ऑनरशिप मीटर** *किसके पास भारतीय शेयर बाजार की चाभी*

कंपनी प्रमोटर्स 40% | विदेशी निवेशक 17% | भारत सरकार 11% | खुदरा निवेशक 10% | बैंक-इंश्योरेंस 10% | अन्य निवेशक 5% | 7%

(भारतीय बाजार में हिस्सेदारी)

स्टार्टअप इंडिया के 10 साल

## 51290 करोड़ ले गए स्टार्टअप, 20 बेस्ट को मिलेगा अवार्ड

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**नई दिल्ली.** केंद्र सरकार आगामी 16 जनवरी को स्टार्टअप इंडिया प्रोजेक्ट के दस साल का जश्न मनाएगी। इसी दिन पीएम नरेंद्र मोदी देश के बेस्ट 20 स्टार्टअप अवॉर्ड और टॉप परफॉर्मिंग स्टेट की रैंकिंग घोषित करेंगे। खास बात यह है कि अभी तक 1371 स्टार्टअप को 25,548 करोड़ रुपए का डाउनस्ट्रीम निवेश मिला है। जबकि, सरकारी पोर्टल जी-रूपर 35,700 स्टार्टअप रजिस्टर्ड हुए हैं। इन्हें अब तक 51,290 करोड़ रुपए के सरकारी ऑर्डर मिल चुके हैं। यह स्टार्टअप प्रोजेक्ट की तेजी को दर्शाते हैं। केंद्रीय उद्योग मंत्रालय के सचिव अमरदीप सिंह भाटिया व जॉइंट सेक्रेटरी संजीव सिंह ने बुधवार को स्टार्टअप प्रोजेक्ट की अब तक की उपलब्धियों को बताया। उन्होंने बताया कि पीएम नरेंद्र मोदी ने 2016 में स्टार्टअप इंडिया की पहल की थी। उस समय देश में 400 स्टार्टअप थे, लेकिन अब दो लाख से ज्यादा स्टार्टअप हैं। हर दिन औसतन 80 स्टार्टअप को नई मान्यता मिलती है।

### 21 लाख नौकरियां

उन्होंने बताया कि देश में स्टार्टअप ने 21 लाख से ज्यादा नौकरियां दी हैं। इसमें प्रति स्टार्टअप औसतन 11 नौकरियां मिली हैं। इससे अक्सर ऐसी जगहों पर अवसर पैदा हुए हैं जहां पहले कोई अवसर नहीं था। खास यह भी कि मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स में से 52.6 फीसदी टियर-2 और टियर-3 शहरों से हैं। वहीं लगभग आधे स्टार्टअप्स में कम से कम एक महिला डायरेक्टर है और महिलाएं बेबी केयर प्रोडक्ट्स बनाने वाली कंपनियों से लेकर भारी उद्योग मशीनरी बनाने वाली कंपनियों तक का नेतृत्व कर रही हैं। देश में 56 से ज्यादा सेक्टर में स्टार्टअप हैं।

### दुनिया का तीसरा यूनिकॉर्न देश

भारत अब दुनिया के सबसे बड़े स्टार्टअप इकोसिस्टम में से एक है और तीसरा सबसे बड़ा यूनिकॉर्न देश है। स्टार्टअप इंडिया का प्रभाव बीज से लेकर एआई तक हुआ है। अब 16 जनवरी को स्टार्टअप अवॉर्ड होंगे। इसमें 36 राज्यों ने भागीदारी की है। इससे पूर्व पिछले अवॉर्ड में 33 राज्यों ने भागीदारी की थी। अलग-अलग श्रेणी के अवॉर्ड दिए जाएंगे। नेशनल स्टार्टअप अवॉर्ड्स 5.0 और भी अधिक महत्व रखता है।

**स्टॉक मार्केट** जनवरी में बाजार की हालत खराब, निफ्टी 500 इंडेक्स के 70% शेयर टूटे...

## दलाल स्ट्रीट में डर... बाजार का मूड अचानक हुआ मंदी वाला

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**मुंबई.** भारतीय शेयर बाजार ने ट्रंप के नए टैरिफ के लेकर निवेशकों में डर और वैश्विक अनिश्चितता को लेकर बनी बेचैनी के साथ साल 2026 की शुरुआत की है। जनवरी महीने में अब तक निफ्टी 500 इंडेक्स के 70% शेयर नुकसान में रहे और निगेटिव रिटर्न दिया है। यह पिछले पांच साल में इस अवधि के दौरान दूसरा सबसे खराब प्रदर्शन है। इससे पहले 2025 में भी इसी अवधि में निफ्टी 500 के करीब 88% शेयर लाल निशान में थे। हालांकि 2020, 2021 और 2022 में इस दौरान 50 से 75% शेयरों में बढ़त देखने को मिली थी। पिछले 10 साल में 8 बार जनवरी में सेंसेक्स-निफ्टी में गिरावट देखने को मिली है।

### जनवरी में लुढ़का भारतीय बाजार

| इंडेक्स | गिरावट |
|---|---|
| सेंसेक्स | -2.27% |
| निफ्टी 50 | -2.0% |
| मिडकैप 150 | -1.40% |
| स्मॉलकैप 250 | -2.40% |
| माइक्रोकैप 250 | -3.50% |

(1 से 14 जनवरी के बीच आई गिरावट)

### ...पर ग्लोबल बाजारों में आई तेजी

| | |
|---|---|
| एसएंडपी 500 (अमरीका) | 1.10% |
| निक्केई (जापान) | 6.53% |
| हैंगसेंग (हांगकांग) | 4.99% |
| शंघाई कंपोजिट (चीन) | 3.50% |
| डीएएक्स (जर्मनी) | 3.28% |

**10** साल में 8 बार जनवरी महीने में भारतीय शेयर बाजार में आई है गिरावट

**सेंसेक्स 245 अंक लुढ़का:** अमरीकी और भारत के बीच ट्रेड डील को लेकर अनिश्चितता से बुधवार को मेटल शेयरों में तेजी के बावजूद आइटी और ऑटो शेयरों में गिरावट से सेंसेक्स 245 अंक की गिरावट लेकर 83,382 पर बंद हुआ। निफ्टी भी 67 अंक यानी 0.26% गिरकर 25,665 पर बंद हुआ। ***बीएमसी चुनाव के कारण 15 जनवरी को भारतीय शेयर बाजार बंद रहेंगे।***

### 200-डीएमए से नीचे वाले इतने शेयर गिरे

| टूटे | शेयरों की संख्या |
|---|---|
| 0-10% तक लुढ़के | 155 |
| 10-20% तक टूटे | 99 |
| 20-30%गिरावट | 28 |
| 30% से ज्यादा गिरे | 08 |

### 200-डीएमए से ऊपर वाले इतने शेयर उछले

| | |
|---|---|
| 0-10% तक उछले | 108 |
| 10-20% तक चढ़े | 65 |
| 20-30% की तेजी | 19 |
| 30% से ज्यादा चढ़े | 12 |

(निफ्टी 500 इंडेक्स के शेयरों का हाल)

### कमजोरी का रुझान

**तकनीकी** तौर पर देखें तो निफ्टी 500 के 60% से ज्यादा अपने लॉन्ग टर्म के 200-दिन के मूविंग एवरेज से नीचे फिसल चुके हैं। यह निवेशकों में सतर्कता का संकेत देता है। आमतौर पर जो शेयर 200-दिन के मूविंग एवरेज से नीचे कारोबार करते हैं, उन्हें नेगेटिव रुझान माना जाता है। यह संकेतक किसी शेयर या इंडेक्स के लंबे समय के रुझान को समझने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। वहीं 70% शेयर 50 दिन के मूविंग एवरेज से नीचे फिसल चुके हैं, जो शॉर्ट टर्म में बाजार की कमजोरी को दिखाता है। रिलेटिव स्ट्रेंथ इंडेक्स के मुताबिक, निफ्टी 500 के 40 शेयर अभी ओवरसोल्ड हैं।

दोनों पक्षों में आरोप-प्रत्यारोप तेज

## पश्चिम बंगाल में एसआइआर को लेकर टीएमसी और बीजेपी में फिर हुई भिड़ंत

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**नई दिल्ली.** पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) को लेकर एक बार फिर सत्ताधारी टीएमसी और बीजेपी के बीच सियासी भिड़ंत देखने को मिली है। ड्राफ्ट सूची में 58.2 लाख नाम हटाए जाने को लेकर दोनों पक्षों में आरोप-प्रत्यारोप तेज हो चला है। टीएमसी ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट प्लेटफॉर्म एक्स से एक वीडियो शेयर कर भाजपा पर मतदाता सूची से वोट कटवाने का आरोप लगाए। पार्टी ने कहा, पहले से भरे हुए नाम हटाने के फॉर्म कागों की तरह ले जाए जाते हैं, तो इससे बांग्ला विरोधी पार्टी की वह मानसिकता उजागर होती है जो मतदाताओं को नागरिक नहीं बल्कि समस्या मानती है। उधर, भाजपा के पश्चिम बंगाल के सह-प्रभारी अमित मालवीय ने आरोप लगाते हुए कहा कि ईआरओ रीना घोष ने बेहाला पुरवा में हमारे मंडल अध्यक्ष और बीएलए-1 की ओर से किए गए फॉर्म 7 को स्वीकार करने से मना कर दिया, अधिकारी ने इसका कोई वाजिब कारण भी नहीं बताया। मालवीय ने वीडियो शेयर करते हुए आरोप लगाया कि रीना घोष के आचरण के कारण पार्टी कार्यकर्ताओं के पास धरना देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।

### 1.67 करोड़ मतदाताओं की चल रही सुनवाई

एसआइआर के पहले चरण में 16 दिसंबर को प्रकाशित ड्राफ्ट सूची में 58 लाख से अधिक नाम बाहर हुए हैं। जिससे वोटर्स की संख्या 7.66 करोड़ से घटकर 7.08 करोड़ रह गई है। एसआइआर के दूसरे चरण में 1.67 करोड़ मतदाताओं के मामले की सुनवाई हो रही है।

**सातवें आसमान पर चांदी** एक महीने में ही 47% चढ़ी एमसीएक्स पर

## ₹3 लाख की दहलीज पर चांदी, ₹2.91 लाख के पार

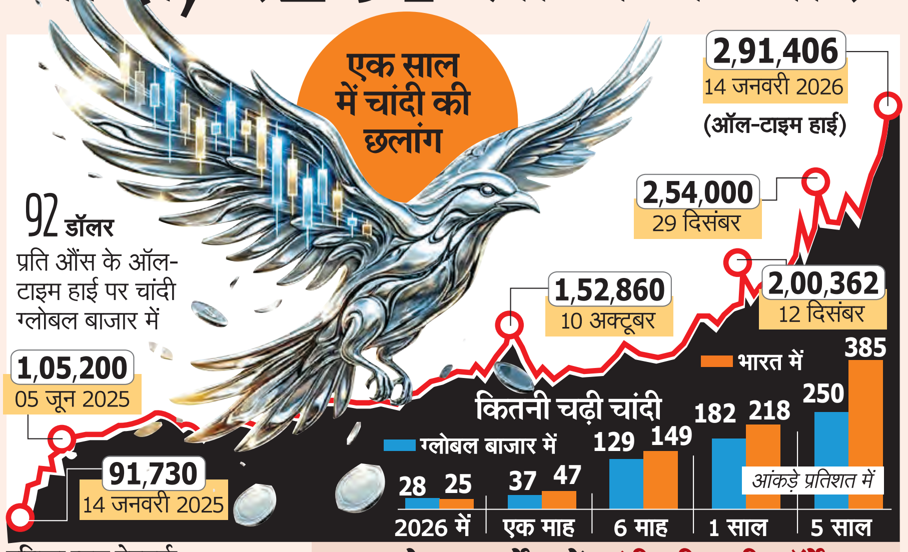


पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**मुंबई.** चांदी 3 लाख रुपए की दहलीज पर पहुंचने के करीब है। मकर संक्रान्ति के दिन एमसीएक्स पर चांदी 2.91 लाख रुपए प्रति किलोग्राम के साथ अपने ऑल टाइम हाई पर पहुंच गई। चांदी में किस कदर तेजी आई है इसका अंदाजा इसी बात से लगा सकते कि पिछले 36 दिन में ही चांदी 2 लाख रुपए किलो से उछलकर 2,91,406 रुपए की रेकॉर्ड हाई पर पहुंच गई है। अमरीका में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद से ग्लोबल बाजार में चांदी की कीमतें प्रति औंस 92 डॉलर को पार कर गई, जिससे घरेलू बाजार में चांदी-सोने की कीमत सातवें आसमान पर है। सोना बुधवार को एमसीएक्स पर 1,43,590 के नए हाई पर पहुंचा। ग्लोबल बाजार में 4640 डॉलर प्रति औंस पर रहा।

### ग्लोबल मार्केट में चांदी की भारी शॉर्टेज

| 26,500 | 31,000 | 3,670 | |
|---|---|---|---|
| कुल उत्पादन | कुल खपत | चांदी की शॉर्टेज | (सिल्वर इंस्टीट्यूट के आंकड़े) |

### इन वजहों से चांदी में आ रही तेजी

1 एक तरफ इंडस्ट्रियल डिमांड तेज हुई है। सोलर पैनल, इलेक्ट्रिक व्हीकल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर में चांदी की खपत बढ़ी है। ***मांग माइनिंग और रीसाइक्लिंग से होने वाली सप्लाई से ज्यादा है। चीन के एक्सपोर्ट कंट्रोल ने कीमतों में हवा दी है।***

2 वैश्विक बाजारों में डॉलर की कमजोरी, भू-राजनीतिक अनिश्चितता और सुरक्षित निवेश की तलाश ने भी चांदी को सपोर्ट दिया। ***सिल्वर ईटीएफ में जमकर निवेश हो रहा है, जिससे कीमतें चढ़ी हैं।***

3 अमरीका में महंगाई दर अनुमान से कम बढ़ी और 2.6% रही, इससे फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों में और कटौती की उम्मीदें मजबूत हुईं, ***जिसका सीधा फायदा सोने-चांदी जैसे कीमती धातुओं को मिला है।***

4 घरेलू बाजार में सट्टेबाजी और फंड्स की ***मजबूत खरीदारी ने आग में घी डालने का काम किया।***

WEALTH **नेक्स्टजेन बिजनेस** CREATION

**वर्क कल्चर** 60% देखते हैं काम और निजी जिंदगी में संतुलन

## जेन-जेड के लिए जॉब में सैलरी नहीं, वर्क-लाइफ बैलेंस पहली प्राथमिकता

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

**नई दिल्ली.** इंफोसिस के को-फाउंडर नारायण मूर्ति भले ही 72 घंटे काम करने की बात करते हों, लेकिन भारत की जेन-जेड आबादी (युवाओं) की सोच इससे बिल्कुल अलग है। नौकरी डॉट कॉम के नए सर्वे के मुताबिक, जेन-जेड के लिए नौकरी चुनते समय सबसे अहम चीज सैलरी नहीं, बल्कि वर्क-लाइफ बैलेंस है। सर्वे में शामिल आधे से ज्यादा युवाओं ने कहा कि नौकरी का ऑफर देखते समय वे सबसे पहले यह देखते हैं कि काम और निजी जिंदगी में संतुलन मिलेगा या नहीं। जिन युवाओं को वर्क एक्सपीरियंस को 5 से 8 साल है, उनमें वर्क-लाइफ बैलेंस की मांग और ज्यादा है। इस ग्रुप में 60% लोगों ने इसे सबसे बड़ी प्राथमिकता बताया। 81% युवाओं को नौकरी में निजी तारीफ से ज्यादा सीखने और आगे बढ़ने के मौके चाहिए। सर्वे में आइटी, बैंकिंग, ऑटोमोबाइल, बीपीओ और एजुकेशन जैसे 80 अलग-अलग सेक्टरों के 23,000 से ज्यादा युवा शामिल थे।

### नौकरी चुनते समय क्या देखते हैं?

- 60% वर्क-लाइफ बैलेंस
- 57% नए स्किल सीखना
- 21% सैलरी में इजाफा
- 12% प्रमोशन
- 10% अन्य चीजें

### क्यों छोड़ देते हैं नौकरी

| | |
|---|---|
| बॉस की रोक-टोक से तनाव | 16% |
| टॉक्सिक सहकर्मी | 19% |
| वर्क-लाइफ बैलेंस की कमी | 34% |
| करियर ग्रोथ नहीं मिला | 31% |

**36% जेन-जेड** युवाओं ने वर्क-लाइफ बैलेंस की कमी को ***जीवन का सबसे बड़ा तनाव बताया***

### एक कंपनी में कितने दिन करना चाहते हैं जॉब

**14% जेन-जेड** एक साल के अंदर नौकरी छोड़ सकते हैं ***अगर नौकरी में आगे बढ़ने के मौके नहीं मिलते***

**37%** दो से तीन साल में कंपनी बदलने को तैयार, ***यानी सिंगल कंपनी में ज्यादा समय नहीं टिकना चाहते***

**₹15-25 लाख** सालाना आय वाले 56% लोग 5 साल तक कंपनी में रहने को तैयार, ***यानी ज्यादा सैलरी वाले युवा ज्यादा समय तक कंपनी में टिकते हैं।***

## इंफोसिस का मुनाफा घटा, लेबर कोड का असर

**मुंबई@ पत्रिका.** देश की दूसरी सबसे बड़ी आइटी कंपनी इंफोसिस ने बुधवार को मौजूदा वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही के नतीजे जारी किए। कंपनी ने बताया कि दिसंबर तिमाही में उसका शुद्ध मुनाफा सालाना आधार पर 2.2% घटकर 6,654 करोड़ रुपए रहा गया। यह आंकड़ा बाजार के अनुमानों से कम रहा। दिसंबर तिमाही में इंफोसिस का कंसॉलिडेटेड रेवेन्यू 8.9% की सालाना बढ़त के साथ 45,479 करोड़ रुपए रहा। वहीं, ऑपरेटिंग मार्जिन घटकर 18.4% पर आ गया, जो एक साल पहले इसी तिमाही में 21.3% था। कंपनी के मुताबिक, बढ़ी हुई लागत और लेबर कोड से जुड़े प्रावधानों के कारण मार्जिन पर दबाव पड़ा। हालांकि, एडजस्टेड आधार पर ऑपरेटिंग मार्जिन 21.2% रहा। नतीजों के ऐलान से पहले इंफोसिस के शेयर 0.6% चढ़कर ₹1,608 पर बंद हुए। एक साल में शेयरों में 17% गिरावट आई है।

**हायरिंग** टेक जॉब मार्केट में बदलाव

## प्राइवेट कॉलेजों व हैकाथॉन से मिल रहे करोड़ों के पैकेज

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

**नई दिल्ली.** टेक जॉब मार्केट में बड़ा बदलाव दिख रहा है। अब आइआइटी के बाहर भी एनआइटी और निजी इंजीनियरिंग कॉलेजों में करोड़ों के पैकेज मिलने लगे हैं, वहीं दूसरी ओर हैकाथॉन जैसे प्लेटफार्म भी भर्ती का नया मंच बन रहे हैं। हाल के प्लेसमेंट सीजन में हाई-फ्रीक्वेंसी ट्रेडिंग फर्म, ग्लोबल टेक कंपनियां और एआइ आधारित स्टार्टअप्स आइआइटी से बाहर के संस्थानों में भी आक्रामक भर्ती कर रहे हैं।

एनआइटी, आइआइएसटी, आइआइएसईआर व चुनिंदा निजी कॉलेजों के छात्रों को 1 करोड़ रुपए से ऊपर के पैकेज मिलने लगे हैं। इंडस्ट्री विशेषज्ञों के अनुसार यह बदलाव एआइ, डेटा साइंस और सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में स्किल आधारित हायरिंग के कारण आया है, जहां संस्थान से ज्यादा प्रतिभा और प्रोजेक्ट अनुभव को महत्व दिया जा रहा है।

### कंपनियों को है बेहतर टैलेंट की तलाश

**इसी** बदलाव की कड़ी में हैकाथॉन की भूमिका तेजी से बढ़ी है। पहले जहां ये इवेंट्स छात्र गतिविधि या शौकिया प्रतियोगिता माने जाते थे, अब वे कंपनियों के लिए टैलेंट खोजने और नए प्रोडक्ट आइडिया परखने का जरिया बन गए हैं। मुंबई की 21 वर्षीय कंप्यूटर साइंस छात्रा को हैकाथॉन के दौरान एआइ रिसर्च कंपनी से 2.5 करोड़ रुपए सालाना का ऑफर मिलना इस क्षेत्र में आ रहे बदलाव को दर्शाता है। हैकाथॉन से न केवल कंपनियों को बेहतर टैलेंट मिल रहा है, बल्कि छात्रों और युवा प्रोफेशनल्स को भी पारंपरिक प्लेसमेंट सिस्टम के बाहर खुद को साबित करने का मंच मिल रहा है। कुल मिलाकर, भारत का टेक टैलेंट इकोसिस्टम अब डिग्री से आगे बढ़कर स्किल, इनोवेशन और वास्तविक प्रदर्शन पर टिकता नजर आ रहा है।

**पीएलआइ** निर्यात में पांच गुना छलांग

## फोन निर्यात में देश का दबदबा, आइफोन की 75% हिस्सेदारी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

**नई दिल्ली.** भारत ने 2025 में जनवरी से दिसंबर के दौरान 30 अरब डॉलर से अधिक मूल्य के स्मार्टफोन का निर्यात किया है। 2021 से बीते पांच साल में देश से जितने मूल्य के स्मार्टफोन का निर्यात हुआ है, उसका यह 38% है। इस शानदार उपलब्धि में उत्पादन पीएलआइ योजना का अहम योगदान रहा है। 2020 में स्मार्टफोन के लिए पीएलआइ योजना की घोषणा हुई थी। 2021 और 2025 के बीच भारत से 80 अरब डॉलर से अधिक के स्मार्टफोन का निर्यात हुआ था। स्मार्टफोन के कुल निर्यात में एपल के आइफोन की हिस्सेदारी लगभग 75% रही। जनवरी से दिसंबर 2025 में देश से 22 अरब डॉलर से अधिक मूल्य के आइफोन का निर्यात किया गया।

### एपल के कारखानों ने बदला गणित

**2021** में पीएलआइ योजना का आगाज होने के बाद भारत ने 4.85 अरब डॉलर मूल्य के स्मार्टफोन का निर्यात किया, जिनमें मुख्य रूप से सैमसंग और घरेलू विनिर्माताओं के मोबाइल फोन थे। लेकिन 2022 में एपल के आपूर्तिकर्ताओं के कारखानों में काम शुरू होने के बाद स्मार्टफोन का निर्यात लगभग दोगुना हो गया। स्मार्टफोन निर्यात हर साल बढ़ रहा है।

**बजट से उम्मीदें** क्या है विभिन्न सेक्टरों की मांग और वित्त मंत्री से आशाएं

## सिस्टम बदलने वाले कदमों पर हो फोकस

### लॉन्ग टर्म में असर करने वाले सुधारों की मांग

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**नई दिल्ली.** आम बजट को लेकर इस बार इंडस्ट्री की उम्मीदें सिर्फ छोटे टैक्स बदलावों तक सीमित नहीं हैं। एआइ, फिनटेक, स्टार्टअप्स, डिजिटल पेमेंट, निर्यात, हॉस्पिटैलिटी, कैपेक्स और पर्सनल टैक्सेशन-हर सेक्टर सरकार से बड़े, स्ट्रक्चरल और लंबे समय तक असर करने वाले रिफॉर्म्स की मांग कर रहा है। कंपनियों का कहना है ग्लोबल अनिश्चितताओं के बीच खुद को मजबूत करने, घरेलू क्षमता बढ़ाने और आर्थिक टिकाऊपन बनाने के लिए इस बार बजट का फोकस सिस्टम बदलने वाले कदमों पर होना चाहिए।

***बीएफएसई सेक्टर की मांग:*** यूपीआइ आधारित क्रेडिट-टोकनाइज्ड कार्ड जैसे क्षेत्रों को सपोर्ट मिले। ट्रांजैक्शन और कैश-फ्लो आधारित क्रेडिट स्कोरिंग से पहली बार लोन लेने वालों तक फॉर्मल क्रेडिट पहुंचेगा।

***कैपेक्स से ग्रोथ चलेगी:*** इक्रा की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर सरकार बजट में पूंजीगत खर्च पर अपना ध्यान जारी रख सकती है और इसमें मौजूदा 11.21 लाख करोड़ रुपए से 10-15% की वृद्धि हो सकती है। पूंजीगत खर्च बढ़ाने के लिए काफी गुंजाइश है।

***स्टार्टअप्स:*** इंडस्ट्री की मांग है कि सरकारी नीतियां स्थिर हो और उनके लिए फंडिंग जुटाना आसान हो। साथ ही कॉम्प्लायंस आसान ह, टैक्स ढांचा क्लियर हो, डुअल लिस्टिंग की अनुमति मिले, शुरुआती दौर में घरेलू कैपिटल को प्रोत्साहन मिले। इससे डीपटेक और इनोवेशन वाले स्टार्टअप्स तेजी से स्केल कर पाएंगे।

***एक्सपोर्ट इंसेंटिव्स मिले:*** निर्यातकों की मांग है ऐसे कदम उठाए जाएं जिनसे उन्हें बेहतर दाम मिलें, इसके लिए-इंटरनेशनल स्टैंडर्ड सर्टिफिकेशन, ब्रांडिंग सपोर्ट, ज्यादा इंसेंटिव के साथ कस्टम ड्यूटी राहत की जरूरत है।

***हॉस्पिटैलिटी सेक्टर:*** इनपुट क्रेडिट बंद होने, जीएसटी की जटिलता से बिजनेस महंगा होता जा रहा है। होटल इंडस्ट्री के लिए आसान फाइनेंसिंग जरूरी है।

### घरेलू एआइ को बढ़ावा जरूरी

**भारत** को एआइ सिर्फ अपनाना नहीं, बल्कि बनाना भी है। इंडस्ट्री का कहना है कि बजट को इंडिजिनस एआइ यानी भारत के अपने एआइ मॉडल, लोकल डेटा इंफ्रा और भारत-फ्रेमवर्क वाली गवर्नेंस पर फोकस करना चाहिए। भारत में 87% कंपनियां एआइ इस्तेमाल तो कर रही हैं, लेकिन सिर्फ 26% ही बड़े पैमाने पर एआइ-रेडी हैं। इंडस्ट्री मांग कर रही है एआइ कंप्यूटिंग, सुरक्षित डेटा इकोसिस्टम और घरेलू एआइ स्टार्टअप को इंसेंटिव दिए जाएं।

**पेज एक का शेष...**

### अब एक...

इन सभी की जांच रिपोर्ट आने में समय लगता है।

**ये भी अहम :** आइसीएमआर की एंटीबैक्टीरियल रेजिस्टेंस रिसर्च एंड सर्विलांस नेटवर्क की वार्षिक रिपोर्ट बताती है कि कई बार इस्तेमाल होने वाले एंटीबायोटिक उन बैक्टीरिया के खिलाफ तेजी से असर खो रहे हैं, जो अक्सर विभिन्न डायग्नोसिस रिपोर्ट के नतीजे आने में देरी के बीच उपयोग होते हैं। इसलिए तेज, सिंड्रोम-बेस्ड डायग्नोसिस इस पैटर्न को उलटने में मदद कर सकता है, जिससे टारगेटेड थैरेपी में जल्दी बदलाव हो सकता है।

### मुख्य चुनौतियां..

5 **मरुस्थलीकरण का बढ़ता खतरा:** पश्चिम से थार मरुस्थल की रेत 12 प्राकृतिक गैप्स के जरिए आगे बढ़ रही है। अरावली की हरियाली कमजोर होने से यह ग्रीन बैरियर टूटता जा रहा है।

6 **जलवायु परिवर्तन का दबाव:** तापमान में लगातार बढ़ोतरी, अनियमित वर्षा और सूखे की आवृत्ति में इजाफा।

7 **वाइल्ड लाइफ कॉरिडोर कमजोर:** मानव-वन्यजीव संघर्ष (खासकर तेंदुआ क्षेत्र) बढ़ा।

**पोलैंड के राजदूत ने कहा** भारत की ही तरह पोलैंड को भी विभाजन का दंश झेलना पड़ा है

## साहित्यिक संवाद : फ्रांस, पोलैंड, ऑस्ट्रिया, यूक्रेन और कतर की संस्कृति झलकी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

**नई दिल्ली.** विश्व पुस्तक मेले के पाँचवें दिन का शुभारंभ अंतरराष्ट्रीय फोकस के साथ हुआ। इंटरनेशनल पवेलियन में साहित्य, कूटनीति और पुस्तकों के भविष्य पर वैचारिक सत्रों का आयोजन हुआ। भारत में पोलैंड के राजदूत पियोटर स्विटाल्स्की ने अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में साहित्य की भूमिका पर विचार व्यक्त किए। वहीं भारत में फ्रांस के राजदूत थिएरी माथू बदलते वैश्विक पठन परिदृश्य में पुस्तकों के भविष्य पर चर्चा में शामिल हुए। पुस्तक मेले में एन. इंद्रसेना रेड्डी (राज्यपाल, त्रिपुरा), ईयू कमिश्नर ब्रेवेन सिद्धार्थ, न्यायमूर्ति अतुल एस. चंदुरकर, नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी, पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल शामिल हुए। द फ्यूचर ऑफ बुक्स सत्र में भारत में फ्रांस के राजदूत एच.ई. थिएरी माथू और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत के निदेशक युवराज मलिक ने प्रकाशन के विकसित होते परिदृश्य और पुस्तक पारिस्थितिकी तंत्र को आकार देने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भूमिका पर चर्चा की।

पोलैंड के राजदूत एच.ई. पियोटर स्विटाल्स्की के साथ बुक्स एंड लिटरेचर पर संवाद हुआ। राजदूत ने कहा कि भारत की ही तरह पोलैंड को भी विभाजन का दंश झेलना पड़ा है। दोनों देशों की साहित्यिक परंपराओं की ताकत थी कि उन्होंने अपनी धर्मनिरपेक्ष पहचान को जीवित रखा। ऑस्ट्रिया-यूक्रेन सहयोग के अंतर्गत आयोजित पैनल में ऑस्ट्रियाई लेखक वैलेरी फ्रिट्श, एंड्रियास उंटरवेगर तथा यूक्रेनी लेखक ल्युबोमिर डेरेश ने संघर्ष और अनिश्चितता के बीच साहित्य की भूमिका पर विचार साझा किए। मुर्तज़ा अली ख़ान द्वारा संचालित इस सत्र में यूक्रेन के राजदूत डॉ. ओलेक्सांद्र पोलिशचुक का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर कतर की सांस्कृतिक विरासत के विशेषज्ञ मोहम्मद अल ब्लोशी ने प्रस्तुति दी।

### सत्यार्थी का युवाओं के लिए 3डी विज़न

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने करुणा की शक्ति पर बात करते हुए अपनी आगामी पुस्तक करुणाः द पॉवर ऑफ कम्पैशन और हाल ही में प्रकाशित आत्मकथा पर विचार साझा किए। उन्होंने करुणा को जागरूकता, भावनात्मक जुड़ाव, भावना की गहराई और जिम्मेदार रवैये के क्रम के रूप में समझाया। साथ ही इस बात पर जोर दिया कि सीक्यू कोई अमूर्त गुण नहीं है, बल्कि एक सीखने योग्य और कार्यान्वयन योग्य जीवन कौशल है। उन्होंने जीवन के लिए अपना प्रेरणादायक 3डी मंत्र सुझाया।

### समुद्र के संरक्षक

थीम पवेलियन में आयोजित एक सत्र में गोवा की मुक्ति में भारतीय नौसेना की ऐतिहासिक भूमिका और समुद्री सुरक्षा में इसकी विकसित हो रही जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला गया। लेफ्टिनेंट जीत्वितेश सहारन, लेफ्टिनेंट जनरल जी.एस. कटोच, कर्नल अजय के. रैना और लेफ्टिनेंट कमांडर अनुपमा तपलियाल ने विभिन्न विषयों पर चर्चा की।